एच एम वी एल प्रकाशन

कादम्बिनी

अप्रैल, 2020 ■ ₹ 30



हंसो, हंसो और हंसो

कादम्बिनी

आकल्पं कवि नूतनाम्बुदमयी कादम्बिनी वर्षतु

मासिक प्रकाशन ■ अप्रैल, 2020, वर्ष 60, अंक 06

प्रधान संपादक : शशि शेखर
सहयोगी संपादक : राजीव कटारा
सहायक संपादक : अरुण कुमार जैमिनि
मुख्य कॉपी संपादक : संत समीर
वरिष्ठ कॉपी संपादक : प्रदीप कुमार
: शशिभूषण द्विवेदी

कार्यकारी संपादक (डिजाइन) : राजेश जैतली
डिजाइन : मनोज अग्रवाल
अनिल सर्राफ
कवर डिजाइन : प्रदीप वशिष्ठ

मुद्रक तथा प्रकाशक राजीव बेओतरा द्वारा हिन्दुस्तान मीडिया वेन्चर्स लिमिटेड (एच एम वी एल) के पक्ष में एच टी मीडिया लिमिटेड प्रेस, प्लॉट नं.-8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा, जिला : गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.) से मुद्रित एवं 18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित।

आर. एन. आई. नं. 4983/60

संपादकीय पता

कादम्बिनी, हिन्दुस्तान मीडिया वेंचर्स लिमिटेड, आकृति बिल्डिंग, फर्स्ट फ्लोर, सी-164, सेक्टर-63, नोएडा, जिला : गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश-201301
फोन : 0120-4895207, 212
0120-4970845
ईमेल :
commdesk@hindustantimes.com
कादम्बिनी अब इंटरनेट पर भी उपलब्ध है
www.livehindustan.com पर क्लिक करें।

हंसो, हंसो और हंसो

हंसना मनुष्य की स्वाभाविक क्रिया है। इसका अपना एक दर्शन है। कहते हैं कि मूर्ख व्यक्ति कभी नहीं हंसता जबकि बुद्धिमान और चेतनासंपन्न व्यक्ति अक्सर खुद पर हंसते हैं क्योंकि वे अपनी मूर्खता के बारे में जानते हैं। हंसी का पूरा विज्ञान है। जब हम हंसते हैं तो खुद को बेहतर हल्का महसूस करते हैं। वैसे तो जानवर भी हंसते हैं। लेकिन हंसने की उनकी भाषा अलग होती है। हंसी आपको स्वस्थ, सामाजिक और कार्यकुशल बनाती है। लेकिन अब इसका एक बड़ा बाजार भी बन गया है। इस बार की आवरण कथा



10. ...वही सबसे अच्छा हंसता है -सोपान जोशी
14. स्मृतियों में हंसी -नरेंद्र नागदेव
17. हंसिए हर हाल में -ममता कालिया
19. ये फूलों की खुशबू की तरह है -अश्विनी भिड़े देशपांडे
21. हमारे आनंद का फैलाव -अमृत साधना
24. केवल हम ही नहीं हंसते -देवेंद्र मेवाड़ी
27. बन जाए आदत का हिस्सा -असरानी
29. किसी राग में नहीं बांध सकते -उर्मिल कुमार थपलियाल
31. एक उठती हुई हिलोर -कमल कुमार
33. कहीं टैक्स न लग जाए -अनूप शुक्ल
36. जिंदगी को हंसमुख बनाइए -नलिनी-कमलिनी
38. ...क्योंकि हंसी अब एक 'उत्पाद' है -पीयूष पांडे
41. हंसो ताकि तुम्हारे साथ दुनिया हंसे -डेविड लूडेन
43. जीवन के लिए टॉनिक का काम करता है -हेमंत पांडे
45. हंसी का चमत्कार -मारला तबाका
47. हंस मत पगली प्यार हो जाएगा -असीमा भट्ट
49. हंसी-खुशी -बालमुकुंद गुप्त
51. खिलखिलाहटों में -अमरकांत

लेख

72. प्रकृति का उत्सव : असम का बोहाग बिहू -रीता तिवारी

उपन्यास-अंश/कहानी

54. अथ पूना डॉट कॉम -हरीश नवल
58. आम -सआदत हसन मंटो
62. गर्म हवा का झोंका या अधूरी ख्वाहिशें -ममता वी.

कविताएं

66. कविताएं -रघुवीर सहाय/निवेदिता झा/पुरुषोत्तम व्यास

हर बार

अतीत के पन्नों से-5, मंच-6, पहला कदम-65, किताबें-68, कादम्बिनी क्लब-71, मतांतर-74, व्यंग्य-76, हंसी-दिल्लगी-77, एलोपैथी-78, आयुर्वेद-79, माइंड गेम-80, भविष्य-81, शब्द-82.

संपर्क करें

विज्ञापन के लिए :
मयंक खंतवाल
मोबाइल : 09999419333
email :
mayank.khantwal@hindustantimes.com

सदस्यता शुल्क –

वार्षिक - 280 रुपये,
द्विवार्षिक - 520 रुपये।

विदेशों में –

वार्षिक - 1240 रुपये।
द्विवार्षिक - 2440 रुपये।

'कादम्बिनी क्लब' के सदस्यों के लिए -235 रुपये प्रति सदस्य (वार्षिक)।

शुल्क केवल **चैक, बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर** से भेजें। ड्राफ्ट 'हिंदुस्तान मीडिया वेंचर्स लिमिटेड' के नाम से दिल्ली में देय हो।

शुल्क भेजने का पता : सब्सक्रिप्शन सेल, कादम्बिनी, हिन्दुस्तान मीडिया वेंचर्स लिमिटेड, पैसिफिक बिजनेस पार्क, फोर्थ फ्लोर (ए-401), साहिबाबाद इंडस्ट्रियल एरिया, जिला: गाजियाबाद (उ.प्र.) पिन: 201010
फोन : 0120–6678788

MAGZINEKING

अतीत के पन्नों से

काल-चिंतन

- पूर्णिमा की उजली, सफेद रात्रि ! निस्तब्ध, सघन वन !
- एक यात्री ने दूसरे से पूछा, 'मित्र, आकाश में क्या है ?'
- दूसरे ने सहज ढंग से उत्तर दिया, 'चांद, निर्मल और स्वच्छ चांद !'
- पहले यात्री ने जोर का अट्टहास किया। बहुत देर तक वह अट्टहास करता रहा। दूसरे यात्री ने परेशान होकर पूछा, 'आखिर तुम्हें क्या हो गया है ? तुम पागल तो नहीं हो रहे ?' पहला यात्री अचानक गंभीर हो उठा। बोला, 'तुममें और मुझमें यही अंतर है। तुम्हारा पेट भरा है, इसलिए तुम्हें आकाश में चांद दिखाई दे रहा है !'
- उसने जोर देकर कहा, 'चांद नहीं है आकाश में मेरे दोस्त ! वह एक सफेद रोटी तैर रही है।'
- दो यात्रियों की यह वार्ता समय के प्रवाह में बहते हुए आकर थम गई है। इसी को आधार मानकर सत्य और असत्य का निर्णय करना है। निर्णय का आधार समय और स्थितियां होती हैं। एक समय का सत्य, दूसरे ही क्षण असत्य बन जाता है। इसी तरह असत्य भी सत्य बन सकता है। बनने और न बनने की इस प्रक्रिया में ही आज का दर्शन छिपा है।
- एक बना हुआ राष्ट्र दूसरे बनते हुए 'राष्ट्र' को हीन दृष्टि से देखता है। बनता हुआ राष्ट्र, बने हुए राष्ट्र को 'साम्राज्यवादी' होने की संज्ञा देता है। सत्य की दृष्टि दोनों के पास है, दोनों के पास नहीं है ! अर्थ हुआ कि सत्य और असत्य समय-सापेक्ष है।
- वैज्ञानिक एडीसन का कहना है कि एक शब्द मुझे बहुत झूठा लगता है। वह है—'ठहराव' ! ठहरी हुई कोई भी वस्तु नहीं है। सब चीजें हो रही हैं। सब चीजें भागी जा रही हैं ! सब बदलती जा रही हैं ! तालाब में रुका हुआ पानी; पत्थर के बने मकान, तारकोल की सड़कें... ! ठहरे रहने का कितना मिथ्या नाम इनमें है !
- रुका हुआ पानी सूरज निरंतर पी रहा है ! पत्थर एक प्रक्रिया के चक्र में रेत से बने थे और फिर रेत होने के लिए संकल्प-रत हैं ! सड़कें रोज चलती हैं, और घिसती रहती हैं। नदी ही केवल नदी नहीं है, आदमी भी एक नदी है। वह निरंतर बहता रहता है और नदी की तरह ही सुबह कुछ होता है, शाम को कुछ। अतः ठहराव कहीं नहीं है। सब कुछ गतिमय है, इसलिए गति का विरोधी शब्द अ-गति नहीं हो सकता !
- ठीक वैसे ही जैसे नदी पर मकान नहीं बनाए जा सकते। कोई बनाने का उपक्रम करेगा भी तो वे प्रवाह में बह जाएंगे। बहती हुई जिंदगी को घर बनाने की कोशिश कितने लोगों ने नहीं की ! किसी का घर ठहर नहीं सका ! इसीलिए कबीर ने टेर लगाई थीः

कबिरा खड़ा बजार में लिए लुकाठी हाथ, जो घर फूंकै आपना, चले हमारे साथ ! घर तो फूंकना ही पड़ेगा, आप चलते रहने का अनुभव करें या अपने को ठहरे रहने के भुलावे में कैद रखें !



चित्रांकन : सुदर्शन मल्लिक

- हम सब एक 'दुर्घटना' की उपज हैं और अंतिम दुर्घटना तक पहुंचने के लिए निश्चित कर दिए गए हैं। लेकिन इन दो दुर्घटनाओं के बीच का समय तो हमारा है, उसे हमें स्वयं निश्चित करना है। यही निश्चित करना चलते रहना है। इसी को 'योजना' कहा जाता है !
- राष्ट्र के संदर्भ में योजनाओं का महत्त्व है। अपने हाथ की जीवन-यात्रा को परिश्रम से सींचना है। योजनाएं नहीं होंगी तो 'बीच की अवधि' सार्थक और अनश्वर होगी। गलत योजनाएं सब कुछ मिटा देती हैं—आदमी के पदचिह्न और राष्ट्र की चेतना।
- दुर्भाग्य से हम नदी के बहाव पर योजनाएं बनाने के आदी हो गए हैं।

—निष्कर्ष स्पष्ट है : चांद हमें दिखाई नहीं देता। वह तैरती हुई एक सफेद रोटी बन गया है ! पहले यात्री का ज्ञानबोध मिथ्या तो नहीं है। दूसरा यात्री भी असत्य नहीं कहता। तब... ? मैंने कहा था : सत्य और असत्य समय-सापेक्ष हैं !

– राजेंद्र अवस्थी

(कादम्बिनी, अप्रैल, 1974)

रंग से रंग लगाना...

मार्च का होली अंक मिला। आपने फिल्मी होली के बारे में कुछ नहीं दिया। अब होली से मन में अहसास होता है कि होली है, पर कुछ दहशतगर्द लोगों ने लाल रक्त बहाकर देश में अन्याय किया है। ऐसे में न रंग भाता है, न गुलाल। क्या हो गया है लोगों को, न जाने कितने बर्बाद हो गए? आपने तीन कहानियां दीं, जो शिक्षाप्रद हैं एवं मन को अच्छी लगती हैं। पहली गिरमिटिया बापू की वाणी से ओत-प्रोत है। 'धूप' कहानी में एक सच्ची बात है। धूप विटामिन डी की कमी को पूरा करती है। एक वृद्ध या रोगी व्यक्ति जब धूप में बैठता है, तो उसमें ऊर्जा जगती है। गठिया, दमा के मरीज के लिए यह औषधि है, लेकिन जनसंख्या ज्यादा है और जगह कम, ऐसे में धूप नहीं मिलती। ऊंचे महलोंवालों के कारण झोंपड़ी और फ्लैटवालों को धूप नहीं मिलती। बाजार से आप ऑक्सीजन तो खरीद सकते हैं, धूप कहां से खरीदेंगे?

नीलम गुप्ता
जमालपुर

होली पर मार्च अंक शानदार रहा। होली के कितने रंग हो सकते हैं यह इस अंक को पढ़कर समझा जा सकता है। पुष्पिता अवस्थी का लेख बताता है कि होली अब सिर्फ भारतीय त्योहार नहीं रहा, बल्कि दुनिया में भारतीय जहां-जहां गए होली भी उनके साथ चली गई। यह अलग बात है कि हर जगह होली के अपने रंग हैं और अलग-अलग नाम भी। सबसे पहले तो गिरमिटिया मजदूरों के साथ होली विदेशों में बसी, फिर प्रवासी भारतीयों के साथ। वैसे हर देश में वसंत और होली की अपनी परंपराएं हैं। विवेक काटजू ने ठीक लिखा कि होली लोगों को आपस में जोड़ने का पर्व है और यही हमारे संविधान की आत्मा भी है। आज जब समाज को तोड़ने की कोशिशें हो रही हैं, तब इसका महत्त्व और बढ़ जाता है। सबसे दिलचस्प लेख सुमन मिश्र का लगा जो सूफियाना होली की परंपरा को बेहतर ढंग से बताता है। यही तो भारत की गंगा-जमुनी संस्कृति है।

रामनारायण शुक्ल
जबलपुर (म.प्र.)

कादम्बिनी का मार्च अंक पढ़ा। हमेशा की तरह शानदार! वक्त चाहे जैसा भी हो, कितनी ही परेशानियों, मुश्किलों से भरा, होली आते ही मन फगुनाहट से भर ही जाता है। होली आती ही है तन-मन को रिचार्ज करने। रंग का संबंध राग से है। जब जीवन में राग ही न रहे, तो रंग भी बेमानी



हो जाते हैं, इसलिए होली पर फाग गाने की परंपरा रही है। यह बहिर्मुखी पर्व है और लोगों को जोड़ता है। होली पर सारी वर्जनाएं तिरोहित हो जाती हैं, और सब मस्ती में आ जाते हैं। इसका कुछ संबंध मन से भी है। वसंत में मन वैसे भी मदमस्त हो उठता है। अंक के सभी लेख अच्छे बन पड़े हैं।

शियाराम गुप्त
जयपुर

होली पर केंद्रित कादम्बिनी का मार्च अंक बहुत पसंद आया, हालांकि अब होली में वह पहले-सी बात नहीं रही। शरद जोशी तो पहले ही कह गए हैं कि होली भी अब दिखावे की हो गई है। लोग रंग लगा रहे हैं, तो लगा लो। हंस रहे हैं, तो हंस लो। भले ही आपके जीवन में हंसी न रहे। गरीबी, बेकारी के इस आलम में अब त्योहार महज खानापूरी बनकर रह गए हैं। कवि लोग कविता में तो खूब वसंत में रंग और मस्ती से सराबोर दिखते हैं, लेकिन उनके जीवन में ही न रंग है, न वसंत। कामतानाथ की कहानी इस अंक की उपलब्धि है, हालांकि यह मूल कहानी का संपादित अंश ही है, तब भी इसका प्रभाव कमाल है। रिश्तों में बिखराव और होली में रंग में भंग को यह बड़ी मार्मिकता से उठाती है। बाकी सभी लेख अच्छे बन पड़े हैं।

सुमन शुक्ल
गाजियाबाद (उ.प्र.)

कादम्बिनी-मार्च-2020 होली विशेषांक प्राप्त हुआ। इस अंक के आवरण कथा के सभी होली विषयक आलेख बहुत अच्छे लगे। अर्चना चतुर्वेदी, पंकज प्रसून, प्रिय अभिषेकजी का व्यंग्य पर आलेख भी बहुत पसंद आया। कहानियों में कामतानाथ की कहानी 'छुट्टियां', हरियश राय की 'यू टर्न', सरिता कुमारी की 'धूप' और अयोध्या सिंह उपाध्याय की कविता 'गुलाल', विज्ञानव्रत की तीनों गजलें, हितेश कुमार सिंह की कविता 'समन्वय' अच्छी लगीं। खासकर हमेशा की तरह इस बार भी इब्बार रब्बी का खास लेख 'जहां सब कुछ है' पठनीय और सराहनीय है।

विनोद कुमार तिवारी
फारबिसगंज (बिहार)

मार्च अंक में इस बार होली का विशेष आकर्षण रहे व्यंग्य। सुभाष चंदर के व्यंग्य में गजब का हास्यबोध है। उनकी बात सही है कि होली पर अक्सर कहा जाता है कि 'बुरा न मानो होली है,' लेकिन सवाल यह है कि बुरा मानते ही कब हैं? दुनियाभर के शासक आए, हमें लूटा। हमने बुरा नहीं माना। अंग्रेजों ने लूटा, हमने उसका भी बुरा नहीं माना। अंग्रेजों के बाद काले अंग्रेज आए और उन्होंने हमारे साथ

WWW.PAYKING

भ्रष्टाचार की होली खेली, हमने उसका भी बुरा नहीं माना। बुरा मानना हमारी आदत में ही नहीं है। प्रख्यात हास्यकवि अरुण जैमिनी ने तो अपने राजनीतिक व्यंग्य में कमाल ही कर दिया। सुमन मिश्र का लेख भी सुंदर है। हिंदुस्तान बहुरंगी देश है। कई विचारों और परंपराओं से इसका यह नायाब रूप बना है। होली के संदर्भ में सूफियों की परंपरा इसकी मिसाल है। पुष्पिता अवस्थी ने दुनियाभर में होली के अलग-अलग रंगों की पहचान की है। एक प्रवासी भारतीय में अपने पर्व-त्योहारों को लेकर विदेशों में एक कसक तो रहती ही है, फिर भी एक अजनबी दुनिया में वे अपनी परंपराओं को लेकर सजग रहते हैं, यह बड़ी बात है।

विवेक शर्मा
रायपुर (छत्तीसगढ़)

होली पर कादम्बिनी ने हमेशा की तरह बड़ा तोहफा दिया है। पुष्पिता अवस्थी ने सारी दुनिया में होली खेलने की परंपराओं पर अच्छा लिखा है, हालांकि हमारे यहां यह पर्व धार्मिक परंपराओं और कथाओं से जुड़ा है, लेकिन इसका एक पक्ष सूफियाना होली भी है जिसके अपने आध्यात्मिक रंग हैं। सुमन मिश्र ने इस पर बेहतर लिखा है। इसी आदिवासी समाज की होली का भी अपना अलग अंदाज है। आदिवासी समाज होलिका को खलनायिका नहीं मानता, बल्कि उसके पीछे एक बड़ी मार्मिक प्रेम-कहानी छिपी हुई है। इस पर हरिराम मीणा का लेख बहुत कुछ कहता है। भारत में दक्षिण भारत में होली की कोई खास परंपरा नहीं है, दीवाली की तो है। मूलतः यह उत्तर भारत का ही त्योहार रहा है जो अब अंतरराष्ट्रीय रंग लेने लगा है। इसका एक बड़ा कारण दुनिया में भारतवंशियों की आर्थिक प्रतिष्ठा भी है। दुनिया में जहां कहीं भी होली-जैसे त्योहार मनाए जाते हैं उनमें और हमारी होली में एक बुनियादी अंतर है, और वह यह कि हमारी होली के साथ संगीत की परंपरा भी जुड़ी हुई है। शास्त्रीय संगीत से लेकर लोकगीतों और फिल्मी गीतों तक यह बहुत विकसित है। वैसे भी बिना संगीत और नाच-गान के कैसी होली? अर्चना झा ने इस पर विस्तार से प्रकाश डाला है। अंक में प्रकाशित सभी व्यंग्य अच्छे लगे।

शांतनु सिंह
मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

हम भारतीय स्वभाव से उत्सवधर्मी होते हैं। जब सारी दुनिया में कोरोना वायरस का हमला हुआ है, तब भी हमने होली मनाना नहीं छोड़ा। दरअसल ये त्योहार ही ऐसा है कि आदमी को मदमस्त कर देता है। होली, प्रेम और सामाजिकता का त्योहार है। हमारी ऋतुएं और कृषि परंपरा इससे जुड़ी है, हालांकि महानगरों में होली अब हुड़दंग का रूप ले चली है। इसकी मूल भावना को हम भूलते जा रहे हैं। अंक के सभी लेख बहुत अच्छे लगे। खासकर पुष्पिता अवस्थी, विवेक काटजू, सुमन मिश्र, यश मालवीय, हरिराम मीणा और अर्चना झा के। व्यंग्य भी सभी सशक्त थे। प्रसिद्ध हास्यकवि अरुण जैमिनी का व्यंग्य तो मुस्कुराने को मजबूर कर गया। इसी तरह पंकज प्रसून का व्यंग्य भी आनंददायक था। इस अंक में सैनिकों की होली पर बी.के.मुरली के लेख से बहुत-सी नई जानकारियां मिलीं।

प्रशांत कुशवाहा
लखनऊ (उ.प्र.)

हर बार के अंक की तरह इस बार का खास अंक होली पर रहा जो रंग-बिरंगी छटा को बिखेरता हुआ मुझे बहुत ही उम्दा लगा। इस अंक में क्या लेख, क्या कहानियां और क्या व्यंग्य सब एक से बढ़कर एक रहे, सचमुच पढ़कर आनंद आ गया। यहां खास तौर पर मैं जिक्र करना चाहूंगा लेखिका अर्चना झाजी के लेख–जोगीरा सा रा रा रा... का। इस लेख में लेखिका का यह कहना कि होली में सभी सामाजिक मान्यताओं को बिसराकर अपने दिल की बात को गीतों में गूंथकर कह देने का एक अवसर मिलता है, और बिना गीत-संगीत के तो भला होली कैसी? वाकई होली का तो अपना एक अलग ही आनंद और उत्साह है। इस अंक के अन्य लेख भी पठनीय और आनंददायक हैं।

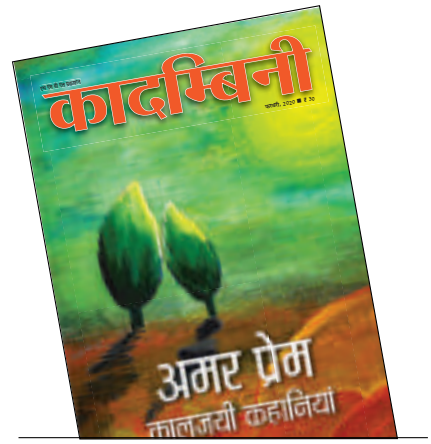
सुमित कुमार
दिल्ली

मार्च में होली पर अनेक लेख आपने पढ़वाए, और सभी अच्छे भी हैं। मैं खासकर जिक्र करना चाहता हूं उस लेख का जिसना मेरा दिल मोह लिया। वह लेख है राजेंद्र गुप्ताजी का लिखा लेख–'भूल जाते थे घर जाना,'–यह बात वाकई दिल को छूती महसूस हुई कि होली का आनंद बचपन और युवावस्था तक ज्यादा देखने में आया, वह दौर ही अलग रहा कि इसका एक नशा-सा उन दिनों रहता था जब होली के हुड़दंग में घूमते-फिरते और धमाचौकड़ी मचाते हुए कब समय बीतता, इसकी कोई भी सुध ना रहती! वाकई में यह त्योहार है ही ऐसा।

मुकेश सिंह
बुलंदशहर (उ. प्र.)

मार्च अंक में होली पर छपे लेख अच्छे हैं, मैंने वैसे तो सभी लेख-कहानियां पढ़ीं, मगर मैं इस बार के लेखों में प्रकाशित दीपक डोबरियालजी के लेख–'...और फिर घास में लेट जाना' बहुत ही पसंद आया, इसमें उन्होंने होली के, खासकर फिल्मी होली के रंगों से जो रूबरू करवाया है वह अपने में बहुत ही काबिले-तारीफ है। जो बात मुझे अनुकरणीय लगी, यह कि दिल्ली की हुड़दंगी होली के मुकाबले में मुंबई की होली का काफी शिष्ट होना।

अनिल कुमार
दिल्ली



अमर प्रेम-कालजयी कहानियां

कादम्बिनी का फरवरी अंक पढ़ा। 'अमर प्रेम कालजयी कहानियां' के अंतर्गत हीर-रांझा की कहानी नहीं भूलती। पंजाबी कहानी 'सांझ' बचपन के प्रेम का बुढ़ापे में वात्सल्य के रूप में कमाल का चित्रांकन है। इन कालजयी कहानियों को बार-बार पढ़ने का मन करता है, फिर भी लगता है कि मन अभी भरा नहीं।

आबिद मजीद इराकी
जहानाबाद (बिहार)

फरवरी अंक कालजयी कहानियों पर केंद्रित अच्छा लगा। ओ. हेनरी की कहानी 'मेजाई का तोहफा' तो सार्वकालिक महान कहानी है। दांपत्य प्रेम की ऐसी शानदार कहानी ढूंढ़े नहीं मिलती। रूसी लेखिका टैफी की कहानी पहली बार पढ़ी। किशोर मानस की जटिलता और प्रेम का अद्‌भुत निरूपण किया गया है इसमें। अच्छा लगा कि इस अंक में भारतीय भाषाओं की कहानियों को भी स्थान दिया गया। बी.आर. लक्ष्मणराव, गुरुदयाल सिंह और तरुणकांति मिश्र की कहानियों ने भी मन मोह लिया। प्रेम के अलग-अलग रूपों पर सूरज प्रकाश और प्रभात रंजन के लेख भी पसंद आए। प्रभात रंजन ने ठीक लिखा है कि नए जमाने में प्रेम मुखर हुआ है।

श्रीकांत मिश्र
पटना (बिहार)

कालजयी कहानियों पर केंद्रित फरवरी अंक की कई कहानियां तो अद्‌भुत हैं। ओ. हेनरी, ब्लादिमीर नोबोकोव, हारुकी मुराकामी, गुरदयाल सिंह, बी. आर. लक्ष्मणराव की कहानियों ने मन मोह लिया। कई कहानियां विदेशी परिवेश की होने के कारण हम लोगों के लिए उतनी सहज नहीं होतीं, फिर भी मानवीय भावना सार्वभौम है। खासकर प्रेम और नफरत और यह अंक इस बात का ज्वलंत प्रमाण है। ऐसे अंकों से पत्रिका की साहित्यिक सुरुचि का पता चलता है।

विनय सिंह
ग्वालियर (म.प्र.)

MAGAZINE KING

हंसो, हंसो और हंसो



कभी एक बच्चे को हंसते हुए देखें। कितनी सहज और स्वाभाविक हंसी होती है उसकी। हालांकि यह सच है कि इस दुनिया में हम रोते हुए ही आते हैं, लेकिन जिंदगी हमें हंसना सिखा देती है। हंसने का अपना एक दर्शन है। कहते हैं कि जो व्यक्ति जितना बुद्धिमान होता है उसका हास्यबोध उतना ही अच्छा होता है। एक मूर्ख व्यक्ति कभी खुद की मूर्खता पर भी नहीं हंस पाता, जबकि एक चेतनासंपन्न और बुद्धिमान व्यक्ति के जीवन में अनायास हंसी होती है। वह दूसरों पर कभी नहीं हंसता। हमेशा खुद पर ही हंसता है, क्योंकि अपनी मूर्खताओं के बारे में उसे पता होता है। ये ठीक है कि गंभीरता को हमने एक मूल्य बना रखा है और यह मानकर चला जाता है कि जो जितना ज्ञानी होगा, वह उतना ही गंभीर होगा। जबकि ऐसा है नहीं। बड़े-बड़े दार्शनिकों, वैज्ञानिकों और साहित्यकारों के जीवन में जितना हास्यबोध रहा है उतना एक सामान्य व्यक्ति के जीवन में नहीं होता। वैज्ञानिक हंसी को एक प्रकार का विज्ञान मानते हैं। इस पर बाकायदा तमाम शोध हुए हैं कि हंसी का हमारे जीवन, स्वास्थ्य और सफलता पर कितना गहरा प्रभाव पड़ता है। एक सहज हंसी हमें तमाम कठिनाइयों से निकाल लेती है। आपको हृदयरोग, मस्तिष्काघात और दूसरी तमाम तरह की बीमारियों का खतरा कम हो जाता है। हमारी कार्यक्षमता बढ़ जाती है, जबकि यह भ्रम है कि गंभीर और जिम्मेदार व्यक्ति को हंसना नहीं चाहिए। नई कार्यसंस्कृति तो कहती है कि हास्यबोध से कंपनी के लाभ की संभावना बढ़ती है और उसी के अनुरूप उसके कर्मचारियों की जीवनशैली भी। वे कार्यस्थल पर ज्यादा सहज और बेहतर हो जाते हैं। हंसना मनुष्य की स्वाभाविक क्रिया है। यह तभी संभव होती है जब हमारा मन प्रफुल्लित और संतुष्ट हो। मशहूर कॉमेडियन चार्ली चैप्लिन ने कहा था कि जिस दिन आप नहीं हंसते हैं उस दिन समझो कि आपका पूरा दिन बर्बाद हो जाता है। जब खुलकर हंसते हैं तो आप खुद को बेहतर और हल्का महसूस करते हैं। यही हंसी का जादू है। एक भ्रम यह भी है कि हंसी की नियामत सिर्फ मनुष्यों को मिली है, जबकि ऐसा नहीं है। जानवर भी हंसते हैं। बस हमारी तरह खिलखिलाकर नहीं। उनकी हंसी की भाषा अलग होती है। हंसी का संबंध खुशी से है तो जानवर भी खुश होते हैं और खेलने लगते हैं। खेलने का संबंध हमारी हंसी से भी है। हंसी का मतलब चुटकुला सुनना-सुनाना नहीं होता। आप ध्यान दीजिए कि कब आप सबसे ज्यादा हंसते हैं। उत्तर होगा, ऐसे व्यक्ति के निकट होने पर जिसे हम सबसे ज्यादा पसंद करते हैं। जाहिर-सी बात है कि हम उसकी किसी बात पर प्रतिक्रिया नहीं दे रहे होते, बल्कि संवाद कर रहे होते हैं। हंसी दरअसल संवाद की ही भाषा है, बल्कि हमारी भाषा से भी इसका गहरा संबंध है। हंसी, क्रोध, रुदन दरअसल हमारी भाषा के पूरक हैं। जो बात हम अपनी भाषा से पूरा नहीं कह पाते, उसे अपने इन भावों से प्रकट कर देते हैं। यह ठीक है कि आज हंसी का एक बड़ा बाजार बन गया है। कभी फिल्मों तक में एकाध विदूषक होता था, लेकिन तब हमारी जिंदगी में हंसी ज्यादा थी। फिर नायक ही विदूषक होने लगा। और अब तो स्टैंडअप कॉमेडी की दुनिया ही हजारों करोड़ों की है। दरअसल, बाजार उसी पर अपना ध्यान केंद्रित करता है, जिसकी हमारे पास कमी होती है। हंसी का बढ़ता बाजार शायद यह भी बताता है कि हंसी की हमारे जीवन में कमी हो गई है। यही है इस बार की **आवरण कथा**

MAGZINE KING



MAGZINE KING

...वही सबसे अच्छा हंसता है

MAGAZINE KING





हंसना और रोना स्वाभाविक क्रियाएं हैं और हमारी निजता का प्रमाण भी। ये सहज संपर्क से आती हैं। जरा-सा किसी को गुदगुदा दीजिए सहज हंसी फूट पड़ती है। यह हमें मुक्त करती है और सामाजिक भी बनाती है

MAGAZINE KING

मनुष्य एकमात्र प्राणी है, जो रोता है। दुख का आभास तो सभी पशुओं को होता है, पर उन्हें आंसू केवल आंख को गीला रखने के लिए आते हैं। दूसरे प्राणियों में भी शिशु के लिए जन्म लेना कष्टप्रद होता है, लेकिन वे ऐसे रोते नहीं हैं, जैसे हम रोते हैं। किसी दूसरे प्राणी को प्रसव में ऐसी पीड़ा नहीं होती, जैसी हमें होती है, क्योंकि हमारे सिर का आकार बहुत बड़ा है और जन्म नली है छोटी। हम तो रोते हुए ही पैदा होते हैं। जन्म के समय अगर शिशु रोए नहीं, तो प्रसव करानेवालों को डर लगता है कि वह सांस नहीं ले रहा है। उसे मार-मारकर रुलाया भी जाता है।



सोपान जोशी

रोने का रोना, अपनी जगह है। यह तय है कि हंसना हमारा सहज स्वभाव है। गुदगुदी किए जाने पर नवजात शिशु भी खिलखिलाकर हंस पड़ता है, बशर्ते वह किसी तरह की पीड़ा में न हो। गुदगुदी का मर्म आजीवन रहता है। वयस्क और बूढ़े भी शरीर के किसी कोमल हिस्से में किसी दूसरे के स्पर्श करने पर अनायास ही हंस उठते हैं। अगर यह गुदगुदी रुके नहीं, तो हंसी तेज होकर खिलखिलाहट बन जाती है, किंतु हम खुद अपने शरीर को गुदगुदाकर हंस नहीं सकते। वह तो दूसरे के स्पर्श से ही आती है।

जब कोई चुटकुला सुनाए, तब भी हंसी आती है। चुटकुले का एक दूसरा नाम है–'लतीफा', जो अरबी के शब्द 'लुत्फ' से जुड़ा है। इसके कई अर्थ मिलते हैं–कोमल, करुणा, नर्म, बारीक, पवित्र, आनंद, हास्यप्रद या कोई ऐसी बात जो छिपी हुई हो, जगजाहिर न हो। जिसमें कुछ नया हो, अचरज हो, जो बात लुभावनी हो। गुदगुदी भी तभी होती है जब कोई हमें किसी कोमल जगह छूता है, जहां साधारणतया कोई स्पर्श नहीं करता है। इनमें कांख, पीठ या पैर का तलवा मुख्य हैं।

आधुनिक विज्ञान के पास आज हमारे मस्तिष्क को समझने के नए साधन हैं। मस्तिष्क की गतिविधि एक नक्शे के रूप में सामने आती है। अपने प्रयोगों में वैज्ञानिकों ने पाया है कि गुदगुदी और लतीफा सुनना, दोनों के मस्तिष्क तक पहुंचने का रास्ता अलग है, पर हंसी दोनों ही स्थितियों में एक ही हिस्से से निकलती है। उनका मानना है कि हंसना, गुदगुदी करनेवाले के सामने समर्पण करना है। कांख और पीठ-जैसी जिन कोमल जगहों पर स्पर्श से गुदगुदी होती है, ये वही जगहें हैं जहां पर हमला करके हमें धराशायी करना आसान है। जब कोई मुक्केबाज

लड़ने के लिए तैयार होता है, तब वह इन्हीं कोमल जगहों की रक्षा में अपने बाजू बगल में समेटकर रखता है। हृदय और फेफड़े-जैसे जरूरी अंगों की रक्षा में भुजाओं की मांसपेशियां प्रहार सह लेती हैं, इसीलिए जब आत्मसमर्पण किया जाता है, तब दोनों बाजू ऊपर उठाकर बगलों को खोल दिया जाता है, अपना मर्म उघाड़ दिया जाता है।

हास्य समर्पण तो है, अतुलनीय आनंद भी है। हम अपने करीबी लोगों के साथ ही हंसते हैं। हमारे अपने वही होते हैं जिनके साथ रो भी सकें और हंस भी सकें, जो हमारा मर्म जानते हैं। एक वैज्ञानिक प्रयोग ने दिखलाया कि हम अकेले होने की बजाय दूसरों के साथ तीस गुना ज्यादा हंसते हैं। बच्चों का दिल न तोड़ने के लिए उनके घिसे-घिसाए लतीफों पर भी मां-बाप और संबंधी हंसते हैं। हंसते हुए हम दूसरों को यह जताते हैं कि उन्हें हमसे कोई खतरा नहीं है, कि हम भी उनसे किसी तरह की अप्रियता की अपेक्षा नहीं रखते हैं।

हास्य निजता और अपनेपन का सहज प्रमाण-पत्र है। हम किसी के साथ हंसते कैसे हैं, इससे उनके साथ हमारा संबंध तय होता है। महिलाएं अमूमन उन पुरुषों को ज्यादा आकर्षक पाती हैं जो उन्हें हंसा सकें। 'हंसी तो फंसी'-जैसे चालू वाक्य इसीलिए चलते हैं। कुछ लोगों का यह मानना है कि पुरुष ज्यादा मसखरे और मजाकिया होते हैं, क्योंकि महिलाओं पर प्रभाव डालने के लिए उन्हें हंसाना होता है, जबकि पुरुषों को प्रभावित करने के लिए महिलाओं को उन्हें हंसाने की जरूरत नहीं पड़ती, इसलिए उनमें पुरुषों-जैसा मसखरापन नहीं होता है। वैसे सच्चाई इसके ठीक विपरीत भी हो सकती है, कि महिलाएं पुरुषों के ऊबाऊ चुटकुलों पर भी हंसने की अभ्यस्त हो जाती हैं, क्योंकि उनसे ऐसी सामाजिक अपेक्षा रहती है कि वे पुरुषों को सराहना की दृष्टि से देखें। यह भी हो सकता है कि हंसने-हंसानेवाले पुरुष में स्त्रियों को यह संकेत दिखता हो कि जो अपने आप पर हंसना जानता है वह दूसरों का लिहाज भी कर सकता है।

हास्य निजता और अपनेपन का सहज प्रमाण-पत्र है। हम किसी के साथ हंसते कैसे हैं, इससे उनके साथ हमारा संबंध तय होता है। महिलाएं अमूमन उन पुरुषों को ज्यादा आकर्षक पाती हैं जो उन्हें हंसा सकें।

सामाजिक मौकों पर आमतौर पर देखने में आता है कि लोग 'आप कैसे हैं?' और 'आपकी कृपा से सब ठीक है'-जैसे जुमलों पर भी हंस देते हैं। दफ्तरों में मुलाजिमों पर यह दबाव रहता है कि वे साहब के लतीफों पर ठहाके लगाएं। इस चाटुकारिता की पराकाष्ठा तो शायद अदालतों में होती है। जज या न्यायाधीश कितना भी बोदा क्यों न हो, उसके चुटकुले कितने भी बासी और ऊबाऊ क्यों न हों, वकील उन पर ऐसे हंसते हैं जैसे कोई उन्हें बलात् पकड़कर गुदगुदी कर रहा हो, फिर अदालत के बाहर आकर चाहे वे जज पर कितना भी क्यों न हंसें! हंसना हमारे अस्तित्व का मामला है। इसे विनोद या ठिठोली मानकर किनारे नहीं किया जा सकता है। हमें दूसरों के साथ रहना होता है, उनके साथ मेल-मिलाप रखना होता है। इसमें हास्य उपयोगी ही नहीं, अनिवार्य है। हंसते हुए हम अपने आप से बाहर निकलते हैं, आत्मलीनता छोड़कर किसी दूसरे को अपनी चेतना के केंद्र में लाते हैं। जब कोई व्यक्ति केले के छिलके पर फिसलकर गिर जाता है, तब उसे देखनेवाले सभी हंस पड़ते हैं। जो फिसला हो उसे इस प्रतिक्रिया में क्रूरता दिख सकती है, अपनी त्रासदी पर दूसरों का हंसना बुरा लग सकता है, लेकिन ज्यादातर लोग दूसरों के साथ-साथ अपने आप पर ही हंसने लगते हैं। ऐसा करने पर वे अपनी त्रासदी से बाहर आ जाते हैं, दूसरों के साथ एकाकार हो सकते हैं।

अकेलापन त्रासदी है, मेल-जोल कॉमेडी है। यूनान के सौंदर्य शास्त्र में दोनों की जगहें अलग हैं। वहां प्राचीनकाल में जो नाट्य उत्सव होते थे उनमें एक कड़ी में जुड़े तीन दुखांत नाटक खेले जाते थे। हर नाटक पिछले कथानक को गहन बनाता था, त्रासदी में नए आयाम डालता था। मुख्य किरदार अपने तमाम गुणों के साथ किसी अन्याय के खिलाफ संघर्ष करता था। अंत में उसकी मृत्यु हो जाती थी। चाहे उसके संघर्ष के कारण नेक हों या अनेक हों या गलत हों, जब मनुष्य अपने आप को दूसरों से अलग करता है, तब उसका परिणाम अमूमन त्रासदी होता है। प्राचीन यूनान का यह कायदा यूरोपीय कला और साहित्य में तो फैला हुआ है ही, इसकी झलक आपको मुंबइया हिंदी फिल्मों में भी दिख सकती है। त्रासदी, यानी अपने आप को बहुत गंभीरता से लेना, यानी अकेलापन और मृत्यु!

आधुनिक चिकित्सा के पास तरह-तरह के प्रमाण हैं यह बताने के लिए कि अकेलापन मानसिक स्वास्थ्य ही नहीं, शारीरिक स्वास्थ्य में भी सेंध लगाता है। हास्य को सबसे बढ़िया उपचार तो पहले से बताया जाता रहा है। आज विज्ञान बता रहा है कि हंसने से रोगियों की दवा की आवश्यकता कम हो जाती है, तनाव कम होता है, सेहत जल्दी सुधरती है। वैसे यह बात प्राचीन यूनान में भी पता थी, क्योंकि त्रासदी की नाट्य तिकड़ी के बाद एक प्रहसन का खेल खेला जाता था—कॉमेडी। लोग जब रंगशाला से वापस लौटते थे, तब उनके मानस पर हास्य रहता था। कॉमेडी के नाटक में अपने आप को दूसरों से अलग करनेवाले किरदार की हंसी उड़ती थी और सुखांत में वह सबके साथ मिल-जुल जाता था। कॉमेडी के बहुत से नाटक विवाह के साथ पूरे होते थे। शादी लोगों के मिलने, खाने-पीने, आनंद करने का प्रसंग है। प्रजनन का भी। अगर त्रासदी मृत्यु है, तो कॉमेडी जीवन के चक्र का आगे चलना है।



प्राचीन भारतीय सौंदर्यशास्त्र में भी यह सब है, पर भरत मुनि का रचा 'नाट्यशास्त्र' त्रासदी और प्रहसन को अलग नहीं करता। दोनों को एक साथ, एक ही खेल में रखता है। 'नाट्यशास्त्र' में रसों का खूब सुंदर वर्णन है। पहला रस है—शृंगार, जिसे रसराज, यानी 'रसों का राजा' भी कहा जाता है। यह रिझाने और मोहने का तत्व है। दूसरा रस हास्य है। शृंगार की ही तरह यह भी हमें दूसरों से जोड़ता है। इन दोनों ही रसों की नाट्य अभिव्यक्ति में चेहरा

WADATH KING



> आजकल हास्य उद्योग बन गया है। कॉमेडी के क्लब बन गए हैं जहां लोग टिकट खरीदकर हंसने जाते हैं। शायद समाज में हास्यरस का अभाव है।

खुलता है, चित्त फैलता है, हम अपने आप से बाहर निकलकर अपने आप से बड़े बन जाते हैं। दोनों ही रसों में किसी दूसरे के साथ तन्मय होने का रसायन है।

शृंगार और हास्य के बाद छह रस और आते हैं। वीर और अद्भुत, वीभत्स और भयानक, रौद्र और कारुण्य। सभी हमारे चित्त के साथ खेल खेलते हैं, उसके साथ तरह-तरह की क्रीड़ा करते हैं। दूसरों के साथ, संसार के साथ हमारे संबंधों को विविध रूप से तोड़ते-बनाते जाते हैं। फिर शांत रस आता है, जिसमें सभी रस मिल जाते हैं। लेकिन नाट्यरस की शुरुआत तो शृंगार और हास्य से ही होती है, यही दोनों रस जीवन और संसार की रचना के खास पहिये हैं। हास्य क्रीड़ा है, लीला है, खेल-कूद है।

सबसे महत्त्वपूर्ण बातें हम खेल-खेल में, लीला और क्रीड़ा के सहारे ही सीखते हैं। हंसते हुए हम अपने आप पर नियंत्रण खो देते हैं। सभी आडंबर, सभी पाखंड त्याग के सहज हो जाते हैं। सभ्यता और सामाजिक व्यवहार का मुखौटा हट जाता है और जीव अपने नैसर्गिक स्वभाव में आ जाता है। हास्य रस का दौरा पड़ने पर फेफड़े अकड़ जाते हैं, सांस रुक जाती है, आंखों से आंसू आने लगते हैं। हंसते हुए हलक ऐसी अटक जाती है कि खाना-पीना और बोलना असंभव हो जाता है।

कोई आश्चर्य नहीं कि दूसरों को हंसाने की क्षमता रखनेवाले के पास एक अनूठी शक्ति होती है। तानाशाह को सच बोलने का काम विदूषक ही कर सकता है। हंसमुख लोगों का काम जल्दी हो जाता है, चाहे वे मक्कार ही क्यों न हों! इस ताकत का बुरा उपयोग लगातार होता रहता है। एक समूह के लोग दूसरे समूह के लोगों का परिहास करते हैं। इसके क्रूर और हिंसक रूप भी अनेक हैं। धर्म, जाति, वर्ण, भाषा, लिंग और धन के आधार पर हम दुनिया को अपने-पराये में बांट लेते हैं। अपने से अलग लोगों को दूर रखते हैं, उनका मजाक उड़ाते हैं, अपमान करते हैं। विद्यालयों में ऐसे कई छात्र चुपचाप रहते हैं जिन्हें दूसरों की हंसी का डर रहता है। उनकी शिक्षा पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। महात्मा गांधी ने अपने बचपन के बारे में अपनी आत्मकथा में लिखा है–''मैं बहुत ही शर्मीला लड़का था। घंटी बजने के समय पहुंचता और पाठशाला के बंद होते ही घर भागता। 'भागना' शब्द मैं जान-बूझकर लिख रहा हूं, क्योंकि बातें करना मुझे अच्छा न लगता था। साथ ही यह डर भी रहता था कि कोई मेरा मजाक उड़ाएगा तो?''

आजकल हास्य उद्योग बन गया है। कॉमेडी के क्लब बन गए हैं जहां लोग टिकट खरीदकर हंसने जाते हैं। शायद समाज में हास्य रस का अभाव है। मोबाइल फोन और टी.वी. पर लोग चुटकुले और कॉमेडी खूब भेजते रहते हैं। इसमें कहीं-न-कहीं हमारे मशीनी औद्योगिक जीवन से पलायन की भूख दिखती है। ऐसा जीवन जो हमें असहज बनाता जा रहा है, हमें पिंजरों में रखे हुए है। जहां अपने बॉस या मालिक की हां-में-हां मिलाना इतना जरूरी हो जाता है कि उस जी-हुजूरी को मिटाने के लिए अट्टहास के शोर की आवश्यकता पड़ती है।

हम जब कभी पीछे देखकर बीते समय के सुखद पल याद करते हैं, तब उसमें साथ मिलकर हंसने का विशेष स्थान होता है। हमारा मस्तिष्क कड़वे अनुभवों को मिटाकर हास्य की स्मृति पर केंद्रित रहना चाहता है, क्योंकि हंसना अपने आप से, अपने बंधनों से मुक्ति है, किंतु सही में स्वतंत्र तो वही है जो सहज हंसता है, जिसकी हंसी दूसरों के परिहास की मुहताज नहीं होती। जो हंसते हुए सारे संसार को अपना सकता है, सभी के सामने समर्पण कर सकता है। जो दूसरों को यह अवसर देता है कि वे उसकी कोमलता को गुदगुदाएं, लेकिन जिसकी की हुई गुदगुदी में हिंसा और क्रूरता नहीं होती। वही सबके बाद हंसता है, वही सबसे लंबा हंसता है, वही सबसे सच्चा हंसता है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

हंसी जब स्मृतियों में बस जाए तो सोचिए कि वह हंसी भी क्या हंसी रही होगी। वैसे हंसी सिर्फ खुशी का पर्याय नहीं होती। उसके और भी रूप हैं। कई बार वह भय भी पैदा करती है। राक्षसी हंसी भी तो हंसी ही होती है, लेकिन निर्मल हंसी का कोई विकल्प नहीं



MAGAZINE KING

स्मृतियों में हंसी



नरेंद्र नागदेव

बचपन के सुदूर, धुंधले अतीत तक स्मृति जाती है, तो ठहाके की एक आवाज आती है। यह ठहाका श्याम बाबू का है। हम तब बहुत छोटे थे। वह हमसे शायद दस-बारह साल बड़े रहे होंगे। बड़े भाई की मित्र-मंडली में एक थे। वे युवावस्था की दहलीज पर थे। गोल-मटोल और जिंदादिल थे। साहित्य प्रेमी थे। उज्जैन उन दिनों कस्बेनुमा हुआ करता था। मोहल्ले में छोटे-छोटे घर थे। धूलभरी गलियां थीं। खूब अपना-सा माहौल होता था। रात में आसमान लबालब तारों से भरा होता था और रजनीगंधा के फूलों की खुशबू समेटे हवा के झोंके मखमली अंधेरों की पर्तों के बीच बहते थे। ऐसी ही खुशनुमा रातों में श्याम बाबू के ठहाके गूंजते थे। वे अपनी मंडली के साथ पान की दुकान पर विविध भारती का प्रोग्राम सुनकर लौट रहे होते थे। उन दिनों सीलोन रेडियो पर अमीन सयानी का जलवा था। बाद के वर्षों में उज्जैन छूट जाने के बाद भी, उनके वे ठहाके लगातार स्मृतियों में साथ चलते रहे थे। यहां तक कि तीन दशक बाद भी, जब मैं विदेश से उज्जैन लौटा, तो मन में यह उम्मीद थी कि उनसे मुलाकात होगी उन्हीं ठहाकों के साथ, लेकिन तब तक बहुत कुछ बदल चुका था—वक्त भी और वे भी।

ठहाके श्याम बाबू के थे, तो मुस्कान मोनालिसा की। वह टावर के

पास भारती कला भवन की एक दीवार पर टंगी थी। कलाभवन की स्थापना श्रद्धेय वाकणकरजी ने की थी। बहुत आत्मीय घर-जैसा माहौल होता था वहां। कक्षाएं शाम को लगती थीं। वह एक दुमंजिला भवन का टेरेस था, जिसमें एक बरामदा और एक कमरा था। टेरेस से सामने टावर नजर आता था। बनती हुई कृतियों और रंगों की गंध से परे एक दीवार पर वहां मोनालिसा का प्रिंट लगा था। उसके होंठों की वह जादुई मुस्कान मुझे सम्मोहित कर देती थी। यहां तक कि एक दिन मैं कल्पना कर बैठा कि वह सचमुच मेरे सामने खड़ी है। दशकों बाद एक बार पेरिस जाने का संयोग बना, तो मैं बहुत उत्साह से लूर म्यूजियम में उसकी ओरिजिनल पेंटिंग देखने गया। वहां एक विशेष कक्ष सिर्फ उसके लिए बना था। दुनियाभर से आए दर्शकों की भीड़ थी। मोनालिसा के होंठों पर मुस्कान भी वही थी, लेकिन पता नहीं क्यों उसने इस बार मुझे बचपन की तरह रोमांचित नहीं किया। शायद मैं ही बदल गया था।

ठहाका श्याम बाबू का, मुस्कान मोनालिसा की, तो हंसी राधेश्याम की। उस दिन होली थी। होलिका दहन हमारे घर के सामने ही होता था। अगली सुबह एक बड़े ड्रम में पानी भरकर रंग बनाया जाता, और बाद में तो वो रंग उड़ता कि सड़क लाल हो जाती! बीच-बीच में ढोल बजानेवाले, नाचने-गानेवाले, सब आते-जाते और उल्लास बढ़ाते। दोपहर तक रंग खत्म होने के बाद रामनाथजी भांग घोटने बैठते। हम छोटे थे। हमारे लिए अलग से ठंडाई बनती। श्यामबाबू वाले ग्रुप के बड़े लड़के वहीं चौकड़ी जमाकर बैठ जाते और खूब भांग छनती। राधेश्याम उन्हीं में होते। उस दिन वे गिलास पर गिलास पीते चले गए, फिर किसी ने शरारतवश उनके गिलास में तांबे का सिक्का घिसकर डाल दिया। अब जो उन्होंने हंसना शुरू किया, तो उनकी हंसी रुके ही नहीं। उन्हें यह भी नहीं पता कि क्यों हंसे जा रहे हैं। मजमा लग गया। वह तो हंसते-हंसते जब बेहोश होने लगे, तब उन्हें एक तांगे में डालकर डॉक्टर के पास पहुंचाया गया।

हंसी महज खुशी नहीं, बल्कि भय पैदा करने के लिए भी हंसी जाती है, यह भी उन्हीं दिनों समझ में आ गया था। इस बात पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं था कि चुड़ैलें पीपल के ऊपर बैठकर हंसती रहती हैं। गवाही देनेवाले प्रत्यक्षदर्शी भी अनेक मिल जाते थे। घर से आगे चौक में बंसीलाल पानवाले की दुकान थी। वे वहीं सामने रामलीला करवाते थे। वह कई दिनों तक चलती थी। उसमें भी यज्ञ में बाधा डालने के लिए जो राक्षसी आती थी, वह बोलती कुछ नहीं थी। बस सामने खड़ी होकर हा-हा-हा-हा हंसे जाती थी। रामचंद्रजी जब लंका पर आक्रमण करते, तब वहां के राक्षस भी इसी तरह से खड़े होकर बस हा-हा करते जाते थे। चौक में तब आधी रात का सन्नाटा पसरा होता था। उसमें ये भयानक हंसी की आवाजें रोंगटे खड़े कर देती थीं।

और एक तो ऐसी हंसी भी याद है जो किसी पौराणिक काल में हंसी गई थी। वह द्रौपदी की हंसी थी। घर पर कुछ धार्मिक पत्रिकाएं आती थीं, जिनमें अक्सर रामायण-महाभारत की सचित्र कथाएं होती थीं। चित्र बहुत लुभावने होते थे। ऐसे ही एक चित्र में ऊपरी मंजिल पर खड़ी द्रौपदी हंस रही थी और नीचे दुर्योधन चमकीले फर्श को पानी समझकर घुटनों तक धोती उठाकर चल रहा था। साथ में छपी कथा के अनुसार द्रौपदी उसकी खिल्ली उड़ाते हुए कह रही थी कि अंधों के लड़के अंधे ही होते हैं। चित्र में दुर्योधन के चेहरे पर अपमान और क्रोध साफ-साफ नजर आ रहा था। बाद में श्याम बाबू ने समझाया था कि देखो इसी अपमान से दुर्योधन के भीतर जली क्रोधाग्नि ने आगे

MAGAZINE KING





MAGAZINEKIWO

> हंसी महज खुशी नहीं, बल्कि भय पैदा करने के लिए भी हंसी जाती है, यह भी उन्हीं दिनों समझ आ गया था। इस बात पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं था कि चुड़ैलें पीपल के ऊपर बैठकर हंसती हैं।

चलकर महाभारत के युद्ध का रास्ता प्रशस्त किया था।

एक हंसी इतिहास की धारा को भी मोड़ सकती है, बल्कि एक हंसी ने तो स्वयं मुझे अवसाद के कगार तक पहुंचा दिया था। स्कूल के दिनों की बात है। अपनी कक्षा में मैं मेधावी माना जाता था। शायद इसी मुगालते में मैं उस दिन क्लास में होनेवाले टेस्ट की ठीक से तैयारी करके नहीं गया था। अध्यापक महोदय आए और उन्होंने ठीक वही प्रश्न कक्षा से पूछा जो मुझे नहीं आता था। अब मैंने घबराकर गर्दन झुका ली और मन-ही-मन दुआ करने लगा कि वे किसी अन्य लड़के से उत्तर पूछ लेंगे, लेकिन तभी मेरे झुके हुए सिर पर अध्यापक द्वारा फेंका गया चॉक का टुकड़ा तड़ाक से पड़ा और पूरी क्लास में ठहाका लग गया। मुझे खड़े होकर डांट खानी पड़ी, सो अलग। वह ठहाका कई दिनों तक मेरा पीछा करता रहा और मैं उदास रहा, तो अब आप सोचिए कि एक हंसी वह भी थी।

घर के साथ लगी काका साहब की बैठक थी। उनके ओटले पर रात को अंधेरा होने पर सब बच्चे बैठते और अंताक्षरी, किस्से-कहानियों के दौर चलते। जिस एक कहानी पर सबसे ज्यादा हंसा जाता वह शेखचिल्ली की थी। कुछ इस तरह कि एक दिन शेखचिल्ली दही की मटकी सिर पर उठाए हुए सड़क पर जा रहा था। रास्ते में उसे एक पैसे का सिक्का पड़ा मिला। खुशी से उसकी कल्पना के पंख लग गए। उसने सोचा कि इस सिक्के से पहले तो मैं यह खरीद लूंगा, फिर उसे मुनाफे में बेचकर वह खरीद लूंगा, फिर और अधिक मुनाफे में और बड़ी चीज खरीदूंगा-बेचूंगा। पूंजी बढ़ती जाएगी और मैं रईस बन जाऊंगा। मेरी शानदार कोठी होगी। नाती-पोते होंगे, पर अगर उन्होंने मेरे कंधों पर चढ़कर खेलने की गुस्ताखी की, तो मैं उन्हें ऐसे झटक दूंगा...और उसने सचमुच में सिर को ऐसे झटका कि दही की मटकी जमीन पर गिरकर टूट गई और दही बिखर गया। तब वह वहीं बैठकर जोर-जोर से रोने लगा। हम खूब हंसते थे, लेकिन एक दिन श्याम बाबू ने हमें यह कहकर चुप करा दिया कि उस पर मत हंसो, क्योंकि जिसकी जेब में जिंदगीभर फूटी कौड़ी नहीं रही हो, उसे सपने देखने का पूरा अधिकार है।

फिराक ने ठीक ही कहा था–'वो खुशी ही क्या जो रुला न दे...वो गम भी क्या जो हंसा न दे...।'

सच तो यह है कि मनुष्य के प्रत्येक भाव, हर तरह की परिस्थिति और हर परिवेश के लिए एक विशिष्ट हंसी होती है, जो उसी के अनुरूप प्रभाव उत्पन्न करती है, लेकिन बात करें अगर सकारात्मक हंसी की, तो उसके-जैसा टॉनिक तो मन-मस्तिष्क और देह के लिए दूसरा हो ही नहीं सकता। तनाव से मुक्ति के लिए उससे बेहतर दवा और कोई संभव भी है क्या?

(लेखक प्रसिद्ध कथाकार हैं)

हंसिए हर हाल में

हिंदी साहित्य में हंसने-हंसाने की बड़ी पुरानी परंपरा रही है, लेकिन मुश्किल यह है कि हमने कथित गंभीरता को बड़ा मूल्य बना रखा है। नतीजा यह है कि अब जीवन से सहज हंसी गायब हो गई है और हंसो-हंसाओ क्लब बनने लगे हैं



कितना कमबख्त वक्त है यह कि पूरा दिन गुजर जाता है बिना किसी से बोले-बतियाए। किसी भी बात पर न गुस्सा, न हंसी, न आशा, न निराशा। सुबह, दोपहर, शाम करोना वायरस की दिल दहलाऊ खबरें। ऐसे ही एक फीके बेमजा दिन, सुबह-सुबह टहलने निकली, तो देखा कॉलोनी के पार्क में दस-पंद्रह लोग खड़े-खड़े हंस रहे हैं। उनमें तीन महिलाएं भी थीं। पहले वे धीमे-धीमे हंस रहे थे। उसके बाद वे जोर से हंसने लगे, 'हा-हा-हा-हा' अट्टहास करते। मुझे उनके हंसने से भय लगा। ये सब वे पड़ोसी थे जो दिन में कई बार दिख जाते थे, बालकनी में अखबार पढ़ते, पौधों में पानी डालते, डाकिए से डाक लेते। मैंने कभी उनको हंसते नहीं देखा। ये सब वे लोग हैं जो 'हंसो-हंसाओ क्लब' के सदस्य हैं और जिनके लिए हंसना भी कसरत करने-जैसा काम है।



ममता कालिया

लो बोलो हम 'हंसो-हंसाओ क्लब' के मेंबर नहीं हैं, तो क्या हम हंस नहीं सकते! हमें देखकर कोई यह न कहे कि क्या सूरत पर बारह बजा रखे हैं। हमारी सूरत पर हरदम 10.10 बजे रहते हैं, यानी मीठी मुस्कान! अपने महाकवि 'निराला' ने यों ही नहीं

लिख दिया–

यह घाट वही जिस पर हंसकर/वह कभी नहाती थी धंसकर/आंखें रह जाती थीं फंसकर/कंपते थे दोनों पांव बंधु/वह हंसी बहुत कुछ कहती थी/फिर भी अपने में रहती थी/सबकी सुनती थी, सहती थी/देती थी सबके दांव बंधु !/बांधो न नाव इस ठांव बंधु !

हंसी कई किस्म की होती है। हिंदी साहित्य तरह-तरह की हंसी से ठसाठस भरा हुआ है। मनोहर श्याम जोशी के उपन्यास 'कसप' की नायिका पहुंचेली मुंह पर उलटी हथेली रखकर हंसती है। उसकी हंसी नायक को मोह लेती है। हिंदी में हंसमुख रचनाएं लिखनेवाले कम हैं। विचित्र बात यह है कि जो लेखक और कवि कॉफी हाउस में ठहाके लगाते हैं, रचना लिखते समय एकदम संजीदा हो जाते हैं। हिंदी साहित्य में मनहूसियत को प्रतिष्ठा दी गई है और हास्य-विनोद को थोड़ी नीची कुर्सी।



एक समय था जब हास्य-कवियों की बड़ी पूछ थी। काका हाथरसी, बेढब बनारसी, हुल्लड़ मुरादाबादी, गोपालप्रसाद व्यास किसी भी कवि-सम्मेलन के कामयाब होने की गारंटी हुआ करते थे। व्यंग्य ने कुछ बाद में रंग जमाया, जब लालकिले के प्रांगण में राष्ट्रीय कवि-सम्मेलन में काका हाथरसी अपनी कड़क आवाज में 'महंगाई' कविता सुनाते थे, तो श्रोता ताली बजाते थे और नेता बगलें झांकते।

गोपाल प्रसाद व्यास जैसे ही मंच पर खड़े होते श्रोता फरमाइश करते, वह सुनाइए 'जग्गो की जीजी' वाली। व्यासजी शुरू हो जाते, 'ए जी कहूं या ओ जी कहूं।' इन हास्य-कवियों की स्मरण-शक्ति इतनी प्रबल थी कि अपनी दर्जनों कविताएं इन्हें कंठस्थ रहतीं। उस समय मोबाइल फोन, नोट बुक-जैसे उपकरण नहीं थे। प्रायः कवियों के हाथ में कोई कॉपी या कागज भी नहीं होता था। कंठ और मस्तिष्क का खेल था यह। पिछली सदी के पांचवें, छठे दशक में हास्य प्रधान पत्रिकाओं का बोलबाला रहा।

लोगों के पास जब विकल्पों की कमी थी तब हंसी या हास्य को मनोरंजन का एक बड़ा साधन माना गया। इसका प्रभाव परवर्ती कवियों में भी देखा गया, जब वे बेहतर शिक्षा और चेतना के साथ कवि-मंच पर उतरे। सुरेंद्र शर्मा, सरोजिनी प्रीतम, बरसाने लाल चतुर्वेदी के साथ-साथ अशोक चक्रधर-जैसे उच्च शिक्षित, समाज-सचेत रचनाकार भी मैदान में आए। उन्होंने गंभीर मुख-मुद्रा धारण कर लोटपोट होनेवाली कविताएं सुनाईं। जैसे उन्होंने कहा–

''पचास साल का इनसान
न बूढ़ा होता है न जवान
वो पके फलों से लदा
एक पेड़ होता है
आधी उम्र पार करने के कारण
अधेड़ होता है।''

गद्य में हास्य के साथ व्यंग्य ने अपनी जगह बनाई। इसकी परंपरा प्राचीन रही, जिस पर नवीनता का प्रलेप पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', हरिशंकर परसाई और शरद जोशी ने किया। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि हंसी कोई 'टाइमपास' काम नहीं, वरन् जीवन से गहरा जुड़ा संस्कार है जो अपनी उत्पत्ति में भले ही हंसाए, अपनी निष्पत्ति में रुलाता है। याद आती है वह घटना जब उग्रजी जुए में कुल जमा पूंजी हारकर शिवपूजन सहाय के घर पहुंचे। शिवपूजनजी की पत्नी का उसी वक्त देहांत हुआ था और उनके पास महज पचास रुपये थे क्रियाकर्म हेतु।

शिवजी ने कहा, ''अंत्येष्टि की व्यवस्था कहीं-न-कहीं से हो जाएगी। तुम यह पचास रुपये ले जाओ।''

यह घटना प्रेमचंद की कहानी 'कफन' के घीसू मछुआ की करुणा याद दिलाती है।

हंसी केवल हंसने से ताल्लुक नहीं रखती। वह हमें गहरी शिक्षा भी दे जाती है। परसाईजी जब 'सदाचार का ताबीज' निबंध लिखते हैं या 'जैसे उनके दिन फिरे'-जैसी कहानी, हमें अंदाजा लग जाता है कि उनके विनोद के पीछे व्यंग्य की तीखी मार छिपी है। वैसे बर्नार्ड शॉ कह गए हैं कि व्यंग्य कमजोर की कमान है, लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि व्यंग्य के सहारे सच बोलना कितना सरल हो जाता है! शरद जोशी को इसमें महारत हासिल थी। वे अपनी रचना का पाठ करते समय इतना गंभीर, गमगीन चेहरा बना लेते कि लगता कोई मर्सिया सुनाएंगे। वे अपना गद्यांश सुनाते और श्रोतागण हंसते-हंसते दोहरे हो जाते।

'सड़क और गड्ढे' रचना में वे कहते हैं, ''आजकल बरसात है और हमारे देश में नगर पालिकाओं को गालियां देने के लिए यह श्रेष्ठ मौसम माना जाता है। सड़क पर गड्ढों में पानी भर गया है और जब तक पानी न भरे हम यह जान नहीं पाते कि सड़कों पर गड्ढे हैं। गड्ढे पूरे वर्ष होते हैं, पर तब वे हमें नजर नहीं आते। वे हमें बरसात में दिखते हैं।''

अंग्रेजी साहित्य में हंसी और कटाक्ष के अनेक विशिष्ट रचनाकार रहे हैं। उनमें से सिर्फ एक की बानगी देखिए–ऑस्कर वाइल्ड ने लोकतंत्र के लिए कहा है, ''एक समय था जब लोकतंत्र को लेकर ऊंची उम्मीदें की गई थीं, लेकिन लोकतंत्र असल में क्या है, लोगों के लिए लोगों को लोगों से मारो-कूटो।''

(लेखिका प्रसिद्ध कथाकार हैं)

> एक समय था जब हास्य कवियों की बड़ी पूछ थी। काका हाथरसी, बेढब बनारसी, हुल्लड़ मुरादाबादी, गोपाल प्रसाद व्यास किसी भी कवि सम्मेलन के कामयाब होने की गारंटी हुआ करते थे।

MAGAZINE KING

ये फूलों की खुशबू की तरह है

हंसी प्रकृति की नियामत है जो सिर्फ मनुष्य को मिली है। कठिन-से-कठिन परिस्थिति में भी हंसी ही है जिससे जिंदगी आसान हो जाती है। कभी खुद पर हंसना चाहिए कभी अपनी मूर्खता पर। हंसी खुशबू की तरह है जो फैलती ही जाती है



अश्विनी भिड़े देशपांडे

MAGAZINE KING



हमारी नैसर्गिक प्रवृत्तियों में से हंसी एक मोहक स्वभाव है। इस धरती पर सिर्फ हमें ही हंसने और मुस्कुराने का गुण मिला है। यह किसी वरदान से कम है क्या? हम किसी बात से खुश होते हैं, तो हंसते हैं। एक जापानी कवि नागुचि ने भगवान से वरदान मांगा था। वे लिखते हैं कि–'जब जीवन के किनारे की हरियाली सूख गई हो, सूर्य ग्रहणग्रस्त हो गया हो, मेरे मित्र मुझे कष्ट के क्षण में अकेले छोड़कर, मुझसे कतरा रहे हों और आकाश का सारा क्रोध मेरे भाग्य पर बरस रहा हो। ऐसे समय में, मेरे ईश्वर मुझ पर कृपा करना कि मेरे होंठों पर हंसी की उजली लकीर खिंच जाए।' यही तो जीवन का सच है कि हम हर सुख-दुख को हंसकर जीते हैं, तब जिंदगी आसान हो जाती है।

मुझे लगता है कि आपकी हंसी और आपके संस्कार ही आपके व्यक्तित्व को संवारते हैं। जैसे पहला संस्कार मुझे मेरे घर में और पढ़ाई से मिला। संगीत तो जीन में रहा ही। दूसरा आत्मसंतुष्टि का भाव जो एक बहुत महीन रेखा खींचता है, कि जो आप काम कर रहे हैं, उससे आपके मन को कितनी खुशी मिल रही है। इस खुशी के साथ एक सुख की अनुभूति जरूरी है। इससे आपको मेहनत के दम पर आगे बढ़ने



की प्रेरणा मिलती है। मुझे लगता है कि अगर हम आत्मसंतुष्ट होंगे और हंसते रहेंगे, तभी हम शांति के साथ आगे बढ़ सकते हैं। दरअसल, हंसने से हमारे काम करने की क्षमता बढ़ जाती है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तो यहां तक कहते थे कि मुझमें हास्य का भाव न होता तो मैंने बहुत पहले ही आत्महत्या कर ली होती।

अपने करियर के शुरुआत के कुछ वर्षों तक मैं नौकरी करने के साथ अनेक कार्यक्रमों में गाती रही। मैंने तय किया कि एक साल तक सिर्फ गाऊंगी, इसके अलावा कोई और काम नहीं करूंगी। इस तरह सिलसिला शुरू हुआ और मैं गाने से जुड़ गई। शास्त्रीय संगीत वास्तव में उनके लिए है जो कठिन रास्ते पर चलने के इच्छुक हैं। अनवरत और अमूल्य सतत् यात्रा का दूसरा नाम शास्त्रीय संगीत है। आप अपनी आत्मा को शुद्ध रखना चाहते हैं, तो राग के आकार में ब्रह्म के दर्शन कर खुश रह सकते हैं। वास्तव में, खुश रहना और हंसना एक योग है। इससे आप स्वस्थ और निरोग रहते हैं।

हम अंदर से खुश होते हैं, तब मन-मस्तिष्क शांत और आनंद में होता है। मैंने हमेशा आत्मसंतुष्टि के लिए रियाज किया, कभी प्रोग्राम है, इसके लिए रियाज नहीं किया। जिंदगी सिर्फ एक अंधी दौड़ नहीं है। हमारी जिंदगी को सुखमय और आनंद से भरा होना चाहिए। हरेक को अपना रास्ता तय करना होता है। आपकी किस्मत में क्या लिखा है? वैसा ही आपको मिलेगा। मेरे सामने मेरी अभिलाषा सिर्फ गाते रहने की रही। मुझे यह अपेक्षा ही नहीं रही कि मुझे यह अवॉर्ड चाहिए या वह चाहिए, इसलिए मुझे कभी इन बातों का अफसोस भी नहीं होता। मैं हमेशा पंडित कुमार गंधर्वजी की बात याद रखती हूं, वे कहते थे कि जब हम स्टेज पर होते हैं तब हमारे सिर पर ताज होता है, लेकिन वह ताज मैं लेकर नहीं उतरता हूं। इसी तरह एक बात मेरे दादा गुरु गजानन बुआ जोशी कहते थे कि–'जब स्टेज पर जाओ, तो सब भूल जाओ, यह सोचो कि सामने बैठे सब मूरख हैं। तब मन में आत्मविश्वास आएगा और डर नहीं लगेगा।' आज जब उनकी बात सोचती हूं, तो अपने पर हंसती हूं।

मुझे सद्गुरु जग्गी वासुदेव की बात याद आती है। वे अक्सर कहते हैं कि कभी-कभी खुद पर भी हंस लेना चाहिए। हालांकि यह आसान नहीं होता है। सच कहूं, मुझसे जब कभी कोई गलती या भूल हो जाती है, तब मैं अपनी नादानी पर खुद को कोसने के बजाय हंसती हूं। यही हंसी तो हमें जिंदादिल बनाती है। मैं ताउम्र जिंदादिल बनी रहना चाहती हूं, ताकि अपने संगीत को जिंदादिल बनाकर रख सकूं। यह हंसी फूलों की खुशबू की तरह है। यह तो हवा के सहारे तैरती हुई किसी के होंठों तक पहुंच सकती है। इसे कायम रखना जरूरी है। यह हम कलाकारों की जिम्मेदारी है कि हम वह संगीत गाएं, जो हमें पसंद है। न कि हम सिर्फ वह गाएं जो लोग पसंद करते हैं, क्योंकि शास्त्रीय संगीत आध्यात्मिक संगीत है। यह आत्मा का संगीत है। इसे आत्मानंद के साथ पेश किया जाएगा, तो वह चिरंतन बनेगा। उसकी खुशबू दूर तक फैलेगी।

(लेखिका प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका हैं)

हंसती हुई तस्वीरें

मेरा खयाल है तुम्हारा हाल बुरा है
नहीं तो इतना हंस क्यों रहे हो
आखिर खुशी ही कौन सी है इतनी हंसी के लायक
देखते नहीं हो बगीचे-भर में हर पत्ते पर लगे हैं कीड़े
और ऐंठ रही हैं जड़ें अश्वत्थों तक की पानी के अभाव में
खाए जा रहा है कैंसर का रोग मां की रत्नगर्भा कोख को

माफ तो नहीं है ऐसे में हंसना बच्चे तक का
फिर तुम ही किस सिलसिले में इस तरह दांत निकाल रहे हो
बकरी की आंतों से ज्यादा उलझे हुए हैं
सवाल जीविका के,
जीवन तो खैर दूर की चीज है
तमीज ही नहीं है किसी को उसकी
खुश्की के रास्ते पर कहां भटक गया है वह ऊंट
कि चार खूंट उसका
किसी को पता ही नहीं चलता
गलता का लहंगा पहने ऐसे में बैठे हो तुम
मेंहदी लगा रखी है पांव में
जीवन से अब छांव में
आंखें चार करने की आस बेअकली है,
कहता हूं, नकली हंसी से कुछ नहीं बनेगा
खनेगा कुआं मीठे जल का अपने हाथ से
अमेरिका के साथ से सधेगा कुछ न रूस से
चूसकर गन्ने-जैसा फेंक देंगे वे तुमको
खुम के खुम पी गए हैं वे तुम तो सिर्फ चुल्लू हो
इसलिए कहता हूं तुम्हारा बुरा हाल है
छुपाओ भी मेहरबानी करके उनके साथ की
अपनी इन हंसती तस्वीरों को, दिखो उदास और काम में लगे हुए
उलझे हुए हैं सवाल हंसी-खुशी को छोड़िए जीने तक के
खाने के छोड़िए, पीने तक के!

– भवानी प्रसाद मिश्र



MAGAZINE KING

हमारे आनंद का फैलाव

हंसना एक आध्यात्मिक साधना भी है। जब आप गहरी और निर्मल हंसी हंसते हैं तो आपकी विचार प्रक्रिया रुक जाती है और आप गहरे ध्यान में चले जाते हैं। लेकिन मुश्किल यह है कि हमारी सभ्यता ने हंसने की जगह गंभीरता को मूल्य बना रखा है, जबकि आधुनिक मनोविज्ञान और चिकित्सा विज्ञान ऐसा नहीं मानता

MAGAZINE KING



अमृत साधना

आपने खयाल किया, हंसने पर कितने सांस्कृतिक बंधन लगाए हैं। सदियों से चले आ रहे हमारे मुहावरे देखें: 'यह कोई हंसी-मजाक नहीं है।' 'इसे हंसकर मत टालो।' 'लोग हंसी उड़ाएंगे।' 'दांत मत निपोरो।' 'क्या 'ही-ही' कर रहे हो?'

मुहावरे यों ही नहीं बनते, वे समाज में प्रचलित रीतियों से बनते हैं, जन-मानस के वे प्रतिनिधि होते हैं। बहुत पुराने समय से, हंसना सभ्य समाज में अशिष्टता का प्रतीक रहा है। गंभीरता को शिष्टता माना गया है। आज भी औरतें हंसती हैं, तो मुंह पर हाथ रखकर या पल्लू से मुंह ढांककर। दांत दिखाना अच्छा नहीं माना जाता, लेकिन क्या वाकई हंसना अशिष्ट है, या छिछोरापन है? जरा देखिए डॉक्टर क्या कहते हैं।

हाल ही में अमेरिका के डॉ. डेविड सोबेल द्वारा लिखा हुआ एक लेख पढ़ा: 'भरपूर हास्य, अच्छा स्वास्थ्य।' ये डॉक्टर अमेरिका में एक संस्थान में काम करते हैं जिसका नाम है: इंस्टीट्यूट फॉर दि स्टडी ऑफ ह्युमन नॉलेज। इस संस्थान के निष्णात डॉक्टरों ने आदमी के स्वास्थ्य का अनुसंधान किया और इस अनुसंधान के निष्कर्ष प्रकाशित किए। इन निष्कर्षों को पढ़कर ऐसा लगेगा जैसे ओशो ही बोल रहे हैं, लेकिन उनका ओशो से कोई लेना-देना नहीं



है, वे तो अपने वैज्ञानिक प्रयोगों के आधार पर बोल रहे हैं। उनके निष्कर्ष यही दिखा रहे हैं जो ओशो जिंदगीभर कहते रहे, जिसके प्रयोग वे करते रहे। ये अन्वेषक कहते हैं, ''हास्य में अद्भुत क्षमता है–स्वास्थ्य प्रदान करने की और ध्यान में डुबोने की भी। वह निश्चित ही आंतरिक रसायन में और मस्तिष्क की विद्युत-तरंगों में परिवर्तन लाता है, प्रतिभा को प्रभावित करता है, आप ज्यादा बुद्धिमान हो जाते हैं। मन के वे हिस्से जो सोए पड़े थे, अनायास जाग उठते हैं। हंसी आपके दिलो-दिमाग की गहराइयों में प्रवेश कर जाती है। हंसनेवाले लोग आत्महत्या नहीं करते, उन्हें दिल के दौरे नहीं पड़ते, वे अनजाने ही मौन के जगत को जान लेते हैं, क्योंकि हंसी के थमते ही अचानक मन भी थम जाता है, स्तब्ध रह जाता है। और जैसे-जैसे हंसी गहरी जाने लगती है, उतनी ही गहन शांति भी छाने लगती है। हंसी आपको निर्मल कर जाती है।आपको ज्यादा जीवंत, ऊर्जावान तथा सृजनशील बनाती है।''

अब तो चिकित्सा विज्ञान भी कहने लगा है कि हंसी, मनुष्य को प्रकृति से भेंट में मिली सर्वाधिक गहरी औषधि है। यदि बीमारी के दौरान हंस सको, तो जल्दी स्वस्थ हो जाओगे और अगर स्वस्थ रहकर भी नहीं हंस पाए, तो शीघ्र ही स्वास्थ्य खोने लगेगा और बीमारी घेर लेगी। ओशो की दृष्टि है–''हास्य आंतरिक स्रोत से शक्ति जगाकर बाह्य तल तक ले आता है। हंसी के पीछे, छाया की तरह एक ऊर्जा की धारा प्रवाहित हो जाती है। क्या आपने गौर किया, जब आप वास्तव में गहराई से हंसते हैं, तो पलभर के लिए ध्यानस्थ हो जाते हैं, विचार-शृंखला टूट जाती है, क्योंकि हंसना और सोचना साथ-साथ संभव नहीं। वे बिलकुल विपरीत चीजें हैं, या तो आप हंस सकते हैं या फिर विचार कर सकते हैं। अगर आपका रोआं-रोआं हंसने लगे, तो सोचना बंद हो जाएगा और यदि अभी भी विचार चल रहे हों, तो फिर जानें कि आपकी हंसी झूठी है, खोखली, औपचारिक, बस ऊपर-ऊपर ही! प्राणों की गहराई से हंसते ही मन अकस्मात ठहर जाता है।'' ओशो का प्रसिद्ध वाक्य है–'गंभीरता रुग्णता है।' यह केवल एक दार्शनिक वक्तव्य नहीं है, अब मेडिकल अन्वेषणों ने भी यही सिद्ध कर दिया है। डॉक्टर यह भी कहते हैं कि आप सात दिन तक बिलकुल नहीं हंसें, तो कमजोर और बीमार हो जाएंगे।

> अब तो चिकित्सा विज्ञान भी कहने लगा है कि हंसी, मनुष्य को प्रकृति से मिली सर्वाधिक गहरी औषधि है। यदि बीमारी के दौरान हंस सको तो जल्दी स्वस्थ हो जाओगे।

अगर लोगों के बीच का फासला कम करना हो, तो दिल खोलकर हंसिए। विक्टर बोर्ज नाम के हंसोड़ अभिनेता का सटीक कथन है–'हंसना दो लोगों के बीच का न्यूनतम अंतर है।'हंसना हमारे मनुष्य होने का सबूत है, क्योंकि अकेला मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो हंस सकता है। जब भी संकट का समय होता है, तो सारे पशु दो ही बातें करते हैं– भागना या लड़ना, सिर्फ मनुष्य तीसरी बात कर सकता है–हंसना।

इस अन्वेषण में यह पाया गया है कि हास्य एक आंतरिक जॉगिंग है। एक दिलदार हंसी आपके चेहरे के स्नायुओं, श्वास के पर्दे और पेट को बेहतरीन व्यायाम देती है, उससे दिल की धड़कन और रक्तचाप काफी बढ़ता है, सांस तेज और गहरी होती है और आपके खून में प्राण वायु दौड़ने लगती है। एक भरपूर हंसी आपकी उतनी ही कैलरीज जला सकती है जितना कि तेज चलना। हंसी के दौरान आपका मस्तिष्क इतने हार्मोंस विसर्जित करता है कि उससे आपकी सजगता शिखर पर आ जाती है।

एक राजनीतिक पत्रकार और कार्यकर्ता, नॉर्मन कजिंस अमेरिका की यूनिवर्सिटी में मेडिकल ह्यूमैनिटीज के प्रोफेसर थे, जहां उन्होंने मानव भावनाओं और उपचार (हीलिंग) के बीच के संबंधों के रसायन विज्ञान का अध्ययन किया, जब वे एक कठिन बीमारी की वजह से अस्पताल में भर्ती थे, तो उन्होंने अपने स्वास्थ्य को अपने हाथों में



MAGAZINE KING



लेने का फैसला किया। नॉर्मन कजिंस को अपाहिज करनेवाला जोड़ों का दर्द था। उनका दावा है कि उन्होंने भरपेट हंसकर खुद को ठीक किया। उनका यह भी कहना है कि दस मिनट की भरपूर हंसी उनके दर्द पर एनेस्थेसिया का काम करती थी और वे दो घंटे तक गहरी नींद सो सकते थे।

अन्वेषकों को यह भी पता चला है कि हंसी-मजाक से सराबोर शो को देखने के बाद लार में एंटीबॉडीज का स्तर बढ़ता है जिससे रोग प्रतिरोध शक्ति बढ़ती है। जो लोग हमेशा गंभीर होते हैं उनमें इन एंटीबॉडीज का स्तर बहुत कम होता है जिससे कोई भी बीमारी उन्हें जल्दी पकड़ लेती है। अब सवाल यह उठता है कि आखिर हास्य को अपने जीवन का अंग कैसे बनाएं? इसके लिए कुछ तुक्के और कुछ नुस्खे ये हो सकते हैं–

आप अलग-अलग रंग के चश्मे खरीद लें। जब भी गंभीर हों, तो हरे रंग का चश्मा पहन लें, प्रसन्न हों, तो पीले या और किसी और रंग का। और आईने के सामने खड़े रहकर अपना निरीक्षण करें। आप अपने आप पर हंसने लगेंगे। जब भी मौका मिले– चाहे आप अपने दफ्तर में हों या घर में, काम करते-करते रुक जाएं और दो कदम पीछे हटकर खड़े हो जाएं। चीजों को इस तरह देखें मानो पड़ोसी आकर देख रहा हो, वह किस तरह देखेगा? अपने ही घर में पराए बन जाएं, बहुत मजा आएगा!

आपके साथ कोई भी हादसा हो, कहें, इससे भी बुरा हो सकता था। यह बहुत गहरा नुस्खा है, इससे इस हादसे की चुभन कम होगी। इस संदर्भ में ओशो एक मजेदार कहानी कहते हैं–''मुल्ला नसरुद्दीन एक सूफी फकीर थे जो हर बात को गैरगंभीर तरीके से देखते थे। उनका तकिया कलाम था–'इससे भी बुरा हो सकता था।' उनके आसपास कोई भी घटना घटे, नसरुद्दीन कहते, 'इससे भी बुरा हो सकता था।' उनके यार-दोस्त परेशान थे कि कभी तो उन्हें बौखलाया हुआ देखें। कभी तो वह कहे कि यह तो बहुत बुरा हुआ। आखिर वह दिन आ गया। एक दिन नसरुद्दीन के पड़ोस में एक भयंकर हादसा हुआ। एक परिवार रहता था, पति सेल्समैन था सो उसे हरदम यात्रा करनी पड़ती। पत्नी और दो बच्चे घर में रहते थे। एक दिन पति समय से पहले घर लौट आया, तो उसने देखा उसकी पत्नी उसके खास दोस्त के साथ बेडरूम में मजे कर रही है। पति बेहद क्रोधित हुआ। उसने अपनी पिस्तौल निकाली और दनादन दाग दी। पत्नी और उसका प्रेमी, दोनों मर गए। फिर तैश में आकर उसने खुद को भी गोली मार ली।''

यह सुनते ही नसरुद्दीन के दोस्त उसके घर आए। उन्होंने सोचा कि आज तो नसरुद्दीन कह नहीं सकता कि इससे भी बुरा हो सकता था। दोस्त बोले, ''तुम्हें पता है कैसी भीषण घटना घटी है? मां-बाप दोनों मर गए हैं, बच्चे बिलख रहे हैं, उस दोस्त का परिवार अलग मातम मना रहा है, अब इससे भी बुरा कुछ हो सकता है?'' नसरुद्दीन ने दार्शनिक अंदाज में कहा, ''हां, इससे भी बुरा हो सकता था। अगर पति मंगलवार को आता, तो मैं मारा जाता। यह तो गनीमत है कि वह गुरुवार के दिन आया।''

हास्य से विकसित होता है सैंस ऑफ ह्यूमर, अर्थात विनोद बुद्धि। विनोद बुद्धि मस्तिष्क का वह कौशल है जो जीवन को हल्का-फुल्का बनाता है, बोझिल नहीं। वह काले बादलों की भी सफेद रेखा देख लेता है। जीवन में हर घटना का कोई प्रयोजन होता है, और कोई कारण होता है। अगर हम उसे सही परिप्रेक्ष्य में देखें, तो घटना इतनी गंभीर मालूम नहीं होगी।

ओशो हास्य को प्रार्थना मानते हैं। उन्हीं के उद्धरण से बात पूरी करते हैं–''धर्म जब जीवित होता है, तो हंसना प्रार्थना होती है; धर्म जब मर जाता है, तो हंसने का दुश्मन हो जाता है। हंसना जीवन की धड़कन है। जो धर्म हंसना नहीं जानता, वह बहुत समय हुआ तब मर चुका, धड़कन बंद हो चुकी है, श्वास चलती नहीं है, लाश पड़ी है। लाश की पूजा चल रही है। धर्म पृथ्वी को रूपांतरित नहीं कर पाता है, इसीलिए कि धर्म बार-बार हंसने की भाषा भूल जाता है, गीत भूल जाता है, नृत्य भूल जाता है। हंसो, जी भरकर हंसो! मेरे देखे, अगर कोई समग्ररूपेण हंसना सीख ले, कि जीवन की कोई भी परिस्थिति उससे उसकी हंसी न छीन पाए, उसकी मुस्कुराहट बनी ही रहे–सुख में, दुख में; सफलता में, असफलता में–तो कुछ और पाने को नहीं बचता। सब पा लिया! वैसी दशा ही समाधि है, मोक्ष है।

(लेखिका ओशो की प्रसिद्ध शिष्या हैं)

MAGAZINE KING

केवल हम ही नहीं हंसते

सभ्यता की दौड़ में बेशक हम मनुष्य बहुत आगे निकल आए हैं और हमारी हंसी का व्याकरण भी बहुत बदल गया है, लेकिन ऐसा नहीं कि सिर्फ मनुष्य ही हंसता है। बाकी जानवर भी हंसते हैं, बस उनके हंसने का तरीका अलग होता है

हंसते-मुस्कुराते मन में कई बार खयाल आता है कि क्या इस धरती पर केवल हम ही हंसते हैं? या जानवर भी हंसते हैं?

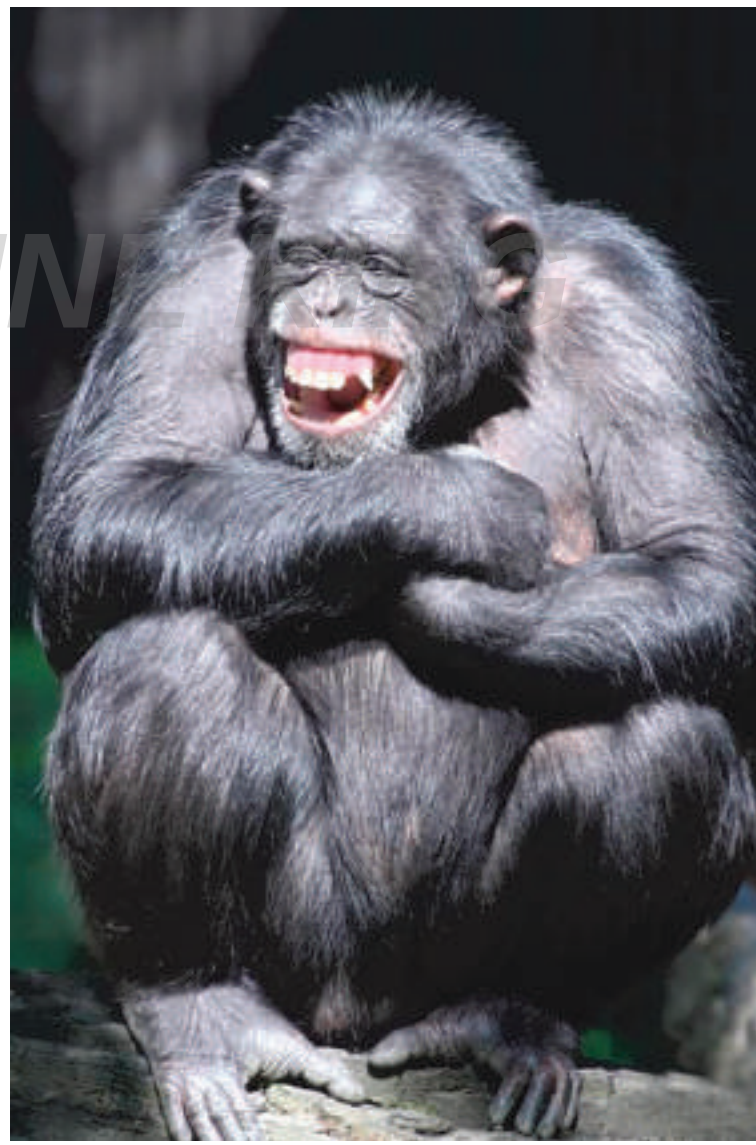


देवेंद्र मेवाड़ी

हंसने की बात तो यह है कि खुद जानवर होते हुए भी हम अपने-आप को किस सफाई के साथ अलग कर लेते हैं और पूछते हैं—क्या जानवर भी हंसते हैं। जी, हंसते हैं। सच यह है कि इस बिरादरी में खुद हम भी शामिल हैं, भले ही लाखों वर्ष लंबी विकास यात्रा में चौपाए से दोपाए होकर हम सभ्यता के शिखर पर पहुंच गए। इस यात्रा में हम ओरंगुटान, गोरिल्ला, बोनोबोस और चिंपैंजी-जैसे अपने दूर के महाकपि रिश्तेदारों को पीछे छोड़ आए। हमने इसी विकास यात्रा में उनकी ही तरह हांफते-हांफते, हंसना सीख लिया और सभ्यता की दौड़ में हंसने-मुस्कुराने के मामले में भी उनसे आगे निकल गए। वैज्ञानिक आज उन बिरादरों की हांफने और घुरघुराने की खासियतों का खुलासा करके हम मनुष्यों के हंसने के गूढ़ रहस्य का पता लगा रहे हैं। उनका कहना है कि विकासक्रम में हमारे वे बिरादर तो घुरघुराते ही रह गए और हम हंसना सीखकर उनसे आगे निकल गए। इतना कि हमने हंसी को भी सशक्त भाषा बना लिया और बिना बोले भी हंसते-हंसाते बहुत-कुछ कहने की कला सीख ली।

यहां बता दें कि प्रसिद्ध शायर और व्यंग्यकार इब्नेइंशा को कोई मुगालता नहीं था कि आदमी भी एक जानवर ही है। अपनी पुस्तक 'उर्दू की आखिरी किताब' में उन्होंने इस दोपाए जानवर के बारे में क्या खूब लिखा है—''दूध देनेवाले जानवरों में पालने के लिए सबसे अच्छा यही है। ये नौकरी करता है, दुकान करता है, तनख्वाह लाता है, बच्चे खेलाता है। उन्हें पीठ पर बैठाता है। अजीब शक्लें बना-बनाकर हंसाता है, बहलाता है।''

और यह भी कि—''अपनी मादा की खिदमत में जितनी दौड़-धूप यह करता है, कोई और जानवर नहीं करता, इसीलिए तो इसके सींग गायब हो गए हैं, खुर घिस गए हैं



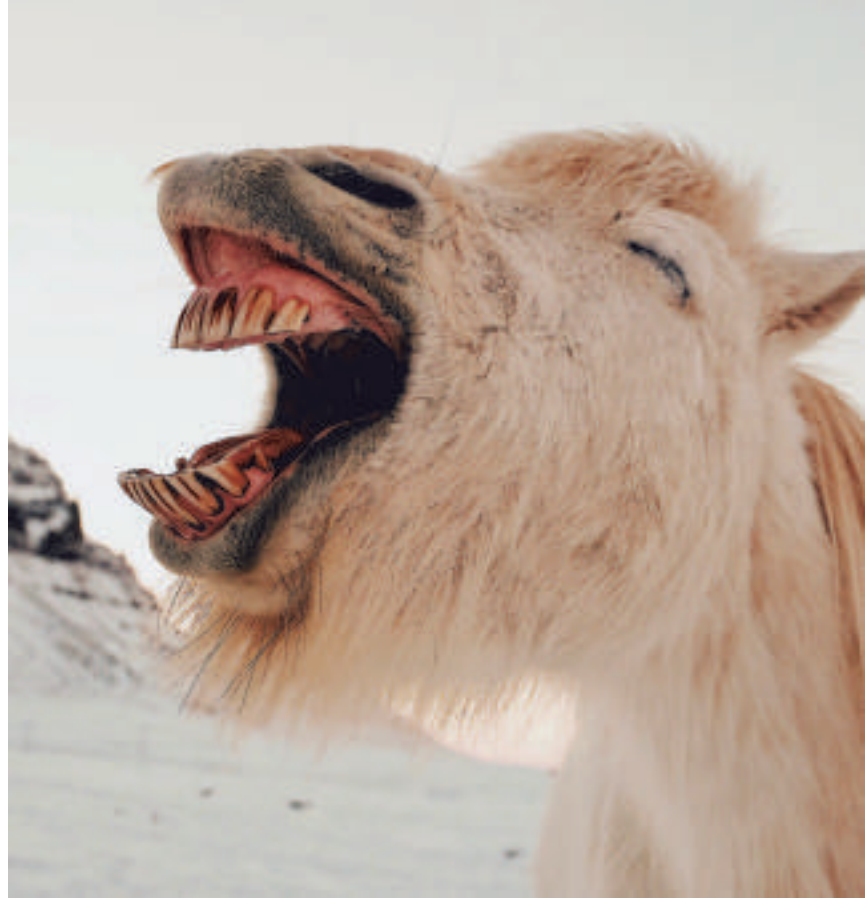
और दुम झड़ गई है।''

खैर, यह तो व्यंग्यकार की बात है, लेकिन वैज्ञानिक एक अर्से तक जानवरों के हाव-भाव को गौर से देखने, उनके गले और बगलें गुदगुदाने के बाद इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि हमारे कपि बिरादर हंसते तो हैं, मगर अपनी तरह। हम मनुष्यों की भाषा से उनकी हंसी की भाषा और व्याकरण अलग है। इसी से वैज्ञानिकों को यह पता लगा कि उनकी घुरघुराहट की तरह हमारे पुरखे भी घुरघुराते रहे होंगे, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने उस घुरघुराहट को अपने पेट के पर्दे, यानी डायफ्राम, गले तथा चेहरे की मांसपेशियों को कुछ इस तरह साध लिया कि हम मुस्कुराने और ठठाकर हंसने लगे। आज हालत यह है कि हम जब हंसते हैं, तो हमारे चेहरे की 43 मांसपेशियां हरकत में आ जाती हैं।

हमारे अलावा प्राणि जगत में जिनकी हंसी का पता लगा है, वे हैं—महाकपि, यानी चिंपैंजी, बोनोबोस, ओरंगुटान और गोरिल्ला। हमारी तरह के चेहरे-मोहरेवाले चिंपैंजी तो दांत दिखाकर भी हंस देते हैं, हालांकि अपने साथी चिंप के साथ मजे से खेलते समय वे कुछ इस तरह हंसते हैं कि लगता है वे हांफ रहे हैं। साथी भी मुंह दबाकर हंसते-घुरघुराते उसकी हंसी का जवाब देता या देती है। बोनोबोस चिंपैंजियों की बौनी प्रजाति है, मगर वे हंसने में बड़े चिंपैंजियों से पीछे नहीं हैं। वे भी उनकी ही भाषा में हंसते हैं। विकासक्रम में चिंपैंजियों से थोड़ा पीछे चल रहे गोरिल्ला भी हंसते हैं, मगर उनकी हंसी वे ही समझ सकते हैं जो उनके करीब रहते हैं। यों तो यह बात सभी जानवरों के लिए सच है। हम उनके सुख-दुख उनके करीब रहकर ही समझ सकते हैं।

एक थी मादा गोरिल्ला 'कोको'। उसका पूरा नाम था—हानाबिको कोको। कैलिफोर्निया, अमेरिका के सैन फ्रैंसिस्को चिड़ियाघर में 4 जुलाई, 1971 को उसका जन्म हुआ था। उसने अमेरिकी सांकेतिक भाषा के कम-से-कम 1000 संकेत सीख लिए थे। इतना ही नहीं, वह अंग्रेजी के 2,000 शब्दों के मायने भी समझती थी। इतना कि एक बार जब उससे अंग्रेजी में 'हार्ड' का मतलब पूछा गया, तो उसने कहा—'पत्थर और कार्य।' एक बार तो उसने मजाक-मजाक में खाली बैठे अपने प्रशिक्षक के जूतों के फीते बांधकर संकेत किया—'चलो, मेरा पीछा करो!'

कोको के संकेत समझकर और हांफने के स्वर सुनकर पता लगा कि उसकी हंफ-हंफी ही उसकी हंसी है। गोरिल्ला ऐसे ही हंसते हैं। गोरिल्ला ही क्यों, चिंपैंजी, बोनोबोस, ओरंगुटान और बंदर भी एक-दूसरे से छेड़छाड़ करके, इशारों से ध्यान आकर्षित करके और तरह-तरह की मुख-मुद्राएं बनाकर अपनी भाषा में ठठाकर हंस लेते हैं, इसलिए बंदरों की अजीब हरकतें देखकर हंसते समय यह भी याद रखें कि हो सकता है, वे भी आप पर हंस रहे हों।



MAGAZINE KING

> विकासक्रम में चिंपैंजियों से थोड़ा पीछे चल रहे गोरिल्ला भी हंसते हैं, मगर उनकी हंसी वे ही समझ सकते हैं जो उनके बहुत करीब होते हैं। यों तो यह बात सभी जानवरों के लिए सच है।

कपि परिवार की ही तरह हम मुस्कुरा भी लेते हैं, दबी हंसी हंस सकते हैं, हो-होकर खुलकर हंस सकते हैं, प्रसिद्ध साहित्यकार मोहन राकेश की तरह अट्टहास कर सकते हैं! इतना ही नहीं, हम किसी की ओर तिरस्कार की नजर से देखकर व्यंग्यभरी हंसी भी हंस सकते हैं, तो कुछ गलत कर देने पर खिसियानी हंसी भी हंस लेते हैं।

यहां तक कि हम मजबूरी की लाचार हंसी भी हंस सकते हैं और दर्द की हंसी को भी हमारे चेहरे पर पढ़ा जा सकता है। जनाब जिगर मुरादाबादी कह ही गए हैं, ''एक ऐसा भी वक्त होता है, मुस्कुराहट भी आह होती है।''

यों, हंसने के लिए हम दोपायों ने तमाम एक से एक मजेदार चुटकले ईजाद किए हैं—खुद पर भी और अपने पालतू जानवरों पर भी। कुत्ते का ही उदाहरण ले लें। कहते हैं, हमारे लाल बुझक्कड़ की तरह उजबेकिस्तान की तरफ भी एक खलीफा थे। उनसे एक बार किसी ने पूछ लिया, ''हुजूर, कुत्ता अपनी दुम क्यों हिलाता है?''

उनकी पेशानी पर बल पड़े, कुछ देर सोचा और फिर संजीदा होकर बोले, ''इसलिए, क्योंकि कुत्ता अपनी दुम की बनिस्बत अधिक ताकतवर है। अगर दुम ताकतवर होती, तो वह कुत्ते को हिलाती!''

कुत्ते की बात चली है, तो यह बता दें कि कुत्ते भी हंसते हैं। कुत्तों से प्यार करने और उन्हें पालनेवाले लोग इस बात को बखूबी जानते हैं। उन्हें खूब पता होता है कि कब उनका कुत्ता खुश है, कब नाराज है, कब उदास है और कब वह मुस्कुरा या हंस रहा है। चेहरे के हाव-भाव और उसकी हंफ-हंफी से, उसकी पूंछ हिलाने के तरीके से हंसी का साफ पता लग जाता है, बल्कि वैज्ञानिक तो यह भी कहते हैं कि कई बार हल्की हंफ-हंफी और घुरघुराहट ही नहीं, जोर से हांफने पर भी कुत्ता हंस रहा होता है। अगर कुत्ते का मूड़ खराब है और उसे दूसरे कुत्तों की हंफ-हंफी हंसी सुनाई दे जाए, तो उसका मूड ठीक हो जाता है। एक प्रयोग में लाउडस्पीकर से हंफ-हंफी और हांफने की हंसी सुनकर बुरी तरह भौंकते, बौखलाए पंद्रह कुत्तों का झुंड मुस्कुराकर शांत हो गया। कुत्ते अपनी मौज में हंसते हैं, लेकिन कभी-कभी उनका प्रतीक लेकर कवि हम मनुष्यों के दर्द को भी शब्द दे देते हैं। वरिष्ठ कवि नरेश सक्सेना अपनी कविता 'हंसी' में कहते हैं—

भयानक होती है रात



MAGZINE KING

हंसती तो बुद्धिमान डॉल्फिनें भी हैं, लेकिन उनका चेहरा देखकर आप उनकी हंसी को भांप नहीं सकते। मगर यह सच है कि उनमें हंसोड़पन होता है। सबसे आश्चर्य की बात तो यह कि चूहे भी हंसते हैं।

जब कुत्ते रोते हैं
लेकिन, उससे भी भयानक होती है रात
जब कुत्ते हंसते हैं
सुनो क्या तुम्हें सुनाई देती है
किसी के हंसने की आवाज।

हंसती तो बुद्धिमान डॉल्फिनें भी हैं, लेकिन उनका चेहरा देखकर आप उनकी हंसी को नहीं भांप सकते। मगर यह सच है कि उनमें हंसोड़पन होता है। वे मनुष्यों और मछलियों के साथ तैरते-तैरते ऐसे करतब और शरारत करती रहती हैं कि लगता है वे खुश हैं और अपने ही तरीके से हंस-हंसा रही हैं।

सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि चूहे भी हंसते हैं! इनकी हंसी पर बहुत प्रयोग किए गए हैं। वाल्ट डिज्नी ने चूहे की अजीबोगरीब हरकतें देखकर मिकी माउस का किरदार गढ़ दिया जो आज सारी दुनिया के लोगों को हंसा रहा है। उन दिनों चूहों पर इतने प्रयोग नहीं किए गए थे, इसलिए वाल्ट डिज्नी ही चूहे की हरकतों पर अकेले हंसे होंगे। अगर वे आज होते, तो वैज्ञानिकों की बात सुनकर उन्हें जरूर लगता कि हो न हो, जिस चूहे को देखकर वे कई दिनों तक हंसते रहे, वह उन्हें चकमा दे-देकर उन पर भी हंसता रहा होगा!

अब इस बात पर मत हंसिएगा कि हंसी का पता लगाने के लिए दुनिया में कई वैज्ञानिक, कई वर्षों से चूहों की गर्दन और पेट में गुदगुदी कर रहे हैं। इस तरह गुदगुदी करने पर चूहे मुंह से 50 किलोहर्ट्ज तक की चुह-चुह की अल्ट्रासोनिक आवाज निकालते हैं, भले ही हम उसे नहीं सुन सकते। खुश होकर मस्ती में एक-दूसरे का पीछा करते समय भी वे ऐसी ही तेज चुह-चुह करते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है, खुशी की यह चुह-चुह ही चूहों की हंसी है। प्रयोग में वे इस हंसी-खुशी के लिए गुदगुदी करनेवाले वैज्ञानिकों की उंगलियां इस अंदाज से पकड़ने लगे, मानो कह रहे हों और कीजिए ना गुदगुदी। वे तो उस बटन को भी खिसकाने की कोशिश करने लगे जिससे 50 किलोहर्ट्ज की चुह-चुह की आवाज आ रही थी।

वैज्ञानिक केवल चूहों के पेट में गुदगुदी ही नहीं मचा रहे, बल्कि इस बहाने आदमी के खुश रहने की 'पिल' भी खोज रहे हैं। वे चूहों को एक अवसादरोधी दवा दे रहे हैं कि देखें क्या इससे भी चूहों की हंसी-खुशी बढ़ती है। अगर नतीजे अच्छे आए, तो कल दिलो-दिमाग को खुश रखनेवाली इस दवा का प्रयोग मनुष्यों पर भी किया जा सकता है। वैज्ञानिकों की नजर घोड़ों, गधों, ऊंटों, उल्लुओं और पेंग्विन पक्षियों पर भी है। उन्हें लगता है कि ये जीव भी हंसते-हंसाते हैं, हालांकि रात के सन्नाटे में लकड़बग्घे की मनुष्यों-जैसी हंसी की आवाज कतई हंसी नहीं है। इसी तरह ऑस्ट्रेलिया में पाई जानेवाली किंगफिशर बिरादरी की सबसे बड़ी चिड़ियां कूकाबुर्रा भी सुबह-शाम हम मनुष्यों की तरह हंसी की आवाज में चहकती हैं, मगर वे हंसती नहीं, बल्कि अपनी ही पक्षी-जुबान में चहचहाती हैं।

हम दोपायों से तो रघुवीर सहाय कह गए हैं–
हंसो पर चुटकलों से बचो
उनमें शब्द हैं
कहीं उनमें अर्थ न हों जो किसी ने
सौ साल पहले दिए हों।

– ('हंसो हंसो जल्दी हंसो' से)

(लेखक प्रसिद्ध विज्ञान लेखक हैं)

हंसी आपके स्वभाव में होती है और वह आपके भीतर की मस्ती से निकलती है। बतौर अभिनेता मैं इतने हास्य चरित्र इसलिए भी कर सका, क्योंकि मस्ती मेरे स्वभाव का हिस्सा थी और जिन लोगों के साथ काम किया उनके भी

बन जाए आदत का हिस्सा

मस्ती मेरे स्वभाव का हिस्सा है, बचपन से ही। जब पुणे फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट से अभिनय में प्रशिक्षण लिया तो मिजाज की मस्ती ने मुझसे बड़े क्रिएटिव काम करवाए। मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे ऐसे फिल्मकारों के साथ काम करने का मौका मिला, वे सभी मिजाज से मस्त फिल्मकार थे। यह हो सकता है कि उनके अंतर्मन की व्यथा की बहुत थाह मैं नहीं पा सका, पर इतना जरूर कहूंगा कि वे जितने गहरे संवेदनशील फिल्मकार थे, उतने ही मस्ती से भरे इनसान, इसीलिए उन्होंने जो फिल्में बनाईं उनमें कमाल किया। उनकी फिल्मों में हमारे किरदारों ने भी कमाल किया। अपने मस्तीभरे व्यक्तित्व की बदौलत उन्होंने हमारे अंदर की मस्ती भी निकाल ली और उस मस्ती को पर्दे पर ऐसे ढंग से प्रस्तुत किया कि हमारे किरदार भी अमर हो गए।



असरानी

सबसे पहले नाम लूंगा हृषिकेश मुखर्जी का। हृषिदा के साथ फिल्म 'नमक हराम' और 'बावर्ची' में काम किया। दोनों ही फिल्मों में मेरे किरदार को देखिए कितने मस्त किरदार हैं ये। हृषिदा के साथ काम करते वक्त किसी प्रकार के तनाव की कोई गुंजाइश नहीं होती थी। वे सीन समझा देते थे और उसके बाद एक्टर को एकदम फ्री हैंड



>> फिल्म 'अभिमान' में अमिताभ बच्चन के साथ असरानी

MAGAZINE KING

चुटकुला नहीं है यह

- यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड के मनोवैज्ञानिक रॉबर्ट प्रोविन कहते हैं कि हम दोस्तों से बातें करते वक्त सबसे ज्यादा हंसते हैं। किसी बातचीत में हम चुटकुलों पर नहीं हंसते हैं, हम उनकी बातों पर हंसते हैं। हमारा हंसना कोई प्रतिक्रिया देना नहीं होता है, बल्कि यह तो एक तरह का संवाद है।
- प्रयोग से पता चला कि दिमाग हमसे पूछे बगैर किसी की नकली हंसी की पड़ताल करने लग जाता है।
- आदमी के दिमाग की जांच से यह भी पता चलता है कि हंसी फैलती है। यहां तक कि जब कोई किसी बेवजह की बात पर भी हंसता है, तो इसमें उसका दिमाग भी सक्रिय हो जाता है। और जब कोई किसी और की बात पर हंसता है, तो उनकी हंसी के सच्चे या झूठे होने की खबर मिलती है। और जब जवाबी हंसी छूतवाली हंसी से कुछ ज्यादा हो तो हंसी के पीछे वजह को समझना आसान होता है।
- कोई ये कहे कि मैं गाजर सूंघकर बता सकता हूं तो ये कह रहा व्यक्ति अगर आपकी नजर में मजाकिया है तो आप को ज्यादा हंसी आएगी। उस हंसी के केंद्र में आपकी उम्मीदें और हंसा रहे शख्स से आपका परिचय होता है।
- इंटरनेट पर आपको इस तरह के कई दावे दिख जाएंगे जो हंसी को आपकी सेहत के लिए फायदेमंद बताए गए हैं, लेकिन अफसोस कि ये सच नहीं हैं, पर दौड़ने की तुलना में हंसने से कहीं ज्यादा कैलोरी खर्च होती है। हंसना हमारी धड़कनों की रफ्तार 10 से 40 फीसदी तक बढ़ा देता है और इससे ऊर्जा की खपत भी तेजी से होती है, लेकिन नमकीन कुरकुरे के एक पैकेट से मिली ऊर्जा को खर्च करने के लिए आपको तीन घंटे तक ठहाके लगाने होंगे।
- मनोवैज्ञानिक प्रोफेसर बॉब लेवेंसन ने कुछ जोड़ों को किसी संवेदनशील मसले पर ऐसी बातें करने के लिए कहा जो उनके साथी का मूड खराब कर दें, लेकिन जिन जोड़ों ने अपनी बात हंसते हुए कही, वे ज्यादा खुश दिखे। इससे पता चलता है कि हंसी वो भावना है जिसका इस्तेमाल हम अपने करीबी लोगों को खुश रखने के लिए करते हैं।
- आपने देखा होगा कि लोग अक्सर अपनी बात खत्म करने के लिए हंसी का सहारा लेते हैं। इशारों में बात कर रहे लोग भी इसका सहारा लेते है। ये जानते हुए भी कि वे अगर चाहें, तो पूरी बातचीत में खामोशी के साथ मुस्कुराते हुए रह सकते हैं।
- क्या आप जब बिस्तर पर हों तो साथी पर हंस सकते हैं? एक अध्ययन में यह पाया गया था कि औरत और मर्द के बीच होनेवाली तमाम बातों में हंसी-मजाक सबसे ज्यादा बार दोहराया जाता है। एक और शोध है कि हम अजनबियों को भी इसी आधार पर आंकते हैं कि वे हमारे किसी चुटकुले पर किस तरह से हंसते हैं।
- किसी कॉमेडियन ने ऐसा कोई चुटकुला नहीं खोजा जिस पर सारी दुनिया में हंसा जाता है। हमने अपने लैब में कुछ लोगों को वो वीडियो क्लिप्स दिखाए, जिनमें वे ऐसी किसी बात पर हंसी रोकने की कोशिश कर रहे थे, जहां हंसी आना लाजिम था कि वो हंस पड़े।





>> फिल्म 'बावर्ची' के दो दृश्य

MAGAZINE KING

> ऐसा नहीं कि मैंने गंभीर किरदार नहीं किए। मैं सोचता हूं कि मैं गंभीर किरदार भी इसलिए कर सका, क्योंकि मैं स्वभाव से मस्त था। मस्ती भी दिल के दुख-दर्दों से निकलती है।

देते थे कि वह फलां सीन को इस तरह कर ले। उनकी फिल्म, एडिटिंग टेबल पर बनती थी। मुझे ताज्जुब होता था कि 'नमक हराम' में भांग पीके काका के साथ वाला सीन कितना खूबसूरत बन गया।

'बावर्ची' में मेरा किरदार देखिए। वह म्यूजिक डायरेक्टर बनने का ख्वाब देख रहा है। काका के साथ मेरे आमने-सामने के सीन थे। जब मैं काका, यानी बावर्ची के रघु से कहता हूं कि कोई सैड मूड का गाना बनाओ या यार तुम तो बिल्कुल हसरत जयपुरी की तरह बोलते हो। इस सीन को मैं बहुत एंज्वाय करता हूं। ऐसा नहीं है कि मैंने गंभीर किरदार नहीं किए। मैं सोचता हूं कि मैं गंभीर किरदार भी इसलिए कर सका, क्योंकि मैं स्वभाव से मस्त था। मस्ती भी दिल के दुख-दर्दों से निकलती है। अमिताभ बच्चन के साथ हृषि दा की फिल्म 'अभिमान' में भी काम करने का मौका मिला। इसमें मैं अमिताभ का सेक्रेट्री बना हूं। मेरे किरदार का नाम है चंद्रू। चंद्रू हंसाता भी है और संजीदा भी है, यानी दोनों तरह का रंग था मेरे किरदार में। कहीं मस्ती, तो कहीं संजीदा। मैं सोचता हूं कि मेरी भाव-भंगिमा किरदारों को करते वक्त कुछ इतनी नेचुरल होती थी कि दर्शक मस्त हो जाता था। आज भी मुझे कोई फैन मिलता है, तो फौरन 'बावर्ची' का जिक्र छेड़ देता है, या 'शोले' फिल्म के किरदार का जिक्र करता है। जिसमें मेरी एक खास अंदाज की मूंछें और मेरा यह डायलॉग–'हम अंग्रेजों के जमाने के जेलर हैं'–बहुत पॉपुलर हुआ था।

मेरा मानना है कि मस्ती अंदर से आती है। जीवन को देखने का आपका नजरिया क्या है हंसी इस बात पर भी निर्भर करती है। जीवन के प्रति सकारात्मक नजरिया है, तो आपके जीवन में, स्वभाव में मस्ती बनी रहेगी।

(लेखक मशहूर फिल्म कलाकार हैं)

किसी राग में नहीं बांध सकते

हंसी और त्रासदी का खेल भी गजब है। जैसी दुनिया हमने बना दी है, वहां हंसना ही जैसे दुश्वार हो गया है। गरीब आदमी के चेहरे से हंसी गायब है और अमीर को हंसने के लिए 'लाफिंग क्लब' जाना पड़ रहा है, लेकिन जब तक मन न हंसे, तो ऐसे हंसने का भी क्या मतलब



MAGAZINE KING



उर्मिल कुमार थपलियाल

मामूली रूप से पढ़े-लिखों को भी याद होगा कि जमाने को देखते हुए कवि रघुवीर सहाय ने हमें पहले भी चेतावनी दी थी कि—हंसो, हंसो, जल्दी हंसो। लगता था जैसे मुहूर्त्त निकाला जा रहा हो, या गाड़ी छूटी जा रही हो, या अंतिम समय आ गया हो। हंसो निपटो फारिग हो। कुछ लोग तो बेवजह हंसते हैं जैसे और कोई काम ही न हो। कुछ लोग डरते हैं कि हंसने से दामन पर कोई दाग तो नहीं लग जाएगा। लाफिंग क्लबों में फेफड़े तो हंसते हैं, मन नहीं हंस पाता। कुछ लोगों की हंसी विलाप-जैसी होती है। राजनीति के करम ही ऐसे होते हैं कि सरकार जनता की लाख गुदगुदी करे जनता हंस नहीं पाती। चुटकुले पर हंसनेवाली पीढ़ी तो चली गई। वैसे जो उम्मीदों से अधमरा हो, क्या रोएगा! क्या हंसेगा!

जिंदा आदमी ही हंस सकता है। मुर्दा हंसने लगे, तो भूत लगे। सूखे संपादकीय पर कौन हंस सकता है? हास्यास्पद होना ही हंसने का मूल उद्देश्य होता है। ज्यादा बदतमीजी करनेवाले को तो पुलिस में भर्ती ही होना होता है। सरकारी वायदे तो चुटकुलों की तरह होते हैं जिन्हें सुनकर अब हंसी नहीं आती। शुरू-शुरू में आती थी। हसीनाओं के लिए मंद-मंद मुस्कुराना तो सेफ रहता है। कहा है न कि—'हंसी तो फंसी'। जानवर शायद मन-ही-मन मुस्कुराते होंगे। हमने तो आज तक किसी कुत्ते तक को हंसते नहीं देखा। उनका तो रोना अपशकुन माना जाता है। बहुत ज्यादा संभ्रांत, पढ़े-लिखे, सामंती समाज के लोग ज्यादा नहीं हंसते, क्योंकि उनकी इमेज बिगड़ जाती है। ज्यादा-से-ज्यादा एक इंच, आधा इंच, वरना लोग क्या कहेंगे? ऑफिस के कर्मचारियों को तो इंतजार करना होता है कि कोई बॉस हंसे, तो हम हंसें। ज्यादा हंसनेवाला बुद्धिजीवी नहीं कहलाता। गरीब-गुरबे लोग पेट पकड़कर हंस लेते हैं। वे फूहड़ हैं, इसलिए हंसने के लिए 'लाफिंग क्लब' जॉइन नहीं करते। ज्यादा हंसनेवाली लड़कियां बदनाम हो जाती हैं।

विद्वान मसखरों ने कहा कि हमें हंसने के नेपथ्य में आनंद की वृत्ति होती है। रावण के अट्टहास में दिखावा है, अहंकार है। रामजी की मृदुल हंसी देखनी हो, तो कैलेंडर में देखो। लक्ष्मण-जैसे क्रोधी आदमी को हंसाने के चक्कर में शूर्पणखा को क्या मिला? अपनी

नाक गंवानी पड़ी। गंभीर हंसी हंसने के लिए संसद में बैठे सांसदों को सोते हुए देखना जरूरी है। अब तो लोगों को हंसने के लिए मौके ढूंढ़ने पड़ते हैं। हंसता वही है जिसकी तकदीर में लिखा है। रोना तो आदमी की आदत में शुमार है। राजनीति में कुटिल हंसी को मान्यता मिलती है। जो आदमी हंसने के लिए विवश हो जाए समझो वही नॉर्मल आदमी है। वोट डालने के बाद किस मतदाता को अपने किए पर हंसी नहीं आती। हंसने के लिए कारण नहीं ढूंढ़े जाते। बेवक्त हंसने के कारण द्रौपदी को क्या-क्या नहीं भोगना पड़ा।

क्रोध जल्दी आता है। हंसने के लिए इंतजार करना पड़ता है। हंसना सिर्फ हंसना नहीं है। वह तो प्राइवेट तौर पर एक व्यक्तिगत या सामाजिक घटना है। परिस्थितिवश भोगनी पड़ती है। हंसी भी लाइलाज होती है। आंसू तो इतने निठल्ले होते हैं कि हंसने से भी आ जाते हैं। खुशी के आंसू और घड़ियाली आंसुओं में फर्क होता है। चाक चौबंद रहने से हंसी नहीं आती। दूसरे की गलतियों पर हंसना ही शुद्ध हंसी है। आपकी गलतियों पर लोग हंसेंगे, हिसाब-किताब बराबर।

प्रख्यात साहित्यकार प्रोफेसर नगेंद्र ने अपने शोध-ग्रंथ में–हिंदी में हास्य की कमी का रोना रोया था। वह विलाप अब तक जारी है। हिंदी समाज आज भी गंभीरता का चाटुकार है। जाहिर में साहित्य में हास्य होने के लिए जरूरी है कि आपके जीवन में भी हास्य हो। हंसना तो लोककला है। इसे गंभीर शास्त्रीय राग में नहीं बांधा जा सकता। ज्यादा हंसने पर अगर कोई आपकी आलोचना करे, तो बुरा न मानें। आलोचकों की प्रतिमाएं कहीं नहीं लगतीं। बुद्ध दांत दिखाकर नहीं हंसते, सिर्फ उनके मुस्कुराने से लोग एक-दूसरे को गरियाते भले हों, महायुद्ध नहीं करते। हंसी तो वैसे भी संक्रामक होती है। कौन कहता है कि मास्क पहनकर हंसा नहीं जा सकता। हां दांत नहीं दिखते।

> अप्रैल में अगर आप नहीं हंसे तो आपका हंसना व्यर्थ चला जाता है। मूर्ख से मूर्ख लोग एक-दूसरे पर हंसकर अपना धर्म निभाते हैं। अप्रैल तो वैसे भी मूर्खता के नवीनीकरण का महीना होता है।

अप्रैल में अगर आप नहीं हंसे, तो आपका अप्रैल व्यर्थ चला जाता है। मूर्ख से मूर्ख लोग एक-दूसरे पर हंसकर अपना धर्म निभाते हैं। अप्रैल तो वैसे भी मूर्खता के नवीनीकरण का महीना होता है। वैसे मूर्खता की कोई एक्सपायरी डेट नहीं होती। मगर फर्ज तो निभाना पड़ता है। यह भी सही है कि मूर्ख जनता यदि कोई धारावाहिक उपन्यास है, तो गतांक से आगे भी मूर्खता ही रहती है। अंधेर नगरी में कौन चौपट राजा लगातार नहीं हंसता। हंसी यदि प्राकृतिक आपदा है, तो वह मौलिक भी होगी, इसीलिए स्वाभाविक भी होती है। सरल हंसी तो मुग्ध होने के अवसर देती है। पहले सरकारी बजट हमेशा अप्रैल में रुलाता था। इस बार फरवरी में निपटा गया। यों भी बजट कभी हंसने या मुस्कुराने की इजाजत नहीं देता। केवल बजट पेश करते समय वित्त मंत्री मुस्कुराते रहते हैं। उनकी मुस्कान में तो यही है कि जो हंसा वो फंसा। भोले-भाले इलाकों में तो जब तक तोंद न हिले बुक्काफाड़ हंसी नहीं मानी जाती।

अप्रैल की हंसी सालभर चलती है। कभी-कभी यह दंश भी दे जाती है। एक पुरानी कहानी है कि एक आदमी बहुत उदास-हताश रहता था। डॉक्टर, वैद्य, हकीम सब बेकार। एक दिन वह एक मनोचिकित्सक के यहां गया। वह बोला– 'रोज चिड़ियाघर जाओ। बंदरों की उछल-कूद देखो।' आदमी बोला–'गया था, कोई फायदा नहीं। डॉक्टर बोला–'अच्छा, शहर में लगा सर्कस देखने जाओ। वहां का जोकर इतना हंसाता है कि लोग अपना पेट पकड़कर हंसते हैं। तुम्हें मजा आएगा। आराम मिलेगा। आदमी बोला– 'साहब मैं वही जोकर हूं।'

(लेखक प्रसिद्ध व्यंग्यकार हैं)

MAGAZINE KING





हंसी का अपना दर्शन है। वह बाहर से नहीं भीतर से आती है। आज के तकनीकी दौर में जब लोगों के बीच आपसी संवाद कम हो गया है, तब हंसी भी सहज नहीं रही। अब हंसने के लिए भी हमें प्रयास करना पड़ रहा है। हम नकली हंसी हंसने लगे हैं

एक उठती हुई हिलोर

MAGAZINE KING

मुझे आज भी याद है आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीजी की ठहाकोंवाली हंसी। तब मैं छात्रा थी। उनके पास जाती थी। वे बात करते और एक ठहाका, बात आगे बढ़ती, दूसरा ठहाका...सारे घर में उनके ठहाके गूंजते थे। वातावरण सरल-सुगम हो जाता था। छात्रा और आचार्यजी के भीतर का भेद मिट जाता था। दूसरी, सविता सिन्हा, दिल्ली विश्वविद्यालय की अध्यक्ष थीं। उनके पास जाती तो वही बिंदास खिलखिलाहट से स्वागत करतीं। उनकी हंसी सारी स्थिति को सुगम कर जाती थी। ज्योति (प्रभाकर श्रोत्रियजी की पत्नी) की खिलखिलाहट, यही हमारी पहली भेंट थी। फोन किया, 'आ जाओ...।' ठहाका गूंजा था। घर गई...बिना किसी औपचारिकता के उनकी रसोई में बैठकर उनकी हंसी के ठहाकों के बीच चाय-नाश्ता किया, पर इन गिने-चुने नामों के अतिरिक्त और मुझे कोई नाम नहीं सूझता जो इस तरह मुक्त होकर हंसा करता हो! हंसी मात्र होंठों का पसरना और गले से आवाज का बाहर आना नहीं है। हंसी हमारे मन-मस्तिष्क दोनों से एक साथ उठती हिलोर है जो आसपास के सारे वातावरण को–सकारात्मक भाव से ओत-प्रोत कर जाती



कमल कुमार

है। ये मुक्त हंसी जो व्यक्ति को स्वयं को ही नहीं आसपास को भी नकारात्मक बोध से मुक्त करती है, पर आज के बदलते समय में इस तकनीकी मृग-मरीचिका के समय में हंसी के फव्वारे सूख से गए हैं! हंसी के अर्थ और महत्त्व की पहचान खोने-सी लगी है। जिसका परिणाम है कि आसपास अब अजीब-सी मनहूसियत है। आपसी संवाद तो होता है, पर वह बिंदास हंसी गायब है, फिर एक हवा चली–योगासनों के साथ हंसी के ठहाकों के महत्त्व को पहचाना गया। पार्क में, खुली जगहों में, योगासन के साथ हाथ ऊपर करके हंसी के ठहाके लगाना भी योगासनों का अभिन्न अंग बन गया। आखिर क्यों...? हंसी जहां शरीर में ऑक्सीजन का संचार करती है। फेफड़ों और भीतरी अंगों को रोगमुक्त करती है। मन और मस्तिष्क भी इस हंसी से तनावमुक्त होता है। मुक्त हंसी का दर्शन बहुत प्राचीन है। एक कहानी पढ़ी थी–

एक राजा था जिसके राज्य में संगीत, नृत्य, कलाओं पर पाबंदी थी। कोई उत्सव नहीं मनाया जाता था। यहां तक कि हंसना भी मना था। चारों तरफ एक झुटपुटा-सा, मनहूसियत-सी घिरी थी, पर सब लोग विवश थे। राजा की आज्ञा का उल्लंघन करना आसान नहीं था। सब निरीह भाव से भुगत रहे थे। एक संन्यासी एक दिन उधर से निकला, उसके कंधे पर उसका वाद्य था। वह मस्ती में झूमता-गाता और हंसता हुआ चला आ रहा था, जब उसने राज्य में प्रवेश किया, तो राजा के कर्मचारियों ने उसे देखा, उसे पकड़ लिया। वह हंसा था। उसने पूछा, ''भैया मेरा क्या कसूर। साधु हूं, मौज में हूं, जा रहा हूं। मुझे क्यों पकड़ा?'' ''नहीं,'' ''तुम्हारी पेशी होगी राजा के दरबार में। तुमने राजा के दिए नियमों का उल्लंघन किया है।'' ''मैंने?'' वह फिर हंसा था। ''मैंने तो ऐसा कुछ नहीं किया।'' ''नहीं तुम्हें चलना होगा।'' साधु को राजा के सामने प्रस्तुत किया गया। उसने अपने को निर्दोष बताया, पर राजा ने कहा, ''नहीं। तुमने नियम तोड़े हैं...वाद्य बजाया और गाया है और हंसे हो।'' ''तो? इसमें क्या बुराई है?'' ''हम मातम में हैं। मेरी रानी वर्षों से बीमार पड़ी है। उसकी बीमारी ही किसी को पता नहीं चल रही। जब तक वह ठीक नहीं हो जाती, तब तक मातम रहेगा।'' ''क्या मैं उसे देख सकता हूं।'' राजा ने उसे इजाजत दी। साधु ने रानी की नब्ज देखी...माथे पर हाथ रखा। और हंसा। 'शी-ऽ-', राजा ने उसे टोका। साधु फिर हंसा; और उसने कहा, ''महाराज, रानी तो बिल्कुल ठीक है। उन्हें कोई बीमारी है ही नहीं।'' ''ऐसा कैसे हो सकता है? वर्षों से ऐसे लेटी है–अर्धनिद्रा में,'' ''पर ये तो बिल्कुल ठीक है!'' ''क्या कहते हो साधु?'' ''जी महाराज। अगर आप आज्ञा दें, तो अभी देख सकते हैं कि वह स्वस्थ है, पर मुझे जो मैं करता हूं करने की आज्ञा दें।''

राजा ने सोचा, फिर मान गया और उसे अनुमति दी। साधु ने अपने वाद्य-यंत्र के तारों को छेड़ा और सुरीले स्वर में गाना गया और मुक्त हंसी की हिलोर में झूमने लगा...उसके संगीत और गायन तथा हंसी से बादलों में छिपा सूरज निकल आया। पेड़ों पर दबे-रुके पक्षियों की चहचहाहट शुरू हो गई। चारों तरफ फूल खिल गए...उन पर भंवरे और तितलियां मंडराने लगीं। मोर नाचने लगे। तालाब के कमल खिल उठे। सारस और जल पक्षी किलोल करने लगे। साधु की हंसी गूंजने लगी...तभी सबने चमत्कार देखा, वर्षों से निढाल रानी उठ बैठी। साधु ने उसको नमन किया। आप पूर्णतः स्वस्थ हैं। राजा हैरान और कुछ परेशान। ''यह कैसे हुआ?'' साधु ने नमन किया, ''महाराज!

प्रकृति का यही स्वभाव है। देखो, प्रकृति कैसे खिलखिला रही है! मनुष्य मन का भी यही स्वभाव है। हंसी ईश्वरीय अहसास है। मुक्त और मस्त होगा, तो स्वस्थ भी होगा।'' राजा को अपनी भूल का भान हुआ और उस दिन के बाद सब सामान्य हो गया।

हंसी का एक लैंगिक पक्ष भी है। आम तौर पर लड़कियों का जोर से हंसना-खिलखिलाकर-हंसना समाज में अच्छा नहीं समझा जाता। 'हंसी तो फंसी' एक सस्ती-सी इस मानसिकता के कारण लड़कियों पर यह कानून आरोपित किया जाता है। बचपन से ही उन्हें सिखाया जाता है कि धीरे बोलो, धीरे हंसो, आवाज बाहर न निकले! अच्छी लड़कियां मुंह फाड़कर, दांत निकालकर नहीं हंसती। लड़कियों की सौम्यता के लिए जरूरी है कि वह दबंग हंसी की बजाय 'दबी हंसी' सीखें! असल में यह सब हमारी संकीर्ण मानसिकता का ही परिणाम है। 'हंसना' खुलकर, खिलखिलाकर हंसना हमारे तन-मन और मस्तिष्क को ऊर्जस्वित करता है। शारीरिक दृष्टि से खिलखिलाकर हंसने से फेफड़ों की आंतड़ियों का व्यायाम होता है, जिससे इससे संबंधित रोगों से मुक्ति मिलती है। साथ ही मन और मस्तिष्क की सारी कोशिकाएं भी इससे क्रियान्वित होती हैं, क्योंकि इससे ऑक्सीजन का प्रवाह होता है। जिससे बुद्धि तीक्ष्ण होती है। मन शांत और स्थिर होता है। मानसिक संतुलन बढ़ता है। यह एक तरह की थैरेपी है। जिसको आज पहचाना भी गया है, इसलिए आज यह हास्य योग, योगाभ्यास के दौरान कराया जाता है, ताकि वह हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाए।

आखिर में एक बात और भी कि हंसी में हम अपने भीतर के उल्लास को व्यक्त करते हैं। यह इसका सकारात्मक पक्ष है। कई बार, आज के इस विषाक्त समय में हंसी हम दूसरों को नीचा दिखाने के लिए, उनकी किसी 'कमी' पर हंसते हैं अथवा उन पर व्यंग्य करने के लिए भी हंसते हैं। यह एक नकारात्मक भाव है। जिसको बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए।

(लेखिका प्रसिद्ध साहित्यकार हैं)

> हंसी का एक लैंगिक पक्ष भी है। आमतौर पर लड़कियों का जोर से हंसना–खिलखिलाना समाज में अच्छा नहीं माना जाता। यह सब हमारी संकीर्ण मानसिकता का परिणाम है।



MAGAZINE KING



कहीं टैक्स न लग जाए

हंसी पर फिलहाल कोई टैक्स नहीं है। कभी हवा-पानी भी फ्री थे, पर अब अरबों-खरबों का व्यापार है। हंसी पर टैक्स लग गया तो सोचिए क्या हाल होगा? इसलिए अभी थोड़ा हंस लीजिए

MAGAZINE KING



अनूप शुक्ल

हमारे एक दोस्त हैं। हरदम हंसते हैं। हर बात पर हंसते हैं। कुछ उनको जिंदादिल समझते हैं। बाकी कहते हैं–'बेवकूफ है।' कुछ उसकी हंसी से जलते हैं। कुछ कहते हैं–'मेंटल है।'

एक दिन हमने दोस्त की हंसी का राज पूछा, ''यार तुम कैसे हंस लेते हो?'' सुनकर दोस्त हंसने लगा। उसको हंसते देख हम भी हंस दिए। हम दोनों को हंसते देख साथ के लोग भी हंसने लगे। हंसी बहुत संक्रामक होती है। एक से दस तक, दस से हजार-लाख तक इतनी तेज फैलती है कि अफवाह भी क्या पहुंचेगी! हंसी-हंसी में हमारा सवाल कहीं उड़ गया।

कुछ दिन बाद हम फिर साथ थे। कोई बहस कर रहे थे। शायद बजट पर कोई बात हो रही थी। बजट होता ही बहस के लिए है। इससे अधिक आम आदमी बजट का क्या बिगाड़ सकता है? किसी ने बजट पर कुछ राय व्यक्त की। दोस्त हंस दिया। राय देनेवाला चिढ़ गया। कहने लगा, ''इसमें हंसने की क्या बात?'' दोस्त फिर से हंस दिया। रायचंद बमक गए।

ज्ञानीजी के विदा होने के बाद दोस्त से पूछा, ''तुमने उनको खामखां नाराज कर दिया। उनकी बात पर क्यों हंसे? वे गलत तो नहीं थे।''

दोस्त मेरी बात पर भी हंसा। हमने बुरा नहीं माना। बुरा मानने का हक भी नहीं था। आज की दुनिया में बुरा मानने का हक केवल उसको है जिसके पास ताकत है। सामर्थ्य है। जिसके कल्ले में बूता है, वही बुरा मान सकता है आजकल। कमजोर की कोई जान भी ले ले, कत्लेआम भी हो जाए, पूरा कुनबा, आबादी भूखों मर जाए, लेकिन मजाल कि वह बुरा मान जाए।

बहरहाल हमने दोस्त की हंसी बर्दाश्त की, फिर पूछा, ''तुम्हारी इस हरदम हंसी का राज क्या है? तुम इस कदर कैसे हंसते रहते हो? हर बात पर हंसते रहते हो। कैसे हंस लेते हो? हमें तो डर लगता है कि कहीं पकड़कर अंदर न कर दिए जाओ। ऐसा हुआ तो हमारी हिम्मत तुम्हारी जमानत लेने की भी न होगी।''

हमारे सवाल में चिंता के तड़के ने दोस्त को भावुक कर दिया। वह हंसते हुए बोला। हंसना मेरी आदत है, इसीलिए हंसता रहता हूं। तुम भी हंसा करो। हंसी अभी



टैक्स फ्री है, मोबाइल के सिम की तरह। जब तक हंसी पर टैक्स नहीं, तब तक हंस लो। पता नहीं कब हंसी पर टैक्स लग जाए, फिर हमारे लिए हंसना भी मुहाल हो जाए। पता लगा सारी तनख्वाह हंसी पर टैक्स देते ही गुजर गई। खाने के लिए कुछ बचा ही नहीं। हंसी पर टैक्स की बात सुनकर हमें भी खूब हंसी आई। हमारा दोस्त बोला, ''अभी तुमको मेरी बात मजाक लग रही है। जब हंसी पर टैक्स लगेगा, तब अफसोस करोगे कि पहले हंस लेते, तो टैक्स बचता।''

हम हंसी पर टैक्स लगने के बाद के दिनों की कल्पनाओं में हंसते हुए गोते लगाने लगे। जब कभी बजट में हंसी पर टैक्स लगेगा, तब टैक्स के पक्ष और विपक्षवालों की कुछ प्रतिक्रियाएं शायद इस तरह हों–

पक्ष : हमने देखा है हंसने का काम अमीर लोग, पैसेवाले ही करते हैं। बड़े-बड़े पैसेवाले, कॉरपोरेट, धनबली जनता की हालत पर बहुत हंसते हैं। हम उनकी इसी हंसी पर टैक्स वसूल कर जनता की भलाई के काम करेंगे, इसीलिए हमने हंसी पर टैक्स लगाने की सोची है। हंसी पर टैक्स से होनेवाली आमदनी से गरीबों के लिए कल्याणकारी योजनाओं के लिए आमदनी होगी।

विपक्ष : लेकिन हंसी तो इनसान का प्राकृतिक गुण है। आप किसी इनसान की हंसी पर टैक्स कैसे लगा सकते हैं? गरीब इनसान भी अगर हंसना चाहे, तो आप उस पर भी टैक्स लगाओगे? अजीब तर्क है।

पक्ष : आप किस जमाने की बात कर रहे हैं जनाब। हवा, पानी भी कभी प्राकृतिक हुआ करते थे। आज पानी का अरबों-खरबों का कारोबार है। हवा का भी कारोबार बढ़ रहा है। हंसी भी अब कहां प्राकृतिक रही! दुनियाभर में नकली हंसी का चलन बढ़ रहा है, इसलिए इस मामले में जितना जल्दी हम कानून बना लें, उतना अच्छा। इस टैक्स से इतना भला होगा गरीबों का कि वे हमेशा गरीब रहना ही पसंद करेंगे। अमीर लोग इतना हलकान हो जाएंगे हंसी पर टैक्स से कि वे खुद गरीबी की रेखा के नीचे आने के एप्लिकेशन भरेंगे। सारे अमीर लोग अगले बजट तक गरीब हो जाएंगे। पूरे देश में सिर्फ गरीब-ही-गरीब होंगे। हम दावे से कह सकेंगे–'हमारी सरकार गरीबों की सरकार है।' रही गरीब इनसान के हंसने की बात, तो उनके लिए उनकी हैसियत के हिसाब से उनकी हंसी पर टैक्स की छूट दी जाएगी।

विपक्ष : जब सारे लोग गरीब हो जाएंगे, तो चुनाव के लिए चंदा कौन देगा? सरकारें कैसे बनेंगी? देश कैसे चलेगा?

पक्ष : चुनाव के चंदे के लिए सरकार व्यवस्था रखेगी। जैसे लोकतंत्र में सब लोग बराबर होते हैं, लेकिन कुछ लोग ज्यादा बराबर होते हैं, वैसे ही जब सब लोग गरीब हो जाएंगे, तो कुछ लोग इस सुविधा का लाभ उठाकर ज्यादा गरीब हो जाएंगे। हम कुछ गरीब लोगों को चिह्नित करके उनसे चंदा लेकर चुनाव लड़ेंगे। सरकार बनाएंगे। देश चलाएंगे। आप भी ऐसे ही करिएगा। आप जीत जाएंगे, तो आप चलाइएगा सरकार और देश।

विपक्ष : लेकिन ऐसा करना क्या कॉरपोरेट और धन्नासेठों के साथ विश्वासघात करना नहीं होगा जिनके चंदे से चुनाव लड़कर आपने सरकार बनाई? आप ऐसा करेंगे, तो फिर हम लोगों को चुनाव लड़ने के लिए चंदा कौन देगा? आप अपने साथ-साथ हमारी लुटिया भी डुबाओगे।

पक्ष : अरे हम जो भी करेंगे अपने चंदा देनेवालों





से पूछकर ही करेंगे। उनकी सहमति और अनुमति के बिना हम कोई कानून नहीं बनाते।

एक बार हंसी पर टैक्स की चर्चा शुरू हुई, फिर तो न जाने कितनी पतंगें उड़ने लगीं, प्रतिक्रियाओं के आसमान में! परंतु तभी हंसी के टैक्स पर छूट न मिलने से हम दुखी हो गए। सब मिलकर कल्पना करने लगे कि हंसी पर टैक्स लगने के बाद के सीन क्या हो सकते हैं?

बच्चे के पैदा होते ही उसकी हंसी का रजिस्ट्रेशन करवाना होगा। स्कूल जाने तक उसकी हंसी टैक्स फ्री होगी। स्कूल में ट्यूशन फीस के साथ उसकी हंसने की फीस भी जुड़ेगी। हरेक के मुंह में हंसी का काउंटर लगा होगा। दिन में कुछ बार हंसना टैक्स फ्री होगा। उसके बाद हंसने पर टैक्स का मीटर चालू होगा। चुनाव में लोग बिजली, पानी मुफ्त देने की घोषणा की तर्ज पर हंसी पर टैक्स में छूट की घोषणा करेंगे–'हमारी सरकार आने पर हम महीने में सौ बार मुफ्त हंसने की सुविधा देंगे।'

सरकारी कर्मचारियों के हंसने के लिए अलग नियमावलियां होंगी। पद के अनुसार हंसने का कोटा निर्धारित होगा। ठहाके का अधिकार केवल वरिष्ठ

बच्चे के पैदा होते ही उसकी हंसी का रजिस्ट्रेशन करवाना होगा। स्कूल जाने तक उसकी हंसी टैक्स फ्री होगी। स्कूल में ट्यूशन फीस के साथ उसकी हंसने की फीस भी जुड़ेगी।

अधिकारियों के पास सुरक्षित होगा। दफ्तर में हंसने के लिए पहले से प्रस्ताव पास कराना होगा। बिना अनुमति हंसने पर सजा का प्रावधान होगा। कारण बताओ नोटिस जारी होगा। सेवापंजिका में प्रतिकूल प्रविष्टि होगी। लगातार हंसते रहनेवाले को जबरियन रिटायर कर दिया जाएगा। कामकाज में हंसी बर्दाश्त नहीं होगी।

अलग-अलग तरह की हंसी पर अलग-अलग टैक्स होंगे। हंसने पर अलग, खिलखिलाने पर अलग। कंटीली, नखरीली, सजीली हंसी का टैक्स स्लैब एक होगा। बच्चों और बुजुर्गों को हंसी में टैक्स पर छूट होगी। पोपले मुंहवाले लोगों की हंसी पर छूट होगी। 'स्वच्छता अभियान' को बढ़ावा देने के लिए साफ दांतवाले लोगों को टैक्स पर डिस्काउंट मिलेगा। ठहाके पर सबसे ज्यादा टैक्स होगा। टैक्स केवल हंसी पर लगेगा। मुस्कान टैक्स फ्री होगी।

पोपले मुंह पर टैक्स में छूट पाने के लिए तमाम नौजवान लोग अपने दांत तुड़वा लेंगे। मुस्कान टैक्स फ्री होने की सुविधा का लाभ उठाने के लिए लोग अपनी हर हंसी को मुस्कान बताएंगे। बाजार में हंसी और मुस्कान के विशेषज्ञ बढ़ जाएंगे। अदालतों में कुछ लोग अपने क्लाइंट की हंसी को मुस्कान बताकर अरबों का टैक्स बचाएंगे। सरकार को चूना लगाएंगे।

हंसी पर टैक्स लगने पर टैक्स चोरी भी होगी। लोग टैक्स बचाने के लिए सबके सामने भले न हंसें, लेकिन जहां मौका मिला, अकेले में हंस लेंगे। टैक्स बचा लेंगे। ऐसी टैक्स चोरी को बचाने के लिए जगह-जगह सीसीटीवी लगाए जाएंगे। लोगों के पास घरों तक में सीसीटीवी लगाने के प्रस्ताव आएंगे। लोग निजता के अधिकार के हनन की बात कहते हुए अदालत जाएंगे। टैक्स लगानेवालों की दलील होगी–''हम निजता देखें कि टैक्स कलेक्शन। इनके भले के लिए ही तो यह इस्कीम चलाई गई है। इसमें इनका ही भला है। हंसने पर कोई रोक नहीं, लेकिन टैक्स तो देना पड़ेगा हंसी पर।''

अदालत मुस्कुराते हुए टैक्स लगानेवालों की समझ पर तरस खाएगी। घरों में सीसीटीवी को निजता का हनन बताएगी। टैक्स लगानेवाले अदालत को मुस्कुराता हुआ देखकर डबल मुस्कुराएंगे। घरों में सीसीटीवी के प्रस्ताव को वापस लेकर हंसी पर टैक्स का दायरा मुस्कान तक बढ़ाएंगे। जितना नुकसान हुआ उससे दुगुना कमाएंगे।

दोस्त के साथ बात करते हुए हंसी पर टैक्स लगने के बाद की न जाने कितनी कल्पनाएं हंसते हुए कर डालीं। हमको हंसता देखकर दोस्त ने कहा, ''न जाने कब यह सच साबित हो जाए। हंसी पर टैक्स लग जाए, इसीलिए मैं हंसता रहता हूं। तुम भी हंस लो।''

दोस्त की खामख्याली पर मुझे बड़ी जोर की हंसी आई। हमको हंसता देख दोस्त भी हंसने लगा। हमारे साथ खड़े लोग हमको बेमतलब हंसते देख, हंसने लगे। आपको भी हमारी बात पर हंसी आ रही होगी। हंस लीजिए। अभी हंसने पर कोई खतरा नहीं है। अभी हंसी 'टैक्स फ्री' है।

(लेखक प्रसिद्ध व्यंग्यकार हैं)

MAGAZINE KING



जिंदगी को हंसमुख बनाइए

MAGAZINE KING

हमारी परंपरा में हास्य को भी नवरस में गिना गया है। बतौर कलाकार प्रसन्नता और हंसी मेरी सहेली है, जो मुझे आत्मसंतुष्टि देती है तो साथ ही शारीरिक रूप से भी चुस्त-दुरुस्त रखती है। यह आपको कुंठित होने से भी बचाती है, इसलिए हर किसी के लिए जरूरी है कि जिंदगी हंसमुख रहे

प्रसन्नता की सहेली हंसी है। प्रसन्नता एक खूबसूरत फूल है, जो जिंदगी की बगिया को खिलाए रखता है। हमें लगता है कि हमारे चेहरे की मुस्कान एक कली की तरह है, जो होंठों पर सिर्फ हल्की-सी तैर जाती है, जबकि हंसी एक पूरा फूल है और हमारे मोती सरीखे दांत इसकी पंखुड़ी हैं। हंसने पर ये दांत फूल की पंखुड़ी की तरह बिखरकर, अपनी सुंदर छटा बिखेर देते हैं। वाकई, खूबसूरत चेहरे के साथ हंसी की कल्पना करना ही, मन में गुदगुदी पैदा कर देता है।



नलिनी-कमलिनी

सच कहें तो हमारी हंसी का आसान-सा कारण है—आत्म-संतुष्टि का भाव। आत्म-संतुष्टि के कारण हम अंदर से खुश रहते हैं। हमारी आंतरिक खुशी हमारे आचार-व्यवहार से भी झलकती है। जैसे बैंक में लेन-देन के मामले में आज का निपटारा आज होता है। वैसे ही जिंदगी में आप खुशी देते हैं, तो खुशी मिलती है। आपको किसी से कुढ़न या ईर्ष्या नहीं होती है। हम दूसरों से उम्मीद और अपेक्षा रखते हैं। वह पूरी नहीं होती, तो हम या तो कुंठित होते हैं या कुढ़ते हैं, इसलिए अगर सामनेवाले से अपेक्षा नहीं होती है, तो हमारी निराशा की जमापूंजी बढ़ेगी नहीं। ऐसी हालत में खुशी अपने अंदर से उपजती है। हमें उसे बाहर ढूंढ़ना नहीं पड़ता है।

एक पुरानी कहावत है कि—'दुख बांटने से कम होता है, और खुशी बांटने से बढ़ती है।' हमने इसे ही अपनी जिंदगी का मंत्र बना लिया। हम जब दूसरे को खुशी देते हैं, तब दूसरों से दुगुनी खुशी हमें मिलती है। हम दोनों एक साथ रहते हैं। हर

पल साथ रहते हुए, हम अपने आप के साथ होते हैं। हम कला में रचे-बसे हैं। हम हर पल सकारात्मक सोच के साथ जीते हैं। ऐसे में हम रियाज कर रहे होते हैं या कार्यक्रम के लिए तैयार हो रहे होते हैं, तो हमारा एक ध्येय होता है कि खुद को भी खुश रखना और दर्शकों को भी खुशी देना। हमारा ध्येय है आनंद और खुशी की पराकाष्ठा को प्राप्त करना। इस तरह मुस्कुराहट और हंसी हमारे होंठों पर खुद ही सज जाती है। हमें गुरु जितेंद्र महाराज की बातें याद आती हैं कि या तो दीवाना हंसे या जिसे उसने तौफीक दी हो।

हमारी कलाओं में नव रस की अभिव्यक्ति की बात कही गई है। इन नौ रसों में एक है—हास्य रस, यानी हंसी। हंसी आपको प्रसन्न रखती है। जिंदगी के उतार-चढ़ाव, सुख-दुख, प्रतिकूल-अनुकूल होने के बावजूद भी आप हंसी के सहारे जीते रहते हैं। हम जिंदगी के सकारात्मक पक्ष को देखते हैं, जो सकारात्मक होते हैं, गम होगा ही नहीं। मैं तो अपने दोस्तों को यही सलाह देती हूं कि हंसते रहो, मुस्कुराते रहो और खिलखिलाते रहो।

हमें अपनी नन्हीं, किशोर और युवा शिष्याओं के बीच रहना पसंद है। बच्चों और युवाओं के बीच रहने से हम भी नई सोच से अवगत होते हैं। उनकी बातें अनोखी और दिलचस्प होती हैं। हम उनसे हमउम्र की तरह बात करते हैं। हम दोनों को उदास या जबरदस्ती गंभीर रहना अच्छा नहीं लगता है। अपने काम से संतुष्ट, सदाचारी संगत, खुशनुमा माहौल में रहना बहुत जरूरी है। इतना ही नहीं, अगर आप खुश रहते हैं, तो आपकी अच्छी ग्रंथियों का स्राव बढ़ जाता है। इससे आप स्वस्थ और जवां रहते हैं। हंसना एक तरह से कपालभाति प्रक्रिया है। हंसने से हमारे पेट का व्यायाम हो जाता है।

हमें लगता है कि हमें हमेशा हंसने की प्रेरणा मां से मिली है। हमारी मां नब्बे साल की हैं। वे हमेशा हंसती-मुस्कुराती नजर आती हैं। मां कहती हैं कि हंसकर कोई बड़ी चुभनेवाली बात भी कह देने से सामनेवाला बुरा नहीं मानता है। हमारे विदूषक, व्यंग्यकार, हास्य कवि और आजकल स्टैंडिंग कॉमेडियन यही तो कर रहे हैं। मजाक-मजाक में वे हमारा ही मजाक उड़ाकर, हमें हंसाते हैं। हमें याद आता है कि पहले शादी-विवाह के समय छंद-छप्पैया का रिवाज था। इसमें वर-वधू पक्ष वाले एक-दूसरे से परिचित भी होते थे और गंभीर माहौल को हल्का-फुल्का बना देते थे। और तो और एक रिवाज 'गाली' गाने का है। इसमें लेन-देन या कोई ऊंच-नीच बात हो गई, तो भी गीतों के जरिये संवाद कर लेते थे। 'रामचरितमानस' में तुलसीदास शिव और गौरी के विवाह के प्रसंग में कुछ इस तरह लिखते हैं कि—'नारी वृंद सुर जेवंत जानी। लगीं देन गारीं मृदु बानी॥' इसके बाद, राम और सीता के विवाह के समय जब दशरथ और अयोध्या के लोग भोजन कर रहे हैं, उस समय भी गारी गाए जाने के बारे में तुलसीदास जिक्र करते हैं।

> हमें लगता है कि हमें हंसने की प्रेरणा मां से मिली है। वे हमेशा हंसती-मुस्कुराती नजर आती हैं। मां कहती हैं कि हंसकर कोई बड़ी चुभनेवाली बात भी कह दे तो सामनेवाला बुरा नहीं मानता।

दरअसल, हमारी भारतीय संस्कृति में हंसी-ठिठोली की संस्कृति रही है। त्योहार भी तो हंसी-खुशी के फुहारों की परिणति होते हैं। हम होली-जैसे त्योहार पर हंसकर, कह देते हैं—'बुरा ना मानो होली है।' हम जब दूसरे देशों में जाते हैं, तो अगर हम कहीं पार्किंग में खड़े हैं या हम किसी से कुछ पूछना चाहते हैं। ऐसे में कोई अनजान भी हमें देखकर, मुस्कुरा देता है और बदले में हम भी मुस्कुरा देते हैं।

हम यहां एक और बात कहना चाहते हैं कि हमें हंसते समय कब, कहां और कैसे हंसना है। इसका जरूर ध्यान रखना चाहिए। जैसे अगर हम फिसलकर गिर जाते हैं। ऐसे में हम खुद पर हंसते हैं, तो बुरा नहीं लगता, लेकिन यदि सामनेवाला देखकर हंसता है, तो बुरा जरूर लगता है। एक और बात कि द्रौपदी की एक हंसी ही महाभारत के युद्ध का कारण बनी थी, इसलिए हमें हंसने के समय भी अपनी मर्यादा का ध्यान जरूर रखना चाहिए। समय, स्थिति और परिस्थिति के अनुकूल ही हंसी भी सुहाती है।

दरअसल, हंसना एक अच्छी कसरत है। हंसने से पूरे तन-मन का तनाव हटता है। हमारा सौंदर्य बढ़ता है। हमेशा हंसनेवाले के पास दुख कभी आसपास फटकने की हिम्मत नहीं करता है। हमें लगता है कि हमने मुस्कुराने और हंसने को अपनी आदत बना लिया है, इसके कारण हमें जिंदगी में कभी भी कठिनाई महसूस नहीं होती। चाहे हम बहुत कठिन परिस्थिति से ही क्यों न गुजर रहे हों? हम बाकी जिंदगी के समय को भी हंसते-हंसते गुजारना चाहते हैं।

(लेखिकाद्वय मशहूर कथक नृत्यांगना हैं)





MAGAZINE KING

...क्योंकि हंसी अब एक 'उत्पाद' है

हंसी का अब अपना बाजार भी है, जो लगातार फैलता जा रहा है। एक दौर था जब फिल्मों में एकाध कॉमेडियन होता था, अब यह मामला फिल्मों और धारावाहिकों से बहुत आगे निकल चुका है। स्टैंडअप कॉमेडियन की अपनी दुनिया है और लगातार फैल रही है। हंसी अब उत्पाद है

MAGAZINE KING



पीयूष पांडे

कपिल शर्मा, कुणाल कामरा, तन्मय भट्ट, बिस्वा कल्याण रथ, कनन गिल, सुनील ग्रोवर, वरुण ग्रोवर, अभिषेक उपमन्यु, अदिति मित्तल, वीर दास, सुमिखि सुरेश, डेनियल फर्नांडीस, अबीश मैथ्यू, भारती सिंह, अपूर्व गुप्ता, अतुल खत्री, भुवन बाम, अजय नागर, जाकिर खान, केनी सबास्टियन, अमित टंडन, राहुल सुब्रमण्यम, करुणेश तलवार, जीवशू अहलूवालिया, विपुल गोयल, सौरभ पंत, नीति पाल्टा, रोहन जोशी, पापा सीजे, निवेदिता प्रकासम, उरूज अश्फाक, मनीष पॉल, कृष्णा अभिषेक, कीकू शारदा, शैलेश लोढ़ा, अभिजीत गांगुली। ये उन चंद नामों में शुमार कुछ लोग हैं, जिन्होंने बीते एक दशक में हंसने का बड़ा बाजार तैयार कर दिया है। ऐसा बाजार, जिसमें हंसाने के हुनर में माहिर कलाकार का भाव कुछ भी हो सकता है, और जिनके लिए स्टैंडअप कॉमेडी से लेकर टेलीविजन रिएलिटी शो, टीवी सीरियल, यूट्यूब चैनल, वेब सिरीज और फिल्मों तक का दरवाजा खुला हुआ है।

एक जमाना था, जब लोगों को हंसाने के नाम पर कुछ कॉमेडी फिल्में या कवि-सम्मेलन थे। अस्सी के दशक के आखिर में दूरदर्शन पर सामाजिक-राजनीतिक विसंगतियों पर पैना व्यंग्य करता जसपाल भट्टी का चुटीला 'उल्टा पुल्टा' और फिर 'फ्लॉप शो' कार्यक्रम प्रसारित होना शुरू हुआ। इसके बाद 'श्रीमान-श्रीमतीजी', 'देख भाई देख', टाइप कुछ हास्य धारावाहिकों ने अपनी पैठ बनाई, लेकिन हंसने-हंसाने की दुनिया सही मायने में बदली 2007 में स्टार वन पर शुरू हुए 'द ग्रेट इंडियन लाफ्टर चैलेंज' नामक कार्यक्रम से। टेलीविजन के जरिये बड़े जनमानस का वास्ता पहली बार उस स्टैंडअप कॉमेडी से पड़ा, जो कवि-सम्मेलन से अलग थी। इस कॉमेडी में हर दूसरी लाइन में पंच आता था। पहले सीजन में राजू श्रीवास्तव, नवीन प्रभाकर, एहसान कुरैशी और भगवंत मान-जैसे दिग्गज हास्य कलाकारों ने अपने फन का लोहा मनवाया।

लाफ्टर चैलेंज से ही कपिल शर्मा-जैसे सितारे का उदय हुआ, लेकिन मसला कपिल के स्टार बनने का नहीं है। दरअसल, कपिल शर्मा की करियर यात्रा एक लिहाज से भारत में कॉमेडी के बाजार के विस्तार लेने की यात्रा है। इस दौरान, टेलीविजन के जरिये कुछ लोग सितारे बने, तो कुछ सितारे ऑफलाइन स्टैंडअप कॉमेडी करते हुए। कुछ ने रेडियो पर हास्य गढ़ा, तो कुछ इंटरनेट और यूट्यूब के आसरे अपनी दुकान को चमकाने में जुट गए, लेकिन इन सभी ने मिलकर कॉमेडी को एक ऐसे प्रॉडक्ट में तब्दील कर दिया, जिसके बिना इंटरटेनमेंट की कोई 'सेल' पूरी नहीं होती।

टेलीविजन के जरिये बड़े जनमानस का वास्ता पहली बार उस स्टैंडअप कॉमेडी से पड़ा, जो कवि-सम्मेलन से अलग थी। इस कॉमेडी में हर दूसरी लाइन में पंच आता था।





MAGAZINE KING

अवॉर्ड शो से लेकर हाई प्रोफाइल शादी-ब्याह-जैसे आयोजनों तक में हास्य कलाकारों की मौजूदगी अनिवार्य हो गई है।

सिलसिलेवार तरीके से कॉमेडी के इस बाजार को समझने की कोशिश करें, तो सबसे पहले टीवी के रिएलिटी शो हैं। इन शो में काम करनेवाले कलाकारों पर छप्पर फाड़कर पैसा बरस रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कपिल शर्मा अपने शो के एक एपिसोड के लिए 1 से 1.5 करोड़ रुपये तक फीस लेते हैं। इसी शो में काम करनेवाले कृष्णा अभिषेक करीब 10 से 15 लाख रुपये लेते हैं। अर्चना पूरन सिंह, जो जज की भूमिका में हैं, उन्हें भी बीस एपिसोड के लिए दो करोड़ रुपये दिए जाने की बात है, जबकि नवजोत सिंह सिद्धू को उनसे कहीं अधिक फीस मिलती थी। ऐसे शो पर प्रायोजक मेहरबान रहते हैं। उन्हें सिर्फ शो की टीआरपी चाहिए। कपिल के शो की विज्ञापन दर करीब 4 लाख रुपये प्रति दस सेकेंड की है। यही वजह है कि कपिल शर्मा के शो की प्रतिस्पर्धा में उनके ही पुराने साथी सुनील ग्रोवर दो बार अपना कॉमेडी शो लाए, जिसे धुआंधार प्रचार के साथ लांच किया गया, लेकिन टीआरपी नहीं मिली, तो चैनल ने वह शो बंद करने में भी देर नहीं लगाई। कॉमेडी के बाजार में तरह-तरह की कॉमेडी से रंग भरनेवाले स्टैंडअप कॉमेडियन का अपना एक अलग बाजार है। भारत में स्टैंडअप कॉमेडी बीते एक दशक में ही लोकप्रिय हुई है, जबकि अमेरिका-जैसे देशों में इसका चलन वर्षों से है। स्टैंडअप, यानी कलाकार मंच पर खड़े होकर अपने मन की बात कहता है। इस मन की बात में वह कभी खुद की खिल्ली उड़ाता है, कभी दूसरों की। स्टैंडअप कॉमेडियन की खूबी यह होती है कि वह जितनी तैयारी के साथ मंच पर अपना आइटम पेश करता है, उससे ज्यादा तैयारी अचानक ताजा हालात को देखते हुए छोटे चुटकुले गढ़ने की रखता है। आज की तारीख में नाम और मांग के हिसाब से स्टैंडअप कॉमेडियन 10 हजार रुपये से लेकर 20 लाख रुपये तक एक शो के ले रहे हैं। कॉलेज-विश्वविद्यालयों से लेकर बड़े-बड़े कॉरपोरेट इवेंट्स में स्टैंडअप कॉमेडियन को बुलावा भेजा जा रहा है। ऑफलाइन स्टैंडअप कॉमेडी का कुल बाजार 50 करोड़ से अधिक का है।

स्टैंडअप कॉमेडियन की व्यापक पहुंच में यूट्यूब का अपना योगदान है। हंसाने के उस्तादों के यूट्यूब चैनल को लाखों लोग सब्सक्राइब करते हैं। जाकिर खान के यूट्यूब चैनल के करीब 50 लाख सब्सक्राइबर्स हैं। कुणाल कामरा के करीब 16 लाख हैं। स्टैंडअप कॉमेडी जरिया है हुनर दिखाने



तुम न हंसो

तुम न हंसो, हंसने से जालिम धोखा और सबल होता है,
मैं हंसने की जड़ खोजूं तो वह हंसने का फल होता है,
हंसते हो जाने कैसा सा,
बिखर-बिखर पारा झरता है।
स्वयं हार जाता हूं, देखा,
मुंह से अंगारा झरता है।
तुम न हंसो, हंसने से जालिम धोखा और सबल होता है,
हंसने से मेरे शापित बंद हरे होते हैं,
ज्यों-ज्यों मैं खाली करता हूं,
त्यों-त्यों छंद भरे होते हैं।
हंसो नहीं मुंह कहीं तुम्हारा,
क्रूर चांदनी लूट न लेवे।
जिसे मिलन देने आए हो,
वह बिछड़न की छूट न लेवे।
हंसते हो वर्षा होती है;
हंसते शरद लौट आती है,
हंसते थर-थर शिशिर पनपता,
हंसने पर वसंत गाती है।
अब न हंसो ग्रीष्म दौड़ेगा,
सुनने, ओ वाणी कल्याणी,
युगों-युगों हंसती आई हो,
हरी-हरी होकर गीर्वाणी।
तुम हंसती हो मेरा गिरि पर चढ़ना ही निष्फल होता है।
तुम न हंसो, हंसने से जालिम धोखा और सबल होता है।

—माखनलाल चतुर्वेदी

का। जाकिर खान, वीर दास, सुदेश लहरी समेत कई स्टैंडअप कॉमेडियन हैं, जिनकी प्रतिभा का कैनवास अब लगातार विस्तृत हो रहा है। जाकिर खान स्टैंडअप कॉमेडी करते हुए 'चाचा विधायक हैं हमारे'-जैसे अमेजन प्राइम के वेब सीरीज में मुख्य भूमिका निभाते दिख चुके हैं। स्टैंडअप कॉमेडी शो के जज बन चुके हैं। इसी तरह, वीर दास 'देल्ही बेल्ही', तो सुदेश लहरी 'रेडी'-जैसी कई फिल्मों में अहम किरदार निभा चुके हैं।

बीते एक दशक में तीन बातें बहुत साफ हुईं। पहली, हास्य का बाजार बढ़ा, तो उसे कमतर माननेवाले हाशिये पर चले गए, यानी पहले जो लोग सिर्फ और सिर्फ व्यंग्य को ऊंचा दर्जा देते थे, और कॉमेडी करनेवाले को चुटकुलेबाज कहकर खारिज करते थे, उनका रुतबा घटा है। दूसरी, हास्य और व्यंग्य के बीच की लकीर धुंधली हुई। स्टैंडअप कॉमेडी करते हुए कई बार स्टैंडअप कॉमेडियन इतना महीन व्यंग्य करता है कि बड़े-बड़े व्यंग्यकार पीछे छूट जाते हैं। तीसरी, धीरे-धीरे स्थापित होते कलाकारों को बड़ा मंच देने का काम टेलीविजन ने किया, तो युवा कलाकारों की नैया को इंटरनेट ने पार लगाया। इंटरनेट पर 'लाफिंग कलर्स'-जैसी हास्य कंटेंट देनेवाली साइट संचालित करनेवाले राजेश शर्मा कहते हैं, ''आज की तारीख में गांव-कस्बे में बैठे किसी युवा के पास प्रतिभा है, तो वह अपना वीडियो बनाता है और यूट्यूब पर डाल देता है। उसे चिंता करने की जरूरत नहीं है कि कौन देखेगा कौन नहीं? काम में दम होगा, तो वो नोटिस होगा ही। अब हास्य का अपना अलग बाजार है, इसलिए मुझे लगता है कि आनेवाले दिनों में कॉमेडी की डिमांड बढ़ेगी। सच कहूं तो हमने स्टैंडअप कॉमेडियन को फिलर से पिलर बनते देखा है, और कॉमेडी के बढ़ते बाजार के बीच ही हमने नए युवा स्टैंडअप कॉमेडियन को प्रोत्साहित करने और हास्य कंटेंट देने के लिए लाफिंग कलर्स लॉंच की है।''

अब हर जगह हास्य की डिमांड है। न्यूज चैनलों पर अगर 'सो सॉरी' और 'ओ माई गॉड'- जैसी एनिमेशन हैं, तो रेडियो पर आरजे नावेद मिर्ची मुर्गा और आरजे रौनक बऊआ बनकर एक तरफ लोगों को बेवकूफ बनाते हैं, तो दूसरी तरफ उनका यही कारनामा श्रोताओं के लिए हंसी की डोज है। जाने-माने आरजे नीतिन पाहवा कहते हैं, ''अब रेडियो पर सिर्फ दो चीजें चलती हैं, या तो बहुत भावुकता से लबरेज कंटेंट या फिर हास्य। न्यूज अब सबके पास पहले से उपलब्ध है।''

इस बीच, कवि-सम्मेलन भी हास्य प्रधान हो गए हैं, लेकिन इससे उन कवियों की दिक्कत बढ़ गई है, जो अभी तक चुटकुले सुनाकर दर्शकों को हंसाते थे। अब उनका मुकाबला स्टैंडअप कॉमेडियन से है, जो लगातार नए चुटकुले गढ़ रहे हैं।

> इस बीच, कवि-सम्मेलन भी हास्य प्रधान हो गए हैं, लेकिन इससे उन कवियों की दिक्कत बढ़ गई है, जो अभी तक चुटकुले सुनाकर दर्शकों को हंसाते थे। अब उनका मुकाबला स्टैंडअप कॉमेडियन से है।

कॉमेडी कंटेंट के दर्शक तेजी से बढ़ रहे हैं। बाजार किस कदर फैल चुका है, यह इस बात से समझा जा सकता है कि राजनेता शशि थरूर अमेजन प्राइम के 'वन माइक स्टैंड' में स्टैंडअप करते देखे जाते हैं। इसी तरह, जिन हास्य कलाकारों के अपने यूट्यूब चैनल हैं, उनका इस्तेमाल बड़े-बड़े फिल्मी सितारे अपनी फिल्मों के प्रमोशन के लिए कर रहे हैं। इंद्रकुमार की 'सुपरनानी'-जैसी फिल्म में हास्य भूमिका निभा चुकी अभिनेत्री श्रेया नारायण कहती हैं, 'टीवी, फिल्म, स्टैंडअप या दूसरे शो हों, हास्य को अब गंभीरता से लिया जा रहा है। जिसके पास जितने दर्शक हैं, उसका उतना बड़ा बाजार है।''

निश्चित रूप से बाजार ही है, जिसने हंसने-हंसाने के खेल को प्रॉडक्ट में तब्दील कर दिया है। हास्य कंटेंट की जबर्दस्त डिमांड है। कॉमेडी सीरियल लिखनेवाला लेखक सास-बहू के सीरियल लिखनेवाले लेखक से ज्यादा पारिश्रमिक डिमांड कर रहा है, और उसे मिल रहा है। उधर, फेसबुक-ट्विटर पर वन-लाइनर्स गढ़नेवाले सोशल मीडिया स्टार हैं।

हास्य के बाजार में हर तुर्रम खां के सामने चुनौती सिर्फ एक है—जमे रहने की। प्रायोजक पैसा देने को तैयार हैं, लेकिन उस पर जिसकी कि डिमांड है। और डिमांड उसकी है, जो लगातार दर्शकों को नया कंटेंट देने में सक्षम है। दर्शकों की कसौटी पर खरा उतरना नामुमकिन भले न हो, मुश्किल बहुत है, क्योंकि हर हाथ में मोबाइल है और कंटेंट की खपत टीवी पर नहीं, इंटरनेट पर है, जहां कोई वीडियो पसंद नहीं आने पर उसे हटाने में एक सेकेंड भी नहीं लगता और विकल्प बहुत हैं।

(लेखक युवा पत्रकार हैं)

हंसो ताकि तुम्हारे साथ दुनिया हंसे

हंसी का गहरा संबंध हमारी भाषा से है और यह सौभाग्य सिर्फ मनुष्य को मिला है। भाषा जहां चूकती है वहां हमारी हंसी पूरक का काम करती है। यह हमें सामाजिक बनाती है। इसलिए हंसिए, लेकिन दूसरों पर नहीं, बल्कि ऐसे हंसिए, ताकि सारी दुनिया आपके साथ हंसे



डेविड लूडेन

वाचालता आसानी से मानवीय भाषा का स्थान नहीं ले सकती, बल्कि इसकी जगह हमारी भाषा और हमारा संवाद तंत्र भाषा के जन्म से पहले से संस्कारों से संचालित होता है। हम खुशी में हंसते हैं, दुख में रोते-चिल्लाते हैं, भय से कांपते हैं, गुस्से में चीखते हैं। और जब हम भावनाओं पर नियंत्रण पा लेते हैं, भाषा हमें हमारी बुनियादी जरूरतों और दैहिक अभिव्यक्ति के साथ अकेला छोड़ देती है। चिंपाजी हमारी नस्ल के सबसे नजदीक का प्राणी है और उसकी दैहिक अवस्थिति भी एकदम से हमारे-जैसी नहीं है, इसलिए उसकी दैहिक और भाषायी अभिव्यक्ति भी एकदम हमारे-जैसी नहीं होती। बहुत कुछ उसके पास है वह हमारे पास नहीं होता, लेकिन हंसी एक ऐसी चीज है उसमें और हममें एकसमान है। हंसी देर रात टीवी पर आनेवाले हास्य कार्यक्रमों और हास्य गोष्ठियों तक की ही चीज नहीं है, बल्कि यह हमारे सामाजिक संवाद का अविभाज्य हिस्सा है। हम अचानक से और अनायास किसी चीज पर ऐसे हंस पड़ते हैं कि बाद में सोचते हैं कि ये हमने क्या किया? सच ये है कि हमारे हंसने के कारण अक्सर गलत होते हैं। आमतौर पर जब हम हंसते हैं, तो इसलिए नहीं कि किसी ने कोई हास्यास्पद बात कह दी होती है, बल्कि होता यह है कि किसी ने कोई बात कही होती है और हम उसमें कुछ और कहना चाहते हैं। हम यह कहने के लिए हंसते हैं कि मैं तुम्हें पसंद करता हूं या दूसरे शब्दों में

MAGZINE KING



यह हमारी सामाजिक भावाभिव्यक्ति होती है, ठीक उसी तरह जैसे गाय सिर हिलाकर अभिव्यक्ति देती है। हंसी एक सायास क्रिया है, लेकिन यह चिंपाजियों और मनुष्यों में एक-जैसा ही अर्थ लिए होती है। हंसी के जरिये हम अपने संवाद को मायने देते हैं और जिससे संवाद कर रहे होते हैं उसे सहज बनाने का प्रयास करते हैं। इसी तरह चिंपाजी भी हंसी के जरिये सामाजिक संवाद करते हैं और जिसके साथ ऐसा कर रहे होते हैं उससे खेल रहे होते हैं। दूसरे शब्दों में चिंपाजी और मनुष्य दोनों ही हंसी के जरिये दोस्ती गांठते हैं। मनुष्यों में हंसी सहवास की प्रक्रिया का भी हिस्सा है। महिलाएं ज्यादा हंसती हैं और पुरुष उस हंसी को ज्यादा ग्रहण करते हैं। महिलाएं ऐसे पुरुषों के समक्ष ज्यादा हंसती हैं जिनके प्रति वे आकर्षित होती हैं। कोई स्त्री अगर किसी खास पुरुष के समक्ष ज्यादा हंसती है, तो इसका मतलब है कि वह उसमें खास रुचि ले रही है।

आश्चर्य नहीं कि डेटिंग के दौरान महिलाएं ऐसे पुरुषों को पसंद करती हैं जिनका हास्यबोध बेहतर होता है। जैसा कि हम जानते हैं कि मादा चिंपाजी की हंसी का उद्देश्य एकमात्र यौनिक संबंध होता है, हालांकि यह शोध का विषय है। हंसी और भाषा का बहुत गहरा रिश्ता है। दो लोग जब भाषायी संवाद कर रहे होते हैं तो एक ही समय दोनों एक ही स्तर पर नहीं होते, भले बातचीत का विषय एक ही हो। ऐसे में हंसी बातचीत को, शब्दों और मुहावरों को सही संदर्भ दे देती है। यहां तक कि सुननेवाला भी उस क्षण का इंतजार करता है कि बोलनेवाला वाक्य के अंत में हंसता है या नहीं। बहुत संभव है कि भाषा का विकास हंसी के जरिये हुआ हो, क्योंकि चिंपाजी और मनुष्य की हंसी का अंतर बताता है कि भाषा की जरूरत हमें क्यों पड़ी? जब चिंपाजी हंसता है, तो हर सांस पर 'हा' करता है। कभी उसे ऐसा करते हुए देखिए, तो आप इस बात को समझ पाएंगे।

उसके मुकाबले मनुष्यों का अपनी सांस पर नियंत्रण अधिक रहता है जो बोलने के लिए जरूरी है। परिणामस्वरूप जब हम हंसते हैं, तो हर सांस पर 'हा-हा-हा' करते हैं। यह संयोग है कि मनुष्य के बच्चे बिल्कुल चिंपाजी की तरह हंसते हैं। वे हर सांस पर 'हा' करते हैं। लेकिन उम्र के पहले साल तक उनका अपनी सांस पर नियंत्रण हो जाता है और फिर हर सांस पर 'हा' करके हंसनेवाली उनकी हंसी इनसानों की तरह एक ही सांस में 'हा-हा-हा' करनेवाली हो जाती है। यहां यह जानना भी जरूरी है कि चार साल का एक बच्चा दिन में औसतन तीन सौ बार हंसता है और एक चालीस साल का प्रौढ़ व्यक्ति दिनभर में औसतन दस-पंद्रह बार ही हंस पाता है। हंसी का संबंध हमारे स्वास्थ्य से भी है और इस बारे में तो पर्याप्त शोध हो चुके हैं। एक शोध के अनुसार–ऑर्थराइटिस का मरीज अगर दस मिनट तक हंस ले, तो दो घंटे तक उसे बड़े आराम की नींद आ जाती है। वह अपना दर्द भूल जाता है। यह सच है कि हंसी एक बहुत अच्छा दर्दनिवारक है। हंसी और भाषा के अंतर्संबंधों पर शोध की जरूरत है कि कैसे इसने भाषा और हमारे सामाजिक व्यवहार को प्रभावित किया है? यहां मैं अमेरिकी दार्शनिक और मनोविज्ञान के पितामह कहे जानेवाले विलियम जेम्स के एक प्रसिद्ध उद्धरण का जिक्र करना चाहूंगा। उन्होंने कहा है कि हम इसलिए नहीं हंसते, क्योंकि हम खुश हैं, बल्कि हम हंसते हैं, क्योंकि हम खुश होते हैं। हमारी हंसी हमारे सामाजिक होने से भी जुड़ी हुई है।

> यह संयोग है कि मनुष्य के बच्चे बिल्कुल चिंपाजी की तरह हंसते हैं। वे हर सांस पर 'हा' करते हैं लेकिन उम्र के पहले साल तक उनका अपनी सांस पर नियंत्रण हो जाता है और वे 'हा-हा-हा' करने लगते हैं।



जार्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी ने हाल में इस बारे में गंभीर शोध किया है कि कैसे हमारा हंसना हमें सामाजिक बनाता है। आमतौर पर घुन्ने किस्म के लोग बहुत कम सामाजिक होते हैं। दूसरों से उनका संवाद भी बहुत सीमित होता है। इस मामले में एक दिलचस्प बात है कि भारत के योगियों ने सदियों पहले हंसी पर बहुत काम किया है, बल्कि हास्य योग के रूप में एक योग पद्धति का आविष्कार किया। यह हास्य योग जबरदस्ती की हंसी नहीं है। यह एक तरह का सहज योग है जो हमारे स्वास्थ्य पर बहुत सकारात्मक असर डालता है। आपने अक्सर पार्क में लोगों को समूह में जबरदस्ती हंसते देखा होगा। उसके अपने कुछ लाभ हो सकते हैं, लेकिन वह सहज नहीं है। सहज हंसी दरअसल खुद पर हंसना है। ये तभी हो सकता है जब आप भीतर से संतुष्ट और खुश होते हैं। दूसरों पर हंसना दरअसल हंसना नहीं है। वह एक तरह की क्रूरता भी होती है। मैंने शुरू में ही कहा कि हंसने का गहरा संबंध हमारी भाषा और हमारे सामाजिक व्यवहार पर निर्भर है। जब आप हंसते हैं, तो आपका तंत्रिका तंत्र प्रफुल्लित हो जाता है और आप सहज हो जाते हैं। तो दूसरों पर मत हंसिए, आप हंसिए, ताकि दुनिया आपके साथ हंसे। यही मनोविज्ञान कहता है और दर्शन और योग भी।

(लेखक प्रसिद्ध मनोविज्ञानी हैं)

MAGAZINE KING



MAGAZINE KING

जीवन के लिए टॉनिक का काम करता है

हंसी दरअसल हमारे स्वभाव का हिस्सा होती है। इसके लिए कोई तय मापदंड नहीं हैं। बेशक यह आपके लिए टॉनिक का काम करती है। हास्य फिल्मों की तरफ जाने के पीछे मेरी खुशमिजाजी का ही ज्यादा हाथ रहा है



हेमंत पांडे

हास्य सिनेमा के लिए कितना महत्त्वपूर्ण है यह तो मैं नहीं समझ पाया, पर अपने अब तक के सिनेमाई सफर में मुझे लगता है कि जीवन में हास्य बेहद जरूरी है। हास्य किसी टॉनिक की तरह है। अगर आपका अंतर्मन खुश है, मन का मौसम अच्छा है, तो समझो हास्य आपके व्यक्तित्व की फितरत बन जाएगा। हास्य को समझने के लिए कोई किताब नहीं होती। ऐसा भी नहीं है कि आपके पास खूब पैसा हो तो आप खुशमिजाज होंगे ही, या आपके पास ढेर सारी सुख-सुविधाएं हों, तो आप हंसेंगे ही। कहने का मतलब यह है कि हास्य के लिए कोई तय पैरामीटर नहीं है। हास्य आपके स्वभाव का हिस्सा है। आपकी फितरत में यह शामिल होता है, लेकिन यह तभी होता है जब आप निश्छल होते हैं। आप चाहे अपने माता-पिता के साथ

रहें, या आपके घर में काम करनेवाला नौकर हो या ऐसा भी हो सकता है जिसे आप न जानते हों अगर इन सबके प्रति आपका समभाव है, तो हास्य आपकी फितरत का हिस्सा हो जाएगा, फिर आपको जीवन का वो आनंद मिलेगा जिसकी आप कभी कल्पना भी नहीं कर सकते। हास्य किताब में नहीं मिलता, पर अगर आपके जीवन की किताब सब के प्रति कृतज्ञता से भरी हो, तो आपके जीवन में आपके स्वभाव में हास्य का समावेश होगा।

इसके बाद होगा यह कि हास्य आपके डीएनए से आपकी अगली पीढ़ी में ट्रांसफर होता रहेगा। मैंने कभी यह सोचकर कोई फिल्म नहीं ली कि इसमें मुझे दर्शकों को हंसाना ही है। मेरी खुशमिजाजी मुझे फिल्मों में हास्य किरदारों की ओर ले गई और जिन फिल्मकारों के साथ मैंने काम किया उनको मेरे स्वभाव की यह खुशमिजाजी भा गई, उन्होंने अपनी फिल्मों में मेरी खुशमिजाजी के मुताबिक दर्शकों को खुश करनेवाले किरदार दिए।

आप राकेश रोशन की 'कृष' के बहादुर का किरदार देखिए या 'ऑफिस-ऑफिस' सीरियल के पांडेजी का किरदार देखिए सब हास्य से भरपूर हैं। ये बेहद खुशमिजाज किरदार हैं जो दर्शकों के अंतर्मन को गुदगुदाते हैं। अभी हाल में डेविड धवन की 'कुली नंबर-1' फिल्म की। उसका किरदार भी बेहद खुशमिजाज है। मेरे साथ वरुण धवन और राजपाल यादव ने काम किया है। अब राजपाल इतने खुशमिजाज हैं कि उन्हें दुनिया के तीन अरब से ज्यादा लोग जानते हैं। जो अमिताभ बच्चन या शाहरुख खान या अक्षय कुमार को पसंद करता है वह राजपाल को भी पसंद करता है, यह इसीलिए संभव हो पाया है कि राजपाल के मिजाज में मस्ती है। अब मस्ती का कोई फॉर्मूला नहीं है। मस्ती मिजाज में होती है। एक बात हमेशा याद रखें कि जो जितना खुशमिजाज है वह अंतर्मन में उतना ही गम भी छिपाए हुए है।

> मेरी खुशमिजाजी मुझे फिल्मों में हास्य किरदारों की ओर ले गई और जिन फिल्मकारों के साथ मैंने काम किया उनको मेरे स्वभाव की यह खुशमिजाजी भा गई।

ग्रेट शो-मैन राजकपूर हमेशा कहते थे कि हंसेगा वही जिसके कलेजे ने कोई गहरी चोट खाई हो, तभी 'आवारा' फिल्म का उनका किरदार देखिए जो टाइटल सांग गा रहा है–'आवारा हूं या गर्दिश में हूं आसमान का तारा हूं', के इस अंतरे को देखिए–'आबाद नहीं बरबाद नहीं गाता हूं खुशी के गीत मगर जख्मों से भरा सीना है मेरा हंसती है मगर ये मस्त नजर।' बात साफ हो गई, सीना जख्मों से भरा है, पर स्वभाव की मस्ती बरकरार है।

आप हिंदी फिल्मों के सारे पुराने कॉमेडी के स्टार देख लीजिए हास्य उनके स्वभाव की फितरत थी। वे चाहे जॉनीवाकर हों या जगदीप या असरानी साहब सब-के-सब स्वभाव की मस्ती से सराबोर थे, तभी वह दर्शकों के बीच भी वह हास्य बांट सके जो उनके जीवन के लिए अब भी टॉनिक का काम करता है। उन्हें दुख के क्षणों में भी हास्य की संजीवनी देता है।

(लेखक मशहूर फिल्म कलाकार हैं)

MAGAZINE KING



हंसी का चमत्कार

हंसी के चमत्कार इतने हैं कि आप आश्चर्य में पड़ जाएंगे। जिन कंपनियों का आधार हास्यबोध है, वहां कमाल की तरक्की देखी गई है। स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन से तो इसका संबंध है ही, आर्थिक सफलता में भी इसकी बड़ी भूमिका है



MAGAZINE KING

हंसी को हम अक्सर हल्के-फुल्के ढंग से लेते हैं, लेकिन इसका हमारे स्वास्थ्य, सामाजिक जीवन और साफ-सफाई से बहुत गहरा संबंध है। हंसी हमारे डीएनए में है और लगभग हर समाज और संस्कृति में यह सार्वभौम भाषा है। इसका संबंध हमारे हाव-भाव और दैहिक भाषा से गहरा है। हंसी हमें एकजुट करती है, नैतिक और प्रभावी बनाती है। इसका संबंध हमारी रचनात्मकता और सफलता से भी है। हर देशकाल में हंसी की भाषा 'हा-हा-हा-ही-ही-ही' ही है।



मारला तबाका

कामकाजी लोगों के लिए तनाव कोई नई चीज नहीं है और यह कोई छिपी हुई बात भी नहीं है कि हंसी हमें तनाव से उबारती है। मैंने पाया है कि दैनंदिन की समस्याओं से निपटने में हंसी की भूमिका चमत्कारिक होती है। एक बार जब चीजें साफ हो जाती हैं, तो हल खुद-ब-खुद निकल आता है। हंसी का यही शारीरिक और भावनात्मक लाभ है कि वह समस्याओं को हल करने में बहुत मददगार होती है। यह सामान्य अनुभव की बात है कि तनाव में अक्सर चीजें बिगड़ती हैं। जब आप सहज होकर हंसते हैं, तो रास्ते अपने आप बन जाते हैं।

“कामकाजी लोगों के लिए तनाव कोई नई चीज नहीं है और यह कोई छिपी बात भी नहीं है कि हंसी हमें तनाव से उबारती है। दैनंदिन समस्याओं से निपटने में हंसी की भूमिका चामत्कारिक होती है।”





MAGAZINE KING

> कुछ साल पहले तक सफल सीईओ की पहचान यह होती थी कि वह गंभीर रहता है और उससे मिलना आसान नहीं होता, लेकिन अब वक्त बदल गया है और नई पीढ़ी की अपेक्षाएं भी बदली हैं।

हंसी और नेतृत्व का भी बहुत गहरा संबंध है। अक्सर नेतृत्वकर्ता अपनी हंसी से अपनी टीम को सहज बना लेता है और लोगों का पसंदीदा बना रहता है। हंसी को वह एक हथियार की तरह इस्तेमाल करता है। उदाहरण के लिए साऊथवेस्ट एयरलाइन के संस्थापक और सीईओ हर्ब केल्हर को ही लें। उनकी कंपनी का आधार ही हंसी और हास्यबोध रहा है जिसके कारण उनकी कंपनी दशकों से रेकॉर्ड लाभ कमाती रही है, जो अधिकारी हास्यबोध से दूर रहते हैं और अपने और कर्मचारियों के बीच दूरी बनाकर चलते हैं वे अलग-थलग पड़ जाते हैं। कुछ साल पहले तक सफल सीईओ की पहचान यह होती थी कि वह गंभीर रहता है और उससे मिलना आसान नहीं होता, लेकिन अब वक्त बदल गया है और नई पीढ़ी की अपेक्षाएं भी बदली हैं, और इसमें भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भी बड़ी भूमिका है। ऐसे में कंपनी की कार्यशैली में सीईओ की भूमिका भी बहुत बदल गई है। इसमें अच्छे हास्यबोध की बड़ी भूमिका है। देखा यही गया है कि जिन कंपनियों के अधिकारी और कर्मचारियों के बीच दोस्ताना रिश्ते रहते हैं वहां कार्यसंस्कृति भी बेहतर होती है। कर्मचारी अपना सर्वोत्तम देने की कोशिश करते हैं।

यकीन मानिए, मुझे पता है एकल मालिकानावाले व्यापारी के लिए अकेलापन कितना आसान होता है। और जब यह अकेलापन लंबा खिंच जाता है, तो व्यापार बैठने लगता है। हम चाहे अंतर्मुखी हों या बहिर्मुखी, हैं तो सामाजिक प्राणी ही। सामाजिक मेलमिलाप और हंसी का अभाव अक्सर हमें अवसाद में डाल देता है और हमारी सफलता को पीछे धकेलता है।

हाल के शोध में यह बात सामने आई है कि जो लोग कम हंसते हैं या कभी नहीं हंसते उनमें उनके मुकाबले हृदयरोग की संभावना 21 प्रतिशत ज्यादा होती है जो रोज हंसते हैं। जो कभी-कभार ही हंसते हैं उनमें मस्तिष्काघात की संभावना साठ प्रतिशत ज्यादा होती है। यह आप अपने दफ्तर और सामाजिक जीवन में भी आसानी से देख सकते हैं।

लेकिन चिंता की कोई बात नहीं है। अच्छी हंसी के लिए आपको दूसरे के लिए हास्यास्पद होने या मसखरा बनने की कोई जरूरत नहीं है। 'साइकोलॉजी टुडे' के दस साल के शोध के बाद यह बात सामने आई कि हास्य धारावाहिकों के चुटकुलों का हंसी से सिर्फ दस से बीस प्रतिशत ही संबंध होता है। इसका मतलब यह है कि हंसी का संबंध आदमी के हाव-भाव, दैहिक भंगिमा और व्यवहार से होता है, न कि जुमलेबाजी से। अब सवाल यह है कि अपने दैनिक जीवन में आप हंसी कैसे लाएं? तो यह बहुत आसान है। दिन में जब कभी आप अकेले भी हों, तो चेहरे पर मुस्कान लाने की कोशिश कीजिए। अपना दिन खुशगवार बनाने का यह बहुत आसान तरीका है। जब कभी मैं मुस्कुराती हूं, तो खुद-ब-खुद सकारात्मक हो जाती हूं। दिनभर के कामकाज और तनाव से निपटने का यह बहुत आसान तरीका है। यह झूठा लग सकता है, लेकिन तभी तक जब तक कि हम ऐसा करने की कोशिश नहीं करते। ये भी एक भ्रम है कि नकली हंसी का हमारे शरीर पर कोई असर नहीं होता। सच तो यह है कि हमारा शरीर और दिमाग नकली हंसी और नकली मुस्कान में भेद नहीं करता। इसके शारीरिक और भावनात्मक प्रभाव एक-जैसे ही होते हैं, इसलिए प्रयास करके हंसने में भी कोई बुराई नहीं है। इसलिए हंसी न भी आ रही हो, तो भी हंसिए! आप खुद को पहले से बेहतर ही पाएंगे।

(लेखिका प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक हैं)

हंस मत पगली प्यार हो जाएगा

हंसी को लेकर हमारे यहां बहुत गलत धारणाएं भी हैं, खासकर महिलाओं की हंसी को लेकर। महिलाओं की सहज हंसी को लेकर भी पुरुष अक्सर गफलत का शिकार हो जाते हैं और कई विचित्र कहानियां बन जाती हैं, फिर भी हंसी हसीन तो है ही



असीमा भट्ट

MAGAZINE KING



हाय! उसके हंस के देखने का अंदाज...देखा कुछ इस तरह कि प्यार हो गया...यूं पलट के देखा कि मेरा दिल घायल हो गया...''

''यूं नजरें चुराकर मुस्कुराना कि बस...तेरा मुस्कुराना गजब ढा गया...।''

हंसी सचमुच एक खतरनाक चीज है जिससे न जाने क्या-क्या गलतफहमी हो जाती है! यह बात मशहूर है कि 'हंसी तो फंसी', लेकिन हर बार यह मुहावरा सही नहीं होता, इसके अलग-अलग मायने भी होते हैं। कई दफे तो उलटे परिणाम भी होते दिखाई दिए।

एक किस्सा है कि एक लड़की, एक लड़के को देखकर अक्सर मुस्कुराकर शरमा जाती थी। वह लड़का बहुत दिनों तक इसी मुगालते में रहा कि, हो न हो, वह लड़की उसे प्यार करती है। लगभग एक किस्सा यह है कि एक अन्य लड़की किसी लड़के को देखकर मुस्कुरा देती जिससे उस लड़के के मन में फुलझड़ियां फूटने लगतीं, लेकिन दोनों



ही केस में वह लड़की उन दोनों में से किसी भी लड़के को प्यार नहीं करती थी। एक लड़का वह था जिसके बड़े भाई से वह प्यार करती थी और उसके छोटे भाई को देखकर भावी देवर के रूप में शरमाकर हंस देती थी। वह लड़का उसके प्रेमी का खास दोस्त था, जो कि अक्सर एक-दूसरे के साथ ही रहते थे, तो यह जानकर कि वह उसके प्रेमी का सच्चा दोस्त है, तो लड़की हंस देती।

हंसी को लेकर कुछ गलतफहमियां ऐसी हैं कि पूरी-की-पूरी कहानी बदल गई। बड़ा मशहूर किस्सा है, दो साहित्यकारों का। जोकि दोनों बड़े गहरे दोस्त थे। उसमें एक दोस्त अपनी प्रेमिका के लिए खत अपने दोस्त के हाथों भेजा करते थे, जो कि बड़े ही विश्वसनीय थे। बाद में पता चला कि जो डाकिया बनकर खत पहुंचाया करते थे वह एक दिन उन्हीं की महबूबा को उड़ा ले गए और वो देखते रह गए।

प्रेम के निराले और भी कई प्रसंग हैं। प्रेमी तक जो पत्राचारवाहक सहेलियां या छोटी बहन होती थीं उनका काम भी था कबूतरी की तरह ही एक-दूसरे का संदेश एक-दूसरे तक पहुंचाने का। एक बार एक छोटी बहन अपनी बड़ी बहन की चिट्ठी उनके प्रेमी को किताब में लेकर देने जाती थी, यानी उनके घरवाले समझते थे कि किताब का आदान-प्रदान हो रहा है, लेकिन वहां दिल की अदला-बदली हो रही थी। उस छोटी लड़की का स्वार्थ यह था कि उसे उस काम के लिए आठ आने मिलते थे (नब्बे के दशक में आठ आना बहुत हुआ करता था)। आठ आना अपनी दीदी की तरफ से कि घर में नहीं बताना और आठ आना उनके प्रेमी की तरफ से कि किसी से कुछ न कहना। और वह लड़की जब भी उन्हें खत पहुंचाती वह हंसती रहती। एक दिन जो उसे बदले में जवाबी खत मिला, उसमें लिखा था–'मुझसे शादी करोगी?' वह लड़की फिर हंस पड़ी। उस बड़ी बहन के प्रेमी ने पूछा कि इसमें हंसने की क्या बात है, तो उसने कहा कि, 'अगर आपसे शादी करूंगी, तो मेरे रोज के आठ आने जो मिलते हैं, वो तो बंद हो जाएंगे। मैं तो इसलिए हंसती हूं कि आप दोनों को चिट्ठी पहुंचाने के दोनों तरफ से मुझे पैसे मिलते हैं। मेरी रोज की कमाई एक रुपये।' एक हंसी ने कितने दिल भी तोड़े। और कितने सितम भी ढाए।

> हंसी-हंसी में फूटे प्यार की कई कोंपलें हैं जिससे मुहब्बत परवान चढ़ी। एक हंसी ने कई दिल जोड़े, तो कई तोड़े भी। अब वह दौर खत्म हुआ कि लड़कियां प्यार में पहल नहीं करतीं।

'हंसी तो फंसी' की तर्ज पर शर्त लगानेवाले लड़कों को अब कई बार यह दांव उल्टा भी पड़ जाता है कि लड़कियां कभी-कभी लड़कों के उठने-बैठने, बोलने के अंदाज या उनके किसी अतरंगी कमीज या पैंट पर हंसती हैं या कई बार उनके हेयर स्टाइल या दाढ़ी-मूंछों पर हंसती हैं, लड़के यह समझते हैं कि वे पंसद कर रही हैं।

जब दोस्त कहते हैं कि–'लगी शर्त कि यह लड़की मुझे प्यार करती है, इसे तो एक दिन पटाकर दिखा दूंगा।' तो जिस लड़की के लिए शर्त लगी होती है उससे उसके दोस्तों के सामने ही जवाब में यह भी उन्हें सुनने को मिल जाता है कि–'पहले अपनी शक्ल आईने में देखकर आओ।' बाद में सारे दोस्त उनका मजाक बनाकर जोर-जोर से हंस पड़ते हैं। न सिर्फ उनका मजाक उड़ता है, बल्कि वे शर्त भी हार जाते हैं।

हंसी-हंसी में फूटे प्यार की कई कोंपलें हैं जिससे मोहब्बत परवान चढ़ी। एक हंसी ने कई दिल जोड़े और कई दिल तोड़े भी।...अब वह दौर भी खत्म हुआ कि लड़कियां प्यार में पहल नहीं करतीं। अब तो एक से एक बढ़कर लड़कों की बराबरी करनेवाली लड़कियां हैं, जो कई बार उनसे भी आगे हैं। जिस तरह लड़के फ्लर्ट किया करते थे अब माशाअल्लाह लड़कियां कर रही हैं और खूब कर रही हैं, बल्कि कई बार तो पतंगबाज की तरह वे खुद इश्क के पेंच को ढील देती हैं और पतंग फंसते ही उसकी डोर काट देती हैं।

हंसी से या हंसने से चाहे जितनी भी गलतफहमी हो, लेकिन हंसी है हसीन चीज। दांव सही पड़ गया तो प्यार; नहीं तो एक मीठा-सा दर्द, एक खुमार, एक कसक, एक अहसास जो बुढ़ापे में याद कर-करके लोगों को सुनाने और हंसाने का काम करती है।'

(लेखिका प्रसिद्ध रंगकर्मी हैं)

MAGAZINE Kings

हंसी-खुशी

हंसी का संबंध हमारी खुशी से है। कहते हैं कि जो जीवन में हमेशा खीझता रहता है उसकी आयु कम होती है, जबकि खुलकर हंसनेवाले लंबा जीते हैं। हमारी संस्कृति तो उल्लास की संस्कृति रही है। जिसके मूल में ही हास्य और आनंद है



MAGAZINE KHAZANA

हंसी भीतर के आनंद का बाहरी चिह्न है। जीवन की सबसे प्यारी और उत्तम से उत्तम वस्तु एक बार हंस लेना तथा शरीर को अच्छा रखने की अच्छी-से-अच्छी दवा एक बार खिलखिला उठना है। पुराने लोग कह गए हैं कि हंसो और पेट फुलाओ। हंसी कितने ही कला-कौशलों से भली है। जितना ही अधिक आनंद से हंसोगे, उतनी ही आयु बढ़ेगी। एक यूनानी विद्वान कहता है कि सदा अपने कर्मों को खीझनेवाला हेरीक्लेस बहुत कम जिया, पर प्रसन्न मन डेमाकीटस 109 वर्ष तक जिया। हंसी-खुशी ही का नाम जीवन है। जो रोते हैं, उनका जीवन व्यर्थ है। कवि कहता है– 'जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं।'...



बालमुकुंद गुप्त

कारलाइल एक राजकुमार था। संसार त्यागी हो गया था। वह कहता है कि जो जी से हंसता है, वह कभी बुरा नहीं होता। जी से हंसो, तुम्हें अच्छा लगेगा। अपने मित्र को हंसाओ, वह अधिक प्रसन्न होगा। शत्रु को हंसाओ, तुमसे कम-से-कम घृणा करेगा। एक अनजान को हंसाओ, तुम पर भरोसा करेगा। उदास को हंसाओ, उसका दुख घटेगा। एक निराश को हंसाओ, वह अपने को जवान समझने लगेगा। एक बालक को हंसाओ, उसका अच्छा स्वभाव, अच्छा स्वास्थ्य होगा। वह प्रसन्न और प्यारा बालक बनेगा, पर हमारे जीवन का उद्देश्य केवल हंसी ही नहीं है, हमें बहुत काम करने

> “हंसी-खुशी का नाम ही जीवन है। जो रोते हैं उनका जीवन व्यर्थ है। कवि कहता है–'जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं...'”



कम होती हैं झुर्रियां

- जब कोई किसी को पहली बार हंसाता है, तो उसे लगता है कि वह फिर वैसा ही करे। वैसे आदमी जैसे-जैसे उम्रदराज होता जाता है तो हंसने-मुस्कुराने की क्षमता खोता जाता है। ऐसे में उसे बचपन की ओर मुड़कर देखना चाहिए। खिड़की के बाहर का खिला सूरज, नीला आसमान आपको मुस्कुराने पर बाध्य कर देते हैं।
- हंसी का विज्ञान या लाफ्टर थैरेपी पिछली सदी में अमेरिका महाद्वीप में अस्तित्व में आया। उससे पहले अरस्तू ने हंसी के साथ उपचार करना सिखाया। इस अर्थ में लाफ्टर थैरेपी के वे पितामह कहे जा सकते हैं।
- हंसने से चेहरे की झुर्रियां भी कम होती हैं। शोध में यह बात सामने आई कि मुस्कुराने के दौरान चेहरे की 17 मांसपेशियां खुलती हैं, जबकि खुलकर हंसने पर चेहरे और शरीर की 80 मांसपेशियां खुल जाती हैं। इससे चेहरे में रक्तस्राव बढ़ जाता है और झुर्रियां कम पड़ती हैं।
- हंसी योग सन् 1995 में सबसे पहले एक भारतीय चिकित्सक मदन कटारिया द्वारा विकसित किया गया जो सिर्फ एक तकनीक पर आधारित है जिसे गुडहर तकनीक कहा गया जिसका सार यह है कि अगर आप मजाकिया न हों तो हंसना सीखें।

हैं। तथापि उन कामों में, कष्टों में और चिंताओं में एक सुंदर आंतरिक हंसी, बड़ी प्यारी वस्तु भगवान ने दी है। हंसी सबको भली लगती है। सभा में हंसी विशेषकर प्रिय लगती है, जो स्त्री नहीं हंसती और पुरुष हंसते नहीं उनसे ईश्वर बचाए, जहां तक बने हंसी से आनंद प्राप्त करो। प्रसन्न लोग कोई बुरी बात नहीं करते। हंसी बैर और बदनामी की शत्रु है और भलाई की सखी। हंसी स्वभाव को अच्छा करती है। जी बहलाती है और बुद्धि को निर्मल करती है। हंसी सजे-सजाए घर के समान है। मनुष्य रोने के लिए ही नहीं बनाया गया है। हंसने के लिए ही आदमी बना है। मनुष्य खूब जोर से हंस सकता है, पशु-पक्षी को वह शक्ति ईश्वर ने नहीं दी है। मनुष्य हंसने-मुस्काने, हो-हो करने, टोपी उछालने, गीत गाने और स्तुति करने के लिए बनाया गया है। हंसी भय भगाती है, दुख मिटाती है, निराशा को घटाती है। कंगाली का आधा बोझ उड़ा देती है। उदास आदमी से दूर रहो। लड़कियों की हंसी संसार के सब प्रसन्नकारी स्वरों से मधुर है। जो हंसता है, वह आयु बढ़ाता है। प्रसन्नता उत्तम भोजन, लड्डू, पेड़ा, कलाकंद, पूड़ी-कचौरी हजम कराती है। संसार में फिराना, समुद्र और पहाड़ों पर हवा खिलाना, सेनाओं का उत्साह बढ़ाना—सब प्रसन्नता का खेल है। मनुष्य को और दवा दरकार नहीं। उसे मित्रों में बैठाओ और खूब हंसाओ।

मेलबोर्न के डॉक्टर ए. डब्लू. कोल ने डॉक्टरी पर एक पुस्तक लिखी है। उसकी भूमिका में से यह सब बातें यूरोप के बड़े-बड़े बुद्धिमानों के लेखों से छांटी हैं। इस विषय में वह एक कहानी लिखता है। एक डॉक्टर अपने मित्रों सहित पहाड़ पर फिरता था। एक चट्टान पर उसे कौवे का एक घोंसला दिखाई दिया। डॉक्टर ने कहा, ''आओ सब दौड़ो, देखें उस घोंसले के पास पहले कौन पहुंचता है?'' सब दौड़े। एक आदमी हांफकर बैठ गया। जब सब जमा हुए, तो इतना हंसे कि सबके पेट फूल गए। जब इन मित्रों को हंसना होता, तो उस घोंसले की कहानी को फिर दोहराते। कई साल पीछे उनमें से एक मित्र बीमार हो गया, मरने को था कि उस डॉक्टर को खबर हुई। वह गया। लोगों ने कहा कि,''लो तुम्हारा मित्र आया, आंखें खोलो, पर वह कुछ न बोला, तब डॉक्टर ने जोर-जोर से कौवे के घोंसले की कहानी सुनाई। कहानी सुनकर बीमार हंसा। यहां तक कि वह अच्छा हो गया और जीता है।

उसी हंसी को मनुष्य जीवन के साथ लगाए रखने के लिए हिंदुओं ने होली का त्योहार जारी किया था। होली की कृपा से अब भी हिंदू कुछ हंस लेते हैं। संसार में दुख और उदासी अधिक है। उस दुख और उदासी को दबाकर एक बार मनुष्य को हंसाना और प्रसन्न करना ही होली का उद्देश्य है। इसी से जानो कि होली हिंदू जीवन की कैसी प्यारी चीज है!

(हिंदी समय डॉटकॉम से)

MAGAZINE KING



MAGAZINE KING

खिलखिलाहटों में

कुछ लोगों की पहचान ही उनकी हंसी होती है। कथाकार रवींद्र कालिया ऐसे ही व्यक्ति थे, जो मुश्किल से मुश्किल हालात को भी हंसी में उड़ा दिया करते थे। उनकी हंसी संक्रामक थी, जो दूसरों को भी खिलखिलाने पर मजबूर कर देती थी

इलाहाबाद में 'परिमल' एक कवि बहुल साहित्यिक संस्था के रूप में जानी जाती थी, अतः उसके तत्वावधान में कहानी सम्मेलन के आयोजन की सूचना सबको चकित कर गई। संभवतः यह सन् 1963 की बात है। उस सम्मेलन में बाहर से भी कई लेखक आए थे, खास तौर से मोहन राकेश, कमलेश्वर, कृष्णा सोबती आदि और उनके नौजवान कहानीकार जो बाहर मोहन राकेश के साथ गोलबंद होकर ठहाके लगाया करते थे। सम्मेलन के बाद एक दिन कवि-कहानीकार दूधनाथ सिंह के दिल्ली के तीन नौजवान दोस्त कहानीकार मेरे घर आए। दूधनाथ सिंह उन दिनों उसी कॉलोनी में रहते थे, यद्यपि उनसे कम ही मुलाकात होती थी। दिल्ली से आए उन लेखक मेहमानों से मेरा कोई परिचय नहीं था, यद्यपि रवींद्र कालिया की एक-दो रचनाएं पढ़ चुका था, विशेषकर वे उन दिनों अपनी 'नौ साल छोटी पत्नी' की वजह से चर्चित थे।



अमरकांत

रवींद्र कालिया में उस समय चुलबुलापन अधिक था, वे हास्य-व्यंग्य का कोई टुकड़ा उछालते और खिलखिलाने लगते। गंगा प्रसाद विमल किसी खोजी पत्रकार की तरह बाहर सड़क पर घूमकर इधर-उधर देखते रहे और परेश बीच-बीच में किसी दार्शनिक की तरह कोई अनोखी टिप्पणी कर देते।

पता नहीं क्या बात है कि जब आप एक नाम लें, तो शेष तीनों की भी तस्वीर सामने खड़ी हो जाती है। मैं जानता हूं कि आपस में जितने नोंक-झोंक हों उनके बीच, वे एक विशेष

अर्थ में आज भी एकजुट हैं। इस अर्थ में कि 'नई-कहानी' के समय के बाद ज्ञानरंजन, दूधनाथ सिंह, रवींद्र कालिया और काशीनाथ सिंह की कहानियों ने सन् साठ की नई रचनाशीलता को खास पहचान दी थी। निःसंदेह इस पीढ़ी में अन्य कई समर्थ, मशहूर रचनाकार हैं, मगर सन् साठ की पीढ़ी के प्रतिनिधि कहानीकारों में इन 'चार यारों' के ही नाम लिए जाते हैं। शायद इन चारों की भी यही इच्छा थी।

सन् साठ के इन कहानीकारों में ज्ञानरंजन तो पहले इलाहाबाद में रहते ही थे। दूधनाथ सिंह कलकत्ता से होते हुए अंततः इलाहाबाद विश्वविद्यालय में नियुक्ति पा गए और काशीनाथ सिंह वाराणसी में नामवर सिंह के भाई। उनसे मुलाकात होती ही रहती थी। और संयोग देखिए कि जालंधर के रवींद्र कालिया पहले दिल्ली में रुके, फिर बंबई गए और अंततः वहां से इलाहाबाद आकर एक प्रेस का संचालन करने लगे, फिर तो 'चार यार' एकदम निकट।

मैं तब मित्र प्रकाशन में नौकरी करने लगा था। शुरुआती दो-चार मुलाकातें रवींद्र कालिया से सिविल लाइन की सड़कों पर हुई थीं। उन्होंने हास्य-व्यंग्य-मिश्रित टिप्पणियों से मेरा स्वागत किया। यह स्वाभाविक ही है, क्योंकि नई पीढ़ी का धर्म है अपने पूर्ववर्ती पीढ़ी की तरफ़ चुनौतियां फेंकना। साथ में ममताजी भी थीं, उन्होंने अपने तरीके से मना भी किया। पूर्ववर्ती पीढ़ी के पास भी कमजोर तीर नहीं रहते, जो परीक्षित एवं सिद्ध होते हैं, जबकि नई पीढ़ी को कड़े आजमाइश के दौर से गुजरना होता है। तभी सुनने में आया कि रवींद्र कालिया के प्रेस में इलाहाबादी लेखकों का जमावड़ा होने लगा है। बाहर से जो आता वह पहले वहीं आता है। वहां सबका स्वागत होता। किसका-किसका नाम लूं, हिंदी साहित्य का कौन वहां नहीं गया होगा?

इस तरह कभी-कभी शाम को मैं वहां जाने लगा। उसी समय उनका प्रेस कंपोजिंग बंद होता था और ममताजी भी एक प्राइवेट डिग्री कॉलेज के प्रिंसिपल पद की ड्यूटी निभाकर लौटती थीं। वहां चाय-पानी होता, कुछ तो गपशप लंबी खिंच जाती। वहां हर तरह की स्थानीय साहित्यिक गतिविधियों की जानकारी मिलती ही थी, संपूर्ण हिंदी साहित्य जगत की सबसे हाल की सूचनाएं भी।

मैंने देखा कि उन दिनों रवींद्र कालिया और ममता कालिया, दोनों ही कठिन संघर्ष के दौर से गुजर रहे थे। तेजी से बूढ़े हो रहे एक प्रेस मालिक और प्रकाशक से उन्होंने आंशिक भुगतान करके प्रेस लिया था और शेष भुगतान उन पुस्तकों को छाप-छापकर करना था, जो पाठ्यक्रम में लगी थीं, तब उनको स्वयं प्रूफ भी पढ़ने पड़ते थे। यही नहीं, उन पुस्तकों के मुद्रण और प्रकाशन से संबंधित अन्य छोटे-छोटे काम के लिए दौड़-धूप करनी पड़ती थी।



MAGAZINE

> रवींद्र कालिया के प्रेस में इलाहाबादी लेखकों का जमावड़ा होने लगा। बाहर से जो आता वह पहले वहीं आता। वहां सबका स्वागत होता। किस-किस का नाम लूं, हिंदी साहित्य में कौन वहां नहीं गया होगा?

इसी के साथ एक कुशल मुद्रक के रूप में अपनी हैसियत बाजार में बनाना सबसे जरूरी काम था। निजी कठिनाइयां और समस्याएं अलग। इन समस्याओं के समाधान के रास्ते में रुकावटें भी अनेक थीं। बार-बार बिजली का गुल हो जाना। बिजलीघर को लगातार फोन कीजिए, कुछ नहीं होता, तो स्कूटर पर दौड़िए, चक्कर लगाइए। फिर भी कुछ नहीं होता, तो माथा पकड़कर बैठ जाइए, तकादा करनेवालों की बातें सुनिए, दूसरे शहर में कोई बड़ा काम आने की खबर से अचानक सभी कंपोजिटरों का बेहतर पेमेंट के लिए काम छोड़कर वहां पलायन हो जाता था। जब शहर में दूसरे कंपोजिटरों की तलाश में इधर-उधर भागना पड़ता, लोगों से कहना पड़ता था। अगर काम जरूरी हो और

मशीनमैन गायब हो जाता, तो स्वयं रवींद्र कालिया अंडरवियर-बनियान पहनकर मशीन पर जाकर छपाई करने लगते थे। इससे स्पष्ट था कि काम की देखभाल और दौड़-धूप करने के लिए एक-दो होशियार सहयोगियों की जरूरत थी, मगर यहां रवींद्र कालिया थे। यह सब अकेले ही करना पड़ता।

इस तरह कई मोर्चों पर सक्रिय होने के कारण कुछ खास नहीं लिख सके। उनकी कहानी 'काला रजिस्टर' उन दिनों काफी चर्चित रही। इस खास वक्त उनके लेखन में जरूर रुकावट आ गई थी, परंतु निश्चित ही वह एक बड़ा उपन्यास लिखने की मानसिक तैयारी कर रहे थे। जरूर ममता कालिया इन कठिन संघर्षों में सहयोग देने के साथ ही रचनात्मक रूप से भी खूब सक्रिय थीं। वे कॉलेज और रसोईघर की व्यस्तता के बीच मामूली फुरसत में भी कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों में लिख-लिखकर कोई कहानी पूरी कर लेती थीं। शायद रवींद्र कालिया ने अपना वह उपन्यास टुकड़ों-टुकड़ों में ही लिखा था। इस संबंध में उनसे कभी-कभी बात होती थी। एक बार मैंने उनसे पूछा था, ''क्या आप कुछ वाक्यों में, यानी कैपसूल के आकार में अपने उपन्यास का कथानक बता सकते हैं?'' वह हंसने लगे, ''एक बड़े उपन्यास को कुछ वाक्यों में कैसे बताया जा सकता है?'' मेरी बात शायद स्पष्ट नहीं हुई थी। मेरा मतलब था कि किसी कृति का, चाहे बड़ी या छोटी, कोई केंद्रीयभाव या केंद्रीय विचार तो होता है, लेकिन मैंने इस प्रसंग को आगे नहीं बढ़ाया। फिर तो वे उस उपन्यास में हद तक रम गए कि उपन्यास के दो खंड बन गए और कुछ समय बाद दो भाग में, 'खुदा सही सलामत है' शीर्षक से प्रकाशित भी हुआ। इस बड़ी कृति का हिंदी जगत में अच्छा स्वागत हुआ। इसमें रवींद्र कालिया के लेखन की सभी खूबियां हैं, जरूर उनकी कहानियों में जो व्यंग्य होता है, वैसा नहीं। एक बड़े उपन्यास में यह संभव नहीं।

जब आपके पास विचार हो, योजना हो, और उसको अमल में लाने की इच्छा-शक्ति हो, तो कोई-न-कोई कार्य तो होगा ही। उद्यम-व्यापार के लिए तो अपना चोला पूरा-का-पूरा बदलने की जरूरत होती है, पूरी जीवन पद्धति ही। जब आपके अंदर लक्ष्मी और सरस्वती की टक्कर ही रही हो, तो संकट उपस्थित ही हो जाता है। आप दोनों में से एक को छोड़ेंगे, तभी कोई बात बनेगी। बहरहाल, रवींद्र कालिया को व्यावसायिक उद्यम छोड़ना ही पड़ा। और उन्होंने कई घुमावदार रास्तों से होते हुए अंततः लेखन और संपादन का मनपसंद मार्ग पकड़ लिया, फिर तो उन्होंने संस्मरण भी खूब लिखे। यह अच्छी बात है कि वह जिस काम को हाथ में लेते हैं, उसमें डूब ही जाते हैं। इतना रम जाते हैं कि दिखाई देने लगता है। इसके बरक्स ममता कालिया के संबंध



> काम की देखभाल और दौड़-धूप करने के लिए एक-दो होशियार सहयोगियों की जरूरत थी, मगर यहां रवींद्र कालिया थे। यह सब अकेले ही करना पड़ता।

में ऐसा नहीं कहा जा सकता। आपको पता नहीं लगेगा कि उन्होंने कब कोई चीज लिखी और कब प्रकाशित हुई। रवींद्र कालिया कुशल संपादक भी हैं। शायद 'धर्मयुग' में प्राप्त अनुभव काम आया है।

उन्होंने इलाहाबाद में साप्ताहिक 'गंगा जमुना' का संपादन किया, बाद में 'वागर्थ' में गए। इस बीच रवींद्र कालिया की कुछ महत्त्वपूर्ण रचनाओं का उल्लेख जरूरी है—'गालिब छूटी शराब', 'ए.बी.सी.डी', और 'कृष्णा सोबती' पर एक आत्मीय संस्मरण। 'गालिब छूटी शराब' करीब उपायहीन आत्मविनाश के कगार पर खड़े एक ऐसे प्रतिभाशाली व्यक्ति की कहानी है, जो अद्भुत जिजीविषा एवं रचनात्मक इच्छा-शक्ति से कर्म और उम्मीद की दुनिया में वापस आता है। आप सचमुच नहीं जानते कि यह चमत्कार कैसे हो जाता है, किसकी दुआ से होता है और किसके लिए हो जाता है। दूसरी खूबी इस रचना की यह है कि आज के समाज के अनगिनत लोगों की कथा है। तीसरी बात कि एक त्रासद विनाशकारी ज्वार में बुरी तरह फंसे ऐसे व्यक्ति के उबरने की ऐसी कथा है यह जो दार्शनिक हास्य-व्यंग्य की शैली में कही गई है। 'ए.बी.सी.डी' दूसरे किस्म की प्रभावशाली कृति है। विदेश में (कनाडा) में रहनेवाले हिंदुस्तानियों के जीवन पर और लोगों ने बहुत कुछ लिखा है, परंतु यह अद्भुत है। इसमें विदेशी हिंदुस्तानियों, खास तरह से नई पीढ़ी की लड़कियों और लड़कों में आए परिवर्तन, उनके पुरानी पीढ़ी से होनेवाली टकराहट और दो पाटों के बीच उत्पन्न सांस्कृतिक संकट का काफी जीवंत चित्रण किया गया है। रवींद्र कालिया बहुत लंबे वाक्य नहीं लिखते, कहीं जटिलता और उलझाव भी नहीं, जहां जिसकी जो जगह है वहीं उसको खूबसूरती से जड़ देते हैं। कृष्णा सोबती पर लिखे संस्मरण के बारे में यही कहना है कि उसमें खूबसूरत संतुलन है जिसमें सबके लिए सम्मान है, आत्मीयता और सहृदयता के साथ।

इस लंबे साथ-संग में जब मैं बीमारियों के चक्कर में पड़ गया, तो मेरा जीवन दूसरी गलियों में भटक गया। रवींद्र प्रेस बेचकर मेंहदौरी कॉलोनी में निवास करने लगे। बहरहाल उनमें एक बड़ी खूबी है, नए लेखकों को हर तरह से उत्साहित करना, आगे बढ़ाना, उनको अपना पूरा समर्थन देना। शुरू-शुरू में ही नहीं हमेशा के लिए। यह उनका स्वाभाविक गुण रहा है। वह हमेशा अपने लेखक साथियों के साथ खड़े होते हैं और सहर्ष उसकी मदद करने को तैयार हो भी जाते हैं। वे भरसक कोशिश करते हैं कि वह अपना सम्मान तो रहे ही, दूसरे के सम्मान को क्षति न हो, शर्त यह है कि अन्य कोई उन्हें आहत न करे। इतने पर भी आनंद उठाते हैं और उसे खिलखिलाहटों में उड़ा देते हैं। वह सदा हंसते हैं और दूसरों को भी हंसाते हैं। यह सब तो मैं बहुत संक्षेप में कह रहा हूं, बातें तो और भी हैं।

('अमरकांत संचयन'—भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक से एक अंश)

MAGAZINE KING

अथ पूना डॉट कॉम

बोगी में रेलवे पुलिस और एक्साइज अधिकारियों का छापा पड़ा तो प्रोफेसर सहित सभी छात्रों के होश गुम हो गए। पुलिस को खुफिया सूचना मिली थी कि इस बोगी में गोवा से काजू की शराब 'फैनी' स्मगल करके लाई गई है। आखिर खोजी कुत्ते मंगवाए गए, तलाशी शुरू हुई और कुछ देर बाद.....



हरीश नवल

पूना जंक्शन पर शंटिंग करती बोगी नं. 2003 में स्टेशन मास्टर का लिखित संदेश गिरीश सर के नाम आया, जिसमें लिखा था, ''प्रोफेसर गिरीश, गोवा से आपके विद्यार्थी आलोक मुखर्जी का फोन आया था कि सभी ठीक-ठाक हैं, बस रश्मि अभी तक थोड़ी घबराई हुई है। वे चारों पूना में नहीं, बंबई में लौटेंगे, उनकी चिंता न करें। रश्मि तब तक और एडजस्ट कर लेगी। सुनेत्रा और टीटू बहुत साथ दे रहे हैं।''

गिरीश सर ने यह पढ़कर बड़बड़ाया, ''सुनेत्रा और टीटू, हुंह वो भी एडजस्ट हो रहे होंगे...''

सुधि मैम ने पूछा, ''क्या कह रहे हैं आप? सब ठीक है न क्या कहा है आलोक ने?''

''अरे कुछ नहीं सुधि जी, वो सब एक दूजे को एडजस्ट कर रहे हैं, जैसे हम दोनों कर रहे हैं, उनका तो हो जाएगा, वो फुरसत में हैं, लेकिन हम फंसे हुए हैं, ऊपर से टांग टूट गई है।''

''मैं कुछ समझी नहीं, उनका क्या हो जाएगा और आप किसमें फंसे हैं?'' सुधि मैम ने भोले से सवाल ऐसी अदा में किए कि गिरीश सर और फंस गए।

गिरीश सर को उस समय नहीं मालूम था कि जल्द ही उन्हें कितना फंसना पड़ेगा...

दिल्ली की गाड़ी से बोगी के जुड़ने में अभी लगभग ढाई घंटे बाकी थे। प्रो. सुरेश चिंतन के क्षणों में डूबे हुए डायरी में कुछ लिख रहे थे, ज्यादातर विद्यार्थी बोगी में ही थे, जिनमें कुछ गपिया रहे थे, कुछ गा रहे थे, कुछ खा रहे थे और जिनके रिश्ते टूर में पनपे थे, वे जोड़े से एक-दूसरे में खोए हुए थे। गिरीश सर लेटे हुए थे और सुधि मैम एक पत्रिका पढ़ने के उपक्रम में उनको बीच-बीच में निहार रही थीं। यानी सब कुछ वैसा ही था जैसा होना चाहिए था कि तभी बोगी में रेलवे पुलिस और एक्साइज अधिकारियों ने छापा मारा।

बोगी में सनसनी फैल गई। आश्चर्यचकित सुधि मैम ने पत्रिका रखते हुए सामने खड़े हुए अधिकारी से पूछा, ''सर, क्या

बात? कुछ गड़बड़ की हमारे स्टूडेंट्स ने?''

''आप मैडम जी हैं इनकी?''

''जी, और मैं गिरीश इनका प्रोफेसर'' कहते हुए गिरीश सर खड़े हो गए।

यह सुनकर तीन-चार और अधिकारी वहीं गिरीश सर को घेरने आ धमके। एक ने कहा–''हमारे खबरचियों ने हमें खबर दी है कि इस बोगी में गोवा से काजू की शराब 'फैनी' स्मगल करके लाई गई है। आप खुद ही कबूल करके हमें तलाशी करा दें नहीं तो हम खुद ही तफतीश कर लेंगे।''

अकड़े अफसर के ये कड़े शब्द सुनकर गिरीश सर ने कहा,

''साब आप तलाशी ले लीजिए, यहां कुछ नहीं मिलेगा, हम गोवा से लगातार इस बोगी में हैं, जब खाना–वाना खाने जाते हैं, तब भी हमारे कर्मचारी बोगी में होते हैं, आपको गलत खबर मिली है। यहां सब विद्यार्थी हैं और भले घरों से हैं, सबसे महंगा कोर्स कर रहे हैं 'टूरिज्म' का। आप अपनी तसल्ली शौक से कीजिए।''

गिरीश सर का संकेत मिलते ही कड़क अफसर ने अपनी टोली को 'तलाशी' लेने का इशारा किया और विद्यार्थियों में से किसी को भी बोगी के बाहर न जाने का हुक्मनामा सुना दिया।

अधिकारी-गण ऊपर-नीचे रखे सामानों को श्वान नासिका सम सूंघते रहे, गिद्ध दृष्टिवत टटोलते रहे। जो उपस्थित नहीं थे, उनके ट्रंक, सूटकेस आदि एक साइड में लगाते रहे।

ऐसे में हुई घबराहट के वशीभूत प्रो. सुरेश को बाथरूम जाना पड़ गया। वे निवृत्त होकर दर्पण के सामने बालों में कंघा करके नॉर्मल होने की कोशिश में लगे, तभी उन्हें एक हल्की-सी ध्वनि सुनाई दी और उसके साथ ही उन्होंने देखा कि ऊपर छत खुली और एक पतला-सा चेहरा उसमें से झांकता नजर आया। प्रो. सुरेश पर घबराहट का दौर पुनः स्थापित होने लगा... चेहरे के होंठ खिले, वह बोला, ''साहब उतरने में मदद कर दो।'' कहकर उसने अपने चरण नीचे लटका दिए। हैरान-परेशान प्रो. सुरेश के देखते-न-देखते एक समूचा आदमी पुलिस की वर्दी पहने अवतरित हो गया। प्रो. सुरेश ने उसे सहारा देकर भूमि पर उतारा। उतरते ही वह 'ड्यूटी पर हूं' कहकर दरवाजा खोलकर बाहर हो गया।

भौंचक्के से कवि हृदय प्रो. सुरेश ने उत्सुक नजरों से ऊपर देखा तो पाया कि बोगी की छत और बाथरूम की छत के बीच ढाई-तीन फिट का गैप है जिसमें पुलिस वाला समाया हुआ था... वे सब कुछ और भांपते कि एक अफसर ने उन्हें खुले दरवाजे से देख लिया। उनके पास आया और छत पर नजर दौड़ाई, फिर पूछा, ''ऊपर से तुम आए हो?''

''जी नहीं, मैं तो दिल्ली से आया हूं। एक पुलिसवाला अभी-अभी ऊपर से निकला था, वही बाथरूम से बाहर गया है।''

जन्म : 8 जनवरी, 1947 को पंजाब के जलंधर जिले में। फिलहाल अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक पत्रिका 'गगनांचल' के मुख्य संपादक के रूप में विदेश मंत्रालय के तहत भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के साथ काम कर रहे हैं। लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित। अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजे जा चुके हैं।





MAGAZINE FUN

अधिकारी-गण ऊपर-नीचे रखे सामानों को श्वान नासिका सम सूंघते रहे, गिद्ध दृष्टिवत टटोलते रहे। जो उपस्थित नहीं थे, उनके ट्रंक, सूटकेस आदि एक साइड में लगाते रहे।

अफसर ने सीटी बजाई। उसकी टोली के दो लोग भागकर आ गए। अफसर ने उन्हें छत पर खोज करने को कहा। एक छत में घुसा और घुसते ही बोला, ''साब शराब की तीन पेटियां रखी हैं यहां।''

पेटियां उतार ली गईं, प्रो. सुरेश को रेलवे पुलिस ने अपराधी की भांति घेर लिया। सवाल-जवाब हुए। निरीह सुरेश पर इल्जाम लगा कि उन्होंने गोवा से शराब की स्मगलिंग की। उनकी पूरी डिटेल्स चेक करने की बात हुई... उनकी बार-बार कही गई बात कि 'एक पुलिसवाला बाथरूम की छत से उतरा था' को जब गंभीरता से लिया गया तब अनुभवी मुख्य अधिकारी समझ गया कि स्मगलर पुलिस के वेश में भाग गया, उसकी वर्दी के कारण उसके लिए तो सभी द्वार खुले थे। तिस पर सुरेश जी प्रोफेसर भी थे और कवि भी, उन्हें बख्श दिया गया...।

प्रो. सुरेश अपनी सीट पर आकर बैठे, उनका कश्मीरी सेब-सा चेहरा इलाहाबादी अमरूद-सा हुआ देख सुधि मैम और गिरीश सर के चेहरे

प्रश्नवाचक हो गए। तभी 'कड़कनाथ' फिर आ धमका और प्रो. सुरेश को लिखित स्टेटमेंट देने को कहा। प्रो. सुरेश अफसर के दिए हुए खाली कागजों को भरने लगे...

बोगी का वातावरण इतना बोझिल हो उठा था कि लग रहा था बोगी नीचे बैठ रही है। गोलू और रंगा तक की आवाज नहीं निकल रही थी। रेलवे पुलिस और एक्साइज अफसरों के पूछताछ का प्रकोप कम नहीं हुआ था। जो जो विद्यार्थी बाहर से बोगी में आ रहे थे, उनकी परेड हो रही थी, कुछ के अटैची केस, बैग आदि खुलवाए भी जा रहे थे... कहीं कुछ न मिलने से अधिकारी मायूसी में सांस ले रहे थे। 'कुछ मिले तो कुछ मिले' ... यही उधेड़ा और फिर बुना जा रहा था... बाथरूम की छत से बरामद पेटियों में मौजूद सुरा को परखने जांचने में चखने की जरूरत महसूस करते हुए अधिकारियों का एक दल जुटा हुआ था। मुख्य सक्षम अधिकारी को चैन नहीं था, वह बार-बार कह रहा था कि इस बोगी में स्मगलिंग हुई है, उसके खबरची हमेशा पक्की खबर देते हैं। गिरीश सर ने अधिकारी से निवेदन भी किया, ''सर, स्मगलिंग तो आपने पकड़ ली है, तीन पेटियां छत से मिली हैं। खबर तो ठीक है, अब हमें बख्श दीजिए। आपको बार-बार बता रहा हूं कि हमारे विद्यार्थी भले घरों के हैं। शरारती हो सकते हैं, पर 'स्मगलर' नहीं। उन्हें पता भी नहीं है कि 'स्मगलिंग' क्या होती है। देखिए जरा उनको, कैसे चुप, शांत बैठे हैं, उनका भोलापन देखिए तो...''

सक्षम अधिकारी ने नजरें घुमाकर विद्यार्थियों पर दृष्टि डाली। जो दृष्टिगत हुए प्रायः शांत, लेकिन घबराए से लग रहे थे। अधिकारी बोला, ''देखो स्टूडेंट्स, जिनके पास दो-तीन फैनी की बोतलें देखी गईं, हमने कुछ नहीं कहा। पापा से प्यार है, उनके लिए ली हैं, हमने अलाऊ कर दिया, लेकिन पक्की खबर कभी कच्ची नहीं हो सकती, बल्कि ज्यादा पक्की हो सकती है। मुझे कुछ करना ही होगा, नहीं कबूलेंगे आप?''

यह कहकर संदेह में गोता लगाए सक्षम अधिकारी ने वायरलेस का प्रयोग किया और कुछ देर बाद बोगी में असली कुत्ते आ गए। ये स्निफर डॉग्ज थे, जिनके कारण सैकड़ों केस हल होते हैं। पुलिस फेल हो सकती है, पर कुत्ते नहीं... कभी-कभी विचार आता है कि 'पुलिस के कुत्ते' होते हैं या फिर 'कुत्तों की पुलिस'? बहरहाल, जो भी हो, दो हैल्दी-वैल्दी कुत्तों का भव्य प्रवेश हुआ, वातावरण रोमांचक और कुत्तात्मक हो उठा। फैनी की बोतलें उन्हें सुंघाई गईं, कुछ क्रियाएं संपन्न हुईं और कुत्ते तेजी से अनुलोम-विलोम-सा करने लगे और इधर-उधर भटकते-अटकते बोगी में दौड़ने लगे। बिना वर्दी के कुत्तों की डोरियां वर्दीधारी



MAGAZINE KING

जवानों ने थामी हुई थीं, वे साथ-साथ भागदौड़ करने लगे। अजब-सी हलचल मच गई...छात्र-छात्राएं घबराहट का प्रदर्शन करने में जुटे... कुत्ते तीव्र गति से सूंघते हुए अपनी नासिकाएं बार-बार बोगी के बिजली के स्विच बोर्डों पर रखने-घिसने लगे। जवान उन्हें खींचते, वे पुनः स्विचों की ओर उमठते... फिर वे बड़े स्टाइल में भौंकने लगे।

मुख्य अधिकारी और कड़का, ''दिल्ली के नौजवानों अभी भी बता दो खुद ही, नहीं तो हमारे जवानों ने तो इशारा दे दिया है। जिस किसी के पास पेचकस हो, हमें दे दे।''

सब चौंक गए। प्रो. गिरीश सर, सुधि मैम और

स्विच बोर्ड खुला तो प्रोफेसरों के होश उड़न तश्तरी हो गए। बोर्ड के अलग होते ही स्विचों के आले में गुंथी तारों के साथ 'फैनी' यानी गोवा की मशहूर शराब की छोटी बोतलें रखी दिखाई दे गईं।

प्रो. सुरेश अधिकारी के निकट आकर खड़े हो गए। तीनों के चेहरे चिंता रस की व्याप्ति के सूचक हो रहे थे। सबके बीच बनवारी भी दुबका-सा खड़ा था, वह बोल उठा, ''सर जी, निशिकांत के पास एक लंबा-सा पेचकस मैंने देखा था, उससे ले लीजिए।''

''निशिकांत पेचकस है तो लेकर आओ'' गिरीश सर का स्वर गूंजा।

रंगा और टीटू के साथ बैठा निशिकांत अचकचा गया। उसके माथे पर भरतनाट्यम करती पसीने की बूंदे नजर आने लगीं, उसने रंगा का हाथ दबाते हुए पसीजती दृष्टि डाली, रंगा के चेहरे पर फुलझड़ियों के स्थान पर हवाइयां उड़ती दिखाई दे रही थीं... जिससे कड़क अधिकारी जो उनके समीप पहुंच चुका था, ने कहा, ''हूं तो तुम दे रहे हो पेचकस या...'' निशिकांत ने अपने बैग से पेचकस निकाल कर कड़कते हाथों में रख दिया। अधिकारी ने एक जवान को पेचकस देकर एक स्विच–बोर्ड खोलने को कहा।

स्विच बोर्ड खुला तो प्रोफेसरों के होश उड़न तश्तरी हो गए। बोर्ड के अलग होते ही स्विचों के आले में गुंथी तारों के साथ 'फैनी' यानी गोवा की मशहूर शराब की छोटी बोतलें रखी दिखाई दे गईं। एक एक करके बोगी के सभी स्विच बोर्ड बेपर्दा किए गए... और बेपर्दा हो गए 'अच्छे घरों के लड़के'। सब निशिकांत और रंगा को कोसने में जुट गए। गिरीश सर ने दोनों को कॉलेज से निकाल देने की



बात भी कही। निशिकांत ने कबूल किया कि पेचकस उसी का है, लेकिन उसने उसका इस्तेमाल स्विच बोर्डों पर नहीं किया। न ही रंगा ने कुछ किया, लेकिन वे जानते हैं कि पेचकस शाकिर अली ने लिया था और वही फैनी की बोतलें गोवा से लाया था। निशि और रंगा का कसूर इतना ही था कि उन्होंने शाकिर की मदद बोतलें रखने में की थी, जिसके एवज में उनको शाकिर ने जी भर पीने को दी थी।

शाकिर का नाम सुनते ही जैसे विस्फोट हो गया। शाकिर एक शांत, चुप्पा किस्म का भोला-सा बालक, उसने स्मगलिंग की, सब सकते में थे। रंगा, निशिकांत के बारे में तो सब आनंद से सोच सकते थे कि वे दोषी हो सकते हैं, लेकिन शाकिर ऐसा करेगा...कल्पनातीत था।

जवान स्विचबोर्ड दर स्विचबोर्ड बोतलें बरामद कर जमा करते रहे, मुख्य अधिकारी कड़क अधिकारी को संबंधित कार्यवाई करने का आदेश देकर शाकिर को लेकर स्टेशन कार्यालय की ओर रवाना हो गए। गिरीश सर अवसाद और क्रोध के मिक्सचर को पी रहे थे, वे अधिकारी के साथ जाने की जिद कर रहे थे, लेकिन अधिकारी ने उन्हें सख्ती से मना कर दिया। थोड़ी देर बाद एक्साइज और रेलवे पुलिस के अधिकारी भी बरामदगी का सामान लेकर बोगी से बाहर हो गए। उनके जाते ही बोगी सदर बाजार हो उठी, बोगी किट्टी पार्टी हो गई, बोगी स्टूडेंट कॉमन रूम में परिवर्तित होने लगी, बोगी चंडूखाना-सा व्यवहार करने लगी... पैंतालीस मुंह पैंतालीस बातें... रंगा और निशिकांत से लड़के गले मिलने लगे। सीमा और रेखा के दबे प्रेम भाव का उद्घाटन समारोह भी हो गया। गिरीश सर, प्रो. सुरेश, सुधि मैम, राजीव सहगल, कमल रुस्तगी और संजय दीवान सिर पर आई समस्या के विषय में बैठक करने के लिए बैठ गए।

रेलगाड़ी से बोगी के संगम होने में लगभग एक घंटा ही शेष था। गंभीर मुद्दा था कि शाकिर को पुलिस अधिकारी ले गए हैं, क्या उसे वापिस भेजेंगे या नहीं? भेजेंगे तो कब? उसे अकेला लेकर गए हैं, क्या व्यवहार करेंगे आदि आदि...

पच्चीस मिनट भी नहीं बीते होंगे कि मुख्य अधिकारी शाकिर को लेकर बोगी में प्रकट हुआ। बोगी में सन्नाटा छा गया, मानो सदर बाजार, किट्टी पार्टी, स्टूडेंट कॉमन रूम और यहां तक की चंडूखाने में हड़ताल हो गई हो।

शाकिर को गिरीश सर को सौंपते हुए मुख्य अधिकारी ने बड़ी शालीनता से कहा, ''सर, यह लड़का कसूरवार नहीं है, कसूरवार वही है जो बाथरूम की छत पर पेटियां रखकर पुलिस की वर्दी में भाग गया था...अभी ट्रेस नहीं हुआ। सब उसी का किया-धरा है, आप लोग खुशी-खुशी घर जाओ...किसी के खिलाफ कुछ नहीं है और हां, यह पेचकस जिस लड़के का है, उसे दे देना, जय हिंद जी!''

उसने पेचकस गिरीश सर के हाथ में ऐसे दिया जैसे राष्ट्रपति 'पद्मश्री' देते हैं।

मुख्य अधिकारी के जाते ही हड़ताल टूट गई, माहौल पुनः गरम हो गया। शाकिर को गिरीश सर ने वहीं अपने पास बिठा लिया और वाणी में सख्ती भरकर पूछा, ''निशि और रंगा ने तो बताया था कि तुमने बोतलें रखीं, स्विच बोर्ड तुमने ही खोले... तो फिर तुम्हें छोड़ कैसे दिया? तुम्हें तो मैं कॉलेज से रेस्टीगेट करवा दूंगा। तुमने स्मगलिंग जैसा गुनाह किया है। तुम्हारी वजह से सभी हैरान हैं, सभी परेशान भी थे, कॉलेज पहुंचोगे तो तुम्हारे पापा को बुलवाऊंगा, क्या करते हैं तुम्हारे पापा?''

''जी पापा तो दुबई में रहते हैं, इंपोर्ट-एक्सपोर्ट करते हैं, मैं चाचा के पास रहता हूं।''

''ठीक है तुम्हारे चचाजान को बुलवाऊंगा, उन्हें पता चलना चाहिए कि उनके भतीजे साहब क्या-क्या गुल खिलाते हैं। चाचा भी इंपोर्ट–एक्सपोर्ट करते हैं?''

''जी नहीं वे तो सरकारी मुलाजिम हैं।'' शाकिर ने अदब से जवाब दिया।

तल्खी से गिरीश सर ने कहा, ''तुम्हारे काले कारनामों से उनकी सरकारी नौकरी जा सकती है, किस महकमे में हैं वो?''

''जी सर वे मिनिस्टर हैं, आबकारी भी उनके पास है।'' बताकर शाकिर उठकर अपनी सीट की ओर बढ़ गया।

शाकिर बोगी से क्या मिला, बोगी भी रेलगाड़ी से मिल गई। बोगी को झटके क्या मिले, गिरीश सर को भी मिल गए... अब बोगी चल पड़ी थी और गिरीश सर लगभग सन्निपात की अवस्था में चलने लगे। उनकी टांग का दर्द सीने तक पहुंच गया। प्रो. सुरेश और सुधि मैम भी शाकिर के चाचा के बारे में सुनकर जड़वत-से हो गए।

कारवां बढ़ने लगा, सुधि मैम गिरीश सर की ओर बढ़ीं और बड़ी संजीदगी से बोलीं, ''आप भी हद कर देते हैं, शाकिर को आप क्या कॉलेज से निकालोगे, वो भी आपको निकलवा देगा, वो दिखता मुन्ना-सा है, लेकिन बहुत घुन्ना है। सगे मिनिस्टर का सगा भतीजा है। थोड़ी देर बाद आप उससे अपने कहे की माफी मांग लेना...नौकरी का सवाल है। भविष्य का सवाल है।''

यद्यपि गिरीश सर कुछ बोल न पाए, लेकिन उन्हें विश्वास था कि दिल्ली अभी 1730 किलोमीटर दूर है, वहां तक पहुंचते-पहुंचते वे शाकिर का मन साफ कर सकेंगे। तब भी भविष्य की चिंता में टांग ही नहीं, उन्हें सभी अंगों में पीड़ा महसूस होने लगी थी। ●

(शीघ्र प्रकाश्य उपन्यास 'बोगी नंबर दो हजार ग्यारह' से एक अंश)

MAGAZINE KING

आम



मुंशी करीम बख्श की सारे क्लर्क इज्जत करते और उसके पेंशन का काम सबसे पहले हो जाता। बड़े साहब नहीं रहे तो उनके बेटे और डिप्टी साहब को हर साल मौसम में वह आम के टोकरे पहुंचाता। एक दिन जब वह जिंदगी की आखिरी सांसें गिनने लगा तो उसने पत्नी और बेटी से कहा कि आमों का राज किसी को मालूम न हो...और फिर...

सआदत हसन मंटो

MAGAZINE KING

खजाने के सारे क्लर्क जानते थे कि मुंशी करीम बख्श की पहुंच बड़े साहब तक भी है। इसीलिए वे सब उसकी इज्जत करते थे। हर महीने पेंशन के कागज भरने और रुपया लेने के लिए जब वह खजाने में आता तो उसका काम इसी वजह से जल्द से जल्द कर दिया जाता था। पचास रुपये उसको अपनी तीस वर्षों की सेवा के बदले हर महीने सरकार की तरफ से मिलते थे।

हर महीने दस-दस के पांच नोट वह अपने छोटे कांपते हुए हाथों से पकड़ता और अपने पुराने ढंग के लंबे कोट की अंदरूनी जेब में रख लेता। चश्मे में से खजानची की तरफ शुक्रिया की नजरों से देखता और यह कहकर 'अगर जिंदगी हुई तो अगले महीने फिर सलाम करने के लिए हाजिर हूंगा' बड़े साहब के कमरे की तरफ चला जाता।

आठ बरस से उसका यही नियम था। खजाने के करीब-करीब हर क्लर्क को मालूम था कि मुंशी करीम बख्श, जो खुफिया विभाग की कचहरी में कभी मुहाफिज-ए-दफ्तर हुआ करता था, बेहद सिद्धांतों वाला, शरीफ और सहनशील आदमी है। मुंशी करीम बख्श वाकई इन गुणों का मालिक था। कचहरी में अपनी लंबी मुलाजमत के दौरान में उच्च अधिकारियों ने हमेशा उसकी तारीफ की है। कुछ मुंसिफों को तो मुंशी करीम बख्श से मोहब्बत हो गई थी। उसके खुलूस का हर शख्स कायल था।

इस वक्त मुंशी करीम बख्श की उम्र पैंसठ से कुछ ऊपर थी। बुढ़ापे में आदमी साधारणतया कम बोलने वाला और सहनशील हो जाता है, मगर वह जवानी में भी ऐसी ही तबीयत का मालिक था। दूसरों की खिदमत करने का शौक इस उम्र में भी वैसे का वैसा ही कायम था।

खजाने का बड़ा अफसर मुंशी करीम बख्श के एक संरक्षक और मेहरबान जज का लड़का था। जज साहब की मृत्यु पर उसे बहुत सदमा हुआ था। अब वह हर महीने उनके लड़के को सलाम करने की गरज से जरूर मिलता था। इससे उसे बड़ी सांत्वना मिलती थी। मुंशी करीम बख्श उन्हें 'छोटे जज साहब' कहा करता था।

पेंशन के पचास रुपये जेब में डालकर वह बरामदा तय करता और चिक लगे कमरे के पास जाकर अपने आने की सूचना भिजवाता। छोटे जज साहब उसको ज्यादा देर तक बाहर खड़ा न रखते, फौरन अंदर बुला लेते और सब काम छोड़कर उससे बातें शुरू कर देते।

''तशरीफ रखिए मुंशी साहब... फरमाइए, मिजाज कैसा है?''

''अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है, आपकी दुआ से बड़े मजे में गुजर रही है। मेरे लायक कोई खिदमत?''

''आप मुझे क्यों शर्मिंदा करते हैं? मेरे लायक कोई खिदमत हो तो फरमाइए। खिदमतगुजारी तो बंदे का काम है।''

''आपकी बड़ी मेहरबानी है।''

इस किस्म की औपचारिकता के बाद मुंशी करीम जज साहब की



उर्दू के मशहूर कथाकार सआदत हसन मंटो का जन्म 11 मई, 1912 को समराला (पंजाब) में हुआ। उन्हें 'बू', 'खोल दो', 'ठंडा गोश्त', 'टोबा टेकसिंह' जैसी अलग व धारदार शैली की रचनाओं के लिए खासी प्रसिद्धि मिली। उन्होंने फिल्म और रेडियो पटकथा लेखन भी किया। 18 जनवरी, 1955 को उनका देहांत हुआ।



मेहरबानियों का जिक्र छेड़ देता। उनके उच्च चरित्र का वर्णन बड़े विस्तार से करता और बार-बार कहता, ''अल्लाह बख्शे मरहूम फरिश्ता जैसी खूबियों वाले इनसान थे। खुदा उनको करवट-करवट जन्नत नसीब करे।''

मुंशी करीम बख्श के लहजे में खुशामद वगैरह की जरा भर मिलावट नहीं होती थी। वह जो कुछ कहता था, महसूस करके कहता था। उसके बारे में जज साहब के लड़के को, जो अब खजाने के बड़े अफसर थे, अच्छी तरह मालूम था। यही वजह है कि वे उसको इज्जत के साथ अपने पास बिठाते थे और देर तक इधर-उधर की बातें करते रहते थे।

हर महीने दूसरी बातों के अलावा मुंशी करीम बख्श के आम के बागों का जिक्र भी आता था। मौसम आने पर जज साहब के लड़के की कोठी पर आमों का एक टोकरा पहुंच जाता था। मुंशी करीम बख्श को खुश करने के लिए वे हर महीने उसको याद-दहानी करा देते थे, ''मुंशी साहब, देखें इस मौसम पर आमों का टोकरा भेजना न भूलिएगा। पिछली बार आपने जो आम भेजे थे, उसमें तो सिर्फ दो मेरे हिस्से में आए थे।''

कभी ये तीन हो जाते थे, कभी चार और कभी सिर्फ एक ही रह जाता था।

मुंशी करीम बख्श यह सुनकर बहुत खुश होता था। ''हुजूर ऐसा कभी हो सकता है... ज्यों ही फसल तैयार हुई, मैं फौरन ही आपकी खिदमत में टोकरा लेकर हाजिर हो जाऊंगा। कहिए तो

ब्याह के दूसरे साल लड़की का शौहर मर गया था। मुंशी करीम बख्श की और कोई औलाद नहीं थी, मगर उस छोटे से कुनबे के बावजूद पचास रुपयों में उसका गुजर बहुत ही मुश्किल से होता था।

दो हाजिर कर दूं। ये बाग किसके हैं... आप ही के तो हैं।''

कभी-कभी छोटे जज साहब पूछ लिया करते थे, ''मुंशी जी आपके बाग कहां हैं?''

''दीनानगर में हुजूर, ज्यादा नहीं हैं सिर्फ दो हैं। उसमें से एक तो मैंने अपने छोटे भाई को दे रखा है जो इन दोनों का इंतजाम वगैरह करता है।''

मई की पेंशन लेने के लिए मुंशी करीम बख्श जून की दूसरी तारीख को खजाने गया। दस-दस के पांच नोट अपने छोटे कांपते हुए हाथों से कोट की अंदरूनी जेब में रखकर उसने छोटे जज साहब के कमरे का रुख किया।

हस्ब-ए-मा'मूल उन दोनों में वही रस्मी बातें हुईं। आखिर में आमों का जिक्र भी आया, जिस पर मुंशी करीम बख्श ने कहा, ''दीनानगर से चिट्ठी आई है कि अभी आमों के मुंह पर चीप नहीं आया। ज्यों ही चीप आ गया और फसल पककर तैयार हो गई, मैं फौरन पहला टोकरा लेकर आपकी खिदमत में हाजिर हो जाऊंगा... छोटे जज साहब! इस दफा ऐसे आम के तोहफे होंगे कि आपकी तबीयत खुश हो जाएगी। मलाई और शहद के घूंट न हुए तो मेरा जिम्मा। मैंने लिख दिया है कि छोटे जज साहब के लिए एक टोकरा खासतौर पर भरवा दिया जाए और सवारी गाड़ी से भेजा जाए, ताकि जल्दी और एहतियात से पहुंचे। दस-पंद्रह रोज आपको और इंतजार करना पड़ेगा।''

छोटे जज साहब ने शुक्रिया अदा किया। मुंशी करीम बख्श ने अपनी छतरी उठाई और खुशी-खुशी घर वापस आ गया।

घर में उसकी बीवी और लड़की थी। ब्याह के दूसरे साल लड़की का शौहर मर गया था। मुंशी करीम बख्श की और कोई औलाद नहीं थी, मगर उस छोटे से कुनबे के बावजूद पचास रुपयों में उसका गुजर बहुत ही मुश्किल से होता था। इसी तंगी के कारण उसकी बीवी के तमाम जेवर इन आठ वर्षों में आहिस्ता-आहिस्ता बिक गए थे।

मुंशी करीम बख्श फुजूलखर्च नहीं था। उसकी बीवी और वह बड़े कम खर्चीले थे, मगर इस कमखर्ची के बावजूद तनख्वाह में से एक पैसा भी उनके पास न बचता था। उसकी वजह सिर्फ यह थी कि मुंशी करीम बख्श कुछ लोगों की खिदमत करने में बेहद खुशी महसूस करता था। उन चंद खासुलखास आदमियों की खिदमतगुजारी में, जिनसे उसे आत्मीय लगाव था।

उन खास आदमियों में से एक तो जज साहब के लड़के थे। दूसरे एक और अफसर थे, जो रिटायर होकर अपनी जिंदगी का बाकी हिस्सा एक बहुत बड़ी कोठी में गुजार रहे थे। उनसे मुंशी करीम बख्श की मुलाकात हर रोज सुबह-सवेरे कंपनी बाग में होती थी।

बाग की सैर के दौरान मुंशी करीम बख्श उनसे हर रोज पिछले दिन की खबरें सुनता था। कभी-कभी जब वह बीते हुए दिनों के तार छेड़ देता तो डिप्टी

MAGAZINE KING

सुपरिंटेंडेंट साहब अपनी बहादुरी के किस्से सुनाना शुरू कर देते थे कि किस तरह उन्होंने लायलपुर के जंगली इलाके में एक खूंखार कातिल को पिस्तौल, खंजर दिखाए बगैर गिरफ्तार किया और किस तरह उनके रोब से एक डाकू सारा माल छोड़कर भाग गया।

कभी-कभी मुंशी करीम बख्श के आम के बागों का भी जिक्र आ जाता था, ''मुंशी साहब कहिए, अबकी बार फसल कैसी रहेगी?'' फिर चलते-चलते डिप्टी सुपरिंटेंडेंट साहब यह भी कहते, ''पिछले साल आपने जो आम भिजवाए थे बहुत ही अच्छे थे, बेहद लजीज थे।''

''इंशाअल्लाह, खुदा के हुक्म से अबकी दफा भी ऐसे ही आम हाजिर करूंगा। एक ही बूटे के होंगे। वैसे ही लजीज, बल्कि पहले से कुछ बढ़-चढ़कर ही होंगे।''

उस आदमी को भी मुंशी करीम बख्श हर साल मौसम पर एक टोकरा भेजता था। कोठी में टोकरा नौकरों के हवाले करके जब वह डिप्टी साहब से मिलता और वे उसका शुक्रिया अदा करते तो मुंशी करीम बख्श निहायत नम्रता से कहता, ''डिप्टी साहब आप क्यों मुझे शर्मिंदा करते हैं... अपने बाग हैं। अगर एक टोकरा यहां ले आया तो क्या हो गया! बाजार से आप एक छोड़ कई टोकरे मंगवा सकते हैं। ये आम चूंकि अपने बाग के हैं और बाग में सिर्फ एक बूटा है, जिसके सब दाने घुलावट खुशबू और मिठास में एक जैसे हैं, इसलिए ये चंद तोहफे के तौर पर ले आया।''

आम देने के बाद जब वह कोठी से बाहर निकलता तो उसके चेहरे पर तमतमाहट होती थी, एक अजीब किस्म की रुहानी तस्कीन उसे महसूस होती थी, जो कई दिनों तक उसको मसरूर रखती थी।

मुंशी करीम बख्श इकहरे जिस्म का आदमी था। बुढ़ापे ने उसके बदन को ढीला कर दिया था, मगर यह ढीलापन बदसूरत मालूम नहीं होता था। उसके पतले-पतले हाथों की फूली हुई रगें सर का हल्का-सा कंपन और चेहरे की गहरी लकीरें उसकी मतानत-ओ-संजीदगी में इजाफा करती थीं। ऐसा मालूम होता था कि बुढ़ापे ने उसको निखार दिया है। कपड़े भी वह साफ-सुथरे पहनता था, जिससे यह निखार उभर आता था।

उसके चेहरे का रंग सफेदी माइल जर्द था। पतले-पतले होंठ जो दांत निकल जाने के बाद अंदर की तरफ सिमटे रहते थे, हल्के सुर्ख थे, खून की इस कमी के कारण उसके चेहरे पर ऐसी सफाई पैदा हो गई थी, जो अच्छी तरह मुंह धोने के बाद थोड़ी देर तक कायम रहा करती है।

वह कमजोर जरूर था, पैंसठ बरस की उम्र में कौन कमजोर नहीं हो जाता, मगर इस कमजोरी के बावजूद उसमें कई-कई मील पैदल चलने की हिम्मत थी। खासतौर पर जब आमों का मौसम आता तो वह डिप्टी साहब और छोटे जज साहब को आमों के टोकरे भेजने के लिए इतनी दौड़-धूप करता था कि बीस-पच्चीस बरस के जवान आदमी भी क्या करेंगे।

बड़े ध्यान से टोकरे खोले जाते थे। उनका घास-फूस अलग किया जाता था। दागी या गले-सड़े दाने अलग किए जाते थे और साफ-सुथरे आम नए टोकरों में गिनकर डाले जाते थे। मुंशी करीम बख्श एक बार फिर इत्मीनान करने की खातिर उनको गिन लेता था, ताकि बाद में शर्मिंदगी न उठानी पड़े।

आम निकालते और टोकरों में डालते वक्त मुंशी करीम बख्श की बेटी और उसकी बीवी के मुंह में पानी भर आता, मगर वे दोनों खामोश रहतीं। बड़े-बड़े रस भरे खूबसूरत आमों का ढेर देखकर जब उनमें से कोई यह कहे बगैर न रह सकतीं, ''क्या हर्ज है अगर इस टोकरे में से दो आम निकाल लिए जाएं।'' तो मुंशी करीम बख्श से यह जवाब मिलता, ''और आ जाएंगे इतना बेताब होने की क्या जरूरत है?''

यह सुनकर वे दोनों चुप हो जातीं और अपना काम करती रहतीं।

जब मुंशी करीम बख्श के घर में आमों के टोकरे आते थे तो गली के सारे आदमियों को उसकी खबर लग जाती थी। अब्दुल्लाह नेचाबंद का लड़का, जो कबूतर पालने का शौकीन था, दूसरे रोज ही आ



MAGAZINE KING

धमकता था और मुंशी करीम बख्श की बीवी से कहता था, ''खाला, मैं घास लेने के लिए आया हूं। कल खालूजान आमों के दो टोकरे लाए थे, उनमें से जितनी घास निकली हों, मुझे दे दीजिए।''

हमसाई नूरां, जिसने कई मुर्गियां पाल रखी थीं, उसी रोज शाम को मिलने आ जाती थी और इधर-उधर की बातें करने के बाद कहा करती थी, ''पिछले बरस जो तुमने मुझे एक टोकरा दिया था, बिल्कुल टूट गया है। अबकी भी एक टोकरा दे दो तो बड़ी मेहरबानी होगी।''

दोनों टोकरे और उनकी घास यूं चली जाती।

हस्ब-ए-मा'मूल इस दफा भी आमों के दो टोकरे आए। गले-सड़े दाने अलग किए गए। जो अच्छे थे उनको मुंशी करीम बख्श ने अपनी निगरानी में गिनवा कर नए टोकरों में रखवाया। बारह बजे के पहले यह काम खत्म हो गया। चुनांचे दोनों टोकरे गुसलखाने में ठंडी जगह रख दिए गए, ताकि आम खराब न हो जाएं।

इधर से निश्चिंत होकर दोपहर का खाना खाने के बाद मुंशी करीम बख्श कमरे में चारपाई पर लेट गया।

जून के आखिरी दिन थे। इस कदर गर्मी थी कि दीवारें तवे की तरह तप रही थीं। वह गर्मियों में आमतौर पर गुसलखाने के अंदर ठंडे फर्श पर चटाई बिछाकर लेटा करता था। यहां मोरी के रस्ते ठंडी-ठंडी हवा भी आ जाती थी, लेकिन अबकी इसमें दो बड़े-बड़े टोकरे पड़े थे। उसको गर्म कमरे में ही, जो बिल्कुल तंदूर बना हुआ था, छह बजे



> डाक्टर बुलाने के लिए तीन-चार आदमी दौड़ाए गए थे, लेकिन इससे पहले कि उनमें से कोई वापस आए, मुंशी करीम बख्श जिंदगी की आखिरी सांस लेने लगा।

MAGAZINE KING

तक वक्त गुजारना था।

हर साल गर्मियों के मौसम में जब आमों के ये टोकरे आते, उसे एक दिन आग के बिस्तर पर गुजारना पड़ता था, मगर वह इस तकलीफ को सर झुकाकर बर्दाश्त कर लेता था। करीबन पांच घंटे तक छोटा-सा पंखा बार-बार पानी में तर करके झलता रहता। इंतहाई कोशिश करता कि नींद आ जाए, मगर एक पल के लिए भी उसे आराम नसीब न होता। जून की गर्मी और जिद्दी किस्म की मक्खियां किसे सोने देती हैं।

आमों के टोकरे गुसलखाने में रखवा कर जब वह गर्म कमरे में लेटा तो पंखा झलते-झलते एक दम उसका सर चकराया। आंखों के सामने अंधेरा-सा छाने लगा। फिर उसे ऐसा महसूस हुआ कि उसकी सांस उखड़ रही है और वह सारे का सारा गहराइयों में उतर रहा है। इस किस्म के दौरे उसे कई बार पड़ चुके थे, इसलिए कि उसका दिल कमजोर था, मगर ऐसा जबरदस्त दौरा पहले कभी नहीं पड़ा था। सांस लेने में उसको बड़ी दिक्कत महसूस होने लगी, सर बहुत जोर से चकराने लगा। घबराकर उसने आवाज दी और अपनी बीवी को बुलाया।

आवाज सुनकर उसकी बीवी और बेटी दोनों दौड़ी-दौड़ी अंदर आईं। दोनों जानती थीं कि उसे इस किस्म के दौरे क्यों पड़ते हैं। फौरन ही उसकी बेटी ने अब्दुल्लाह नेचाबंद के लड़के को बुलाया और उससे कहा कि डॉक्टर को बुला लाए, ताकि वह ताकत की सुई लगा दे, लेकिन चंद मिनटों ही में मुंशी करीम बख्श की हालत बहुत ज्यादा बिगड़ गई। उसका दिल डूबने लगा। बेकरारी इस कदर बढ़ गई कि वह चारपाई पर मछली की तरह तड़पने लगा। उसकी बीवी और बेटी ने यह देखकर शोर बरपा कर दिया, जिसकी वजह से उसके पास कई आदमी जमा हो गए।

बहुत कोशिश की गई, उसकी हालत ठीक हो जाए, लेकिन कामयाबी नसीब न हुई। डॉक्टर बुलाने के लिए तीन-चार आदमी दौड़ाए गए थे, लेकिन इससे पहले कि उनमें से कोई वापस आए, मुंशी करीम बख्श जिंदगी की आखिरी सांस लेने लगा। बड़ी मुश्किल से करवट बदल कर उसने अब्दुल्लाह नेचाबंद को, जो उसके पास ही बैठा था, अपने पास बुलाया और डूबती हूई आवाज में कहा, ''तुम सब लोग बाहर चले जाओ। मैं अपनी बीवी से कुछ कहना चाहता हूं।''

सब लोग बाहर चले गए। उसकी बीवी और लड़की दोनों अंदर दाखिल हुईं, रो-रोकर उनका बुरा हाल हो रहा था। मुंशी करीम बख्श ने इशारे से अपनी बीवी को पास बुलाया और कहा, ''दोनों टोकरे आज शाम ही डिप्टी साहब और छोटे जज साहब की कोठी पर जरूर पहुंच जाने चाहिए। पड़े-पड़े खराब हो जाएंगे।''

इधर-उधर देखकर उसने बड़े धीमे लहजे में कहा, ''देखो, तुम्हें मेरी कसम है, मेरी मौत के बाद भी किसी को आमों का राज मालूम न हो। किसी से न कहना कि ये आम हम बाजार से खरीद कर लोगों को भेजते थे। कोई पूछे तो यही कहना कि दीनानगर में हमारे बाग हैं... बस... और देखो जब मैं मर जाऊं तो छोटे जज साहब और डिप्टी साहब को जरूर इत्तिला भेज देना।''

चंद लम्हात के बाद मुंशी करीम बख्श मर गया। उसकी मौत से डिप्टी साहब और छोटे साहब को लोगों ने खबर कर दिया, मगर दोनों कुछ मजबूरियों के कारण जनाजे में शामिल न हो सके।

हिंदी रूपांतर : खुर्शीद आलम

गर्म हवा का झोंका या अधूरी ख्वाहिशें

कमला का पति राज्य परिवहन विभाग में ड्राइवर था। दिल का दौरा पड़ने से उसकी मौत हो गई और कमला अकेली पड़ गई। दो साल की बेटी का पालन-पोषण करना था तो आशंकित होते हुए भी उसने बस कंडक्टर की नौकरी कर ली। वक्त गुजरता रहा। एक दिन कमला नौकरी से घर लौटी तो दरवाजा खुला था और बेटी दीपा घर में नहीं थी। और फिर...

ममता वी.

MAGAZINE KING



''ओ ये कंडक्टर मैडम, आप ए.सी. का किराया वसूल रही हैं, लेकिन ए.सी. काम नहीं कर रहा है।'' एक यात्री ने अपना पास दिखाते हुए शिकायती लहजे में कहा।

''सर, आप बस में अंदर आकर पहले बैठ जाओ। ए.सी. पूरी तरह से ठीक है। 42 डिग्री तापमान में आपको ए.सी. की ठंडक मिलने में थोड़ा समय लगेगा।'' कमला ने उसे सलाह दी।

इस बात को देखते-देखते ग्यारह साल बीत गए, जब कमला ने अपने पति की मृत्यु के बाद बस कंडक्टर की नौकरी शुरू की थी। कमला का पति राज्य परिवहन विभाग में एक ड्राइवर था और नींद में दिल का दौरा पड़ने से उसकी मौत हो गई थी। वह युवावस्था में ही चल बसा और उसके जाते ही कमला पर जिम्मेदारियों का पहाड़ टूट पड़ा था। वह नौकरी करने के बारे में आशंकित थी, फिर भी उसने नौकरी की, क्योंकि उसे अपनी दो साल की बेटी दीपा का पालन-पोषण करना था। वह न तो किसी से सहायता चाहती थी और न ही दया।

इसी नौकरी में उसने बोलना सीखा था। छुट्टे पैसों को लेकर मोलभाव करने, भीड़ में धक्का-मुक्की कर आगे निकलने और सम्मान करने की कला को जाना था। हालांकि वह केवल बारहवीं कक्षा तक ही पढ़ पाई थी, लेकिन हर तरह के यात्रियों का सामना करते हुए उसने अपनी जरूरत की दुनिया भर का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उसे अपना हल्के भूरे रंग का कोट काफी पसंद था, जिसे वह अपने कुर्ते के ऊपर पहनती थी। यह कोट उसके लिए दबंगता का कवच था। जब उसने नौकरी शुरू की थी, तब एक महिला का बस कंडक्टर बनना किसी आश्चर्य से कम नहीं था। वह छोटे कद की और अच्छी दिखने वाली

युवती थी, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में कमला ने अपनी बातों से अनचाहा ध्यान आकर्षित करना सीख लिया था।

चीजें कितनी बदल गई हैं। छात्रों, कार्यालय जाने वालों, गृहिणियों, बुजुर्ग सज्जनों और निट्ठल्ले इनसानों से भरी पुरानी बसें उसकी जिंदगी का हिस्सा थीं। कॉलेज के छात्र सुबह जोश और उत्साह से भरे होते थे और शाम को शांत और थके हुए दिखते थे। बसें अब वातानुकूलित हैं और बस के अंदर होने वाली सामान्य बातचीत अब स्मार्ट फोन के प्रति लोगों की एकाग्रता ने ले लिया है।

''लड़कियों, आप दोनों को अगले स्टॉप पर उतरना है।'' कमला ने ईयरफोन बांटकर फोन पर वीडियो देखने में व्यस्त कॉलेज की दो युवा लड़कियों को हाथ से हिलाते हुए कहा।

''हम जानते हैं चाची!'' छोटी लड़की ने बिना ऊपर देखे ही जवाब दिया।

''तुम लोग इस बात का ध्यान क्यों नहीं रखती कि तुम अभी कहां हो और तुम्हें कहां जाना है। क्या तुम्हें पता है कि यह खतरनाक हो सकता है?'' कमला ने आश्चर्य से पूछा।

''चाची चिल, हम अपने घर का रास्ता जानते हैं।'' छोटी लड़की ने उठते हुए कहा।

अब शाम के चार बज चुके थे और शिफ्ट बदलने के लिए बस डिपो की ओर जा रही थी। यह कमला के घर वापस आने से पहले वॉशरूम जाने का भी समय था। अपनी नौकरी के इन ग्यारह सालों में कमला ने इन जरूरी चीजों पर नियंत्रण करना सीख लिया था। बस थोड़ा-सा पानी पीना, शरीर को हाइड्रेटेड रखने के लिए पर्याप्त होता है और इससे बाथरूम जाने की जरूरत भी महसूस नहीं होती है।

जन्म 10 मार्च, 1971 को विजयवाड़ा में। कलाकर्म के अलावा मनोविज्ञान तथा दर्शन में भी गहरी पकड़ है। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय, टीआईएसएस व केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद की पूर्व छात्रा रह चुकी हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कहानियां प्रकाशित। 'चेंज मेकर और सोशल इनोवेटर' के रूप में सम्मानित।



कमला की ड्यूटी सुबह सात बजे शुरू होती है। इसके लिए उसे सुबह पांच बजे उठकर तैयार होना, जल्दी से नाश्ता बनाना और दीपा तथा खुद के लिए चावल और करी का लंच पैक करना पड़ता था। वह इस बात से खुश थी कि उसे अपने घर के सबसे पास का बस रूट आवंटित किया गया था और वह केवल बीस मिनट की तेज चाल से अपने बस डिपो में पहुंच जाती थी। लेकिन वापस जाते समय आज इसी रास्ते में उसे तीस मिनट लगेंगे, क्योंकि उसे बाजार से सब्जियां भी खरीदनी हैं। वह खुद को याद दिलाती है, आज उसे आम खरीदना चाहिए, क्योंकि दीपा को आम बहुत पसंद हैं।

कमला ने अपने भूरे रंग के बैग में जमा सभी सिक्कों और नोटों की गिनती की और बेची गई टिकटों की संख्या के साथ पूरी राशि को जमा कर दिया। वह रजिस्टर के साथ तैयार थी, ताकि हस्ताक्षर करने में लगने वाले समय में से कुछ मिनट बचा सके।

''रवि अन्ना!'' कमला ड्राइवर के पीछे वाली सीट पर बैठते हुए बोली... ''मैं कल छुट्टी ले रही हूं।''

''क्यों कमला?'' रवि ने पूछा।

''कल दीपा का जन्मदिन है। वह तेरह साल की हो जाएगी।''

''ओह, मैं पूरी तरह से भूल गया था! तुम्हारे जाने से पहले मैं उसके लिए एक चॉकलेट खरीद लूं...

कमला ने जरूरी चीजों पर नियंत्रण करना सीख लिया था। बस थोड़ा-सा पानी पीना, शरीर को हाइड्रेटेड रखने के लिए पर्याप्त होता है। इससे बाथरूम जाने की जरूरत भी महसूस नहीं होती है।

MAGAZINE KING



और हां, आज बस की पार्किंग में तुम्हें मदद करने की कोई जरूरत नहीं है, मैं खुद कर लूंगा।''

''धन्यवाद अन्ना!''

जैसे ही बस डिपो के अंदर गई, कमला ने जल्दी से पैसों के हिसाब-किताब को निपटाया और फिर वॉशरूम चली गई। वह बाहर आती, उसके पहले ही रवि एक चॉकलेट खरीद चुका था और वॉशरूम के बाहर उसका इंतजार कर रहा था।

''मेरी तरफ से दीपा को आशीर्वाद देना कमला! क्या तुम चंद्रम के प्रस्ताव के बारे में दोबारा नहीं सोच सकती? कब तक तुम अकेले उसकी देखभाल करोगी?''

सिर झुकाए, कमला ने चुपचाप चॉकलेट ले ली और वहां से जाने से पहले उसे अपने पर्स में रख लिया। गर्मी की तपन उसके घर तक उसके साथ रही।

तीस मिनट में कमला अपने घर के मुख्य दरवाजे के सामने थी। लेकिन यह क्या, दरवाजे पर ताला नहीं लगा था और दरवाजा आधा खुला हुआ था। वह यह देखकर काफी घबरा गई। उसने सब्जियों का थैला वहीं गिराया और अपने कमरे, रसोई और बाथरूम के हर कोने में दीपा की तलाश की। लेकिन वह कहीं नहीं थी। ''दीपा... दीपा...'' वह चिल्लाते हुए घर से बाहर की ओर भागी।

''अम्मा... मैं यहां हूं, बस एक पेन खरीदने दूकान पर गई थी।'' तेजी से घर लौट रही दीपा ने कमला से कहा।

''मैंने तुम्हें घर पर ही रहने और दरवाजे को हमेशा बंद रखने के लिए कहा था। तुम घर से बाहर क्यों गई? तुमने मेरे आने का इंतजार क्यों नहीं किया, मैं भी तुम्हारे साथ चलती!''

''शांत हो जाओ अम्मा! मैं अब तेरह साल की हूं, मैं अपना खयाल रख सकती हूं।''

''अभी पूरे तेरह साल की नहीं हुई हो और तुम नहीं जानती कि समय कितना बदल गया है। तुम्हें हमेशा सावधान रहने की जरूरत है। समझ में आया या नहीं!''

''छोड़ो अम्मा! मुझे पता है कि कब सावधान रहना है। आप मुझे कमजोर होना कैसे सिखा सकती हो? मैं तुम्हें हर दिन देखती हूं और जानती हूं कि कैसे बहादुर बनना है।''

कमला ने अपनी बेटी को ध्यान से देखा, उसे आत्मविश्वास से भरी एक लड़की और एक महिला दिखाई दी। दीपा अपनी किताबों की ओर झुकी, उसका चेहरा गर्मी की नमी से गीले बालों के साथ उलझा हुआ था। क्या वह बहादुर थी? सचमुच में बहादुर थी? क्या दीपा की नजरों में वह ऐसी थी? इसके विपरीत, कमला ने खुद में एक एकांत जीवन जी रही महिला को देखा था, जो एक लक्ष्यविहीन और साधारण महिला बने रहना चाहती थी। क्या वह दीपा को भी अपने जैसा बनाने की कोशिश कर रही थी?

बहुत मुश्किल से कमला इन विचारों से बाहर निकली–''दीपा, मैं कल पायसाम बना रही हूं। क्या कुछ और है, जो मैं तुम्हारे लिए बना सकती हूं? ये

> दीपा अपनी किताबों की ओर झुकी, उसका चेहरा गर्मी की नमी से गीले बालों के साथ उलझा हुआ था। क्या वह बहादुर थी? सचमुच में बहादुर थी? क्या दीपा की नजरों में वह ऐसी थी?

लो... रवि मामा ने तुम्हारे लिए चॉकलेट भेजा है। क्या हम फिल्म देखने के लिए जा सकते हैं? कल के लिए मैंने छुट्टी ले ली है।''

''अम्मा, कल मेरी कोचिंग क्लास है और मैं इसे छोड़ना नहीं चाहती। रविवार को चलते हैं, ठीक है? आपने छुट्टी क्यों ले ली? अब छुट्टी ले ली है तो घर पर आराम क्यों नहीं करतीं?'' दीपा ने अपनी किताबों पर झुकते हुए कहा।

अचानक छोटे-से कमरे में खामोशी और शांति छा गई।

दीपा अपनी कुर्सी से उठी और अपनी मां को गले से लगा लिया। ''अम्मा, ऐसा कुछ नहीं है। आप जानती हैं कि मैं क्या कहना चाहती हूं? मैं पढ़ना चाहती हूं। आप हमेशा से काम कर रही हैं। आपको भी कुछ आराम मिलना चाहिए। आप रवि मामा के परिवार के साथ फिल्म देखने क्यों नहीं चली जातीं?''

''ठीक है, मैं इसके बारे में सोचूंगी'', कमला ने दीपा के माथे पर आए पसीने को पोंछते हुए कहा।

कमला फिर से रवि अन्ना की बातों के बारे में सोचने लगी। शायद उसे चंद्रम के प्रस्ताव के बारे में सोचना चाहिए। इसलिए नहीं कि वह दीपा का पालन-पोषण खुद नहीं कर सकती थी, लेकिन शायद इसलिए कि एक साथी के होने से सब अच्छा होगा। रैक पर सब्जियों को सजाकर रखते हुए उसने दीवार पर लगे छोटे दर्पण में अपनी एक झलक देखी। दर्पण में उसे एक शांत महिला की छवि दिखाई पड़ी, जिसके कानों के पास की कुछ सफेदी को छोड़कर उसमें उम्र की कोई निशानी नहीं थी।

कमला कुछ देर तक खुद को लगातार देखती रही, तभी उसकी बेटी के शब्द उसके दिमाग में घूमने लगे...''मैं आपको हर दिन देखती हूं और बहादुर बनना सीखती हूं।'' यही वह क्षण था जब कमला ने महसूस किया कि उसकी ताकत में किस चीज की कमी थी और वह हमेशा से साहसी ही थी। ●

MAGAZINE KING



प्रतिभा गुप्ता

जेब

सर्दी की ठिठुरती सुबह में,
मैंने देखा एक पागल बूढ़े को
कूड़े से चावल अलग करते हुए।
मुझे देख वह जल्दी-जल्दी
हाथ चलाने लगा
और भरने लगा अपनी शर्ट की
अधखुली जेब में।
मैं उसकी जेब पर–
कविता लिखना चाहता था,
उस बूढ़े पागल की जेब में
दुनिया के सबसे कीमती चावल थे
और न जाने क्या-क्या–
छुपाए फिरता था।
मैंने सोचा
क्यों न मैं ही उसकी जेब हो जाऊं
या फिर घुस जाऊं–
उसकी जेब के अंदर,
पर उसके लिए तो मुझे
उस बूढ़े व्यक्ति का हाथ होना पड़ेगा।
खुद बूढ़े को नहीं पता था कि
क्या-क्या है उसकी जेब में,
सिर्फ उसके हाथ जानते थे।
मुझे उसकी जेब में झांकना था
एक बार
क्या इसके लिए मैं
चावल बन सकता हूं?
यदि चावल बनना है,
तो मुझे धान बनना पड़ेगा
और यदि धान बन गया तो,
मुझे पानी भी चाहिए होगा
और यदि किसी प्रकार
मैं चावल बन भी गया तो,
क्या वह बूढ़ा पागल मुझे बीनेगा
या उससे पहले ही
मुझे कुत्ते खा जाएंगे?
यह सोचकर
चकरा उठा मेरा सिर,
अगली सुबह मैं फिर गया
वह बूढ़ा पागल मुझे नहीं दिखा।
मैंने देखा वहां कूड़े पर,
कौवों ने घेर रखा था
और आसमान में वह बूढ़ा पागल
उड़ रहा था...बिना जेब के।



नरेश दुआ

कर्तव्य पथ

मन साध लो
तन साध लो
बाकी सब सध जाएगा।
कर्तव्य पथ पर प्रदर्शित
बल भुजाओं का
प्रतिफल जब-जब पाएगा।
दुर्गम राहों पर चलना
एक दिन बरबस याद आएगा।

भाग्य नहीं बनते
सिर्फ भाग्य से।
स्वर स्वयं नहीं निकलते
वाद्य से।
कर्मबल जब मिल जाता
वैराग्य से
परचम लहरा जाता तब
सौभाग्य से।

अपने को पहचान लो
इस देही से कुछ काम लो
मिट्टी,
मिट्टी हो जाएगी
उससे पहले कुछ ठान लो।
एक बीज डाल दो,
ऊसर में,
नहीं रखती धरती मां स्वयं में
तुम कार्य करो केवल अपना
पूर्ण हो जाएगा...
सपना!

सभी चित्रांकन : डी. श्रीनिवास





गीता गुप्ता 'मन'

बेबस

यूं तो रास्ते कई थे
जिंदगी में
पर मैंने तुम्हें चुना
एतबार था मुझे
मेरे फैसले पर
पर शायद
तुम्हें नहीं था
यकीन मेरी चाहत पर
हो भी कैसे...
जाने कितने शीशे
तोड़ चुकी थी
पर दिल तो आखिर
दिल है ना...
कोई कांच का टुकड़ा नहीं
जिसे कोई तोड़ दे...
हर लम्हा मैंने तुम्हें सोचा
तुम्हारी बातों को
अपना कहा...
हर शख्स में तुम्हें ढूंढ़ा...
हर रात तुम्हारे सपने देखे
इतना मुश्किल भी नहीं था
विश्वास करना...
पर जाते समय तूने
मुड़कर भी नही देखा...
और मैं दोराहे पर
अकेली खड़ी रह गई।
तन्हा, बेबस...



सूचना

यह स्तंभ उन प्रतिभाशाली युवा कवियों को प्रोत्साहित करने के लिए है, जिनकी रचनाएं अच्छी होने के बावजूद अभी तक उचित मंच नहीं पा सकी हैं। 35 वर्ष तक की उम्र के ऐसे सभी रचनाकारों का इस स्तंभ में स्वागत है।

संपादक

MAGAZINE KING



रघुवीर सहाय

प्रसिद्ध रचनाकार रघुवीर सहाय का जन्म 9 दिसंबर, 1929 को उत्तर प्रदेश के लखनऊ में हुआ। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं की पत्रकारिता के अलावा वे 'दिनमान' के प्रधान संपादक भी रहे। उनकी रचनाओं में आम आदमी की व्यथा एक विशिष्ट पत्रकारीय प्रभाव के साथ दिखाई देती है। उन्होंने हिंदी जगत् को लगभग डेढ़ दर्जन महत्त्वपूर्ण कृतियां दीं। सन् 1982 में 'लोग भूल गए हैं' कविता संग्रह पर साहित्य अकादमी सम्मान से नवाजे गए। 30 दिसंबर, 1990 को उनका निधन हुआ।

हंसो हंसो जल्दी हंसो



सभी चित्रांकन : डी. श्रीनिवास

हंसो हंसो जल्दी हंसो
हंसो तुम पर निगाह रखी जा रही है

हंसो अपने पर न हंसना क्योंकि–
उसकी कड़वाहट पकड़ ली जाएगी
और तुम मारे जाओगे
ऐसे हंसो कि बहुत खुश न मालूम हो
वरना शक होगा–
कि यह शख्स शर्म में शामिल नहीं
और मारे जाओगे

हंसते हंसते–
किसी को जानने मत दो किस पर हंसते हो
सबको मानने दो कि तुम–
सबकी तरह परास्त होकर
एक अपनापे की हंसी हंसते हो
जैसे सब हंसते हैं बोलने के बजाय

जितनी देर ऊंचा गोल गुंबद गूंजता रहे, उतनी देर
तुम बोल सकते हो अपने से
गूंज थमते थमते फिर हंसना
क्योंकि तुम चुप मिले तो प्रतिवाद के जुर्म में फंसे
अंत में हंसे तो तुम पर सब हंसेंगे–
और तुम बच जाओगे

हंसो पर चुटकलों से बचो
उनमें शब्द हैं
कहीं उनमें अर्थ न हों–
जो किसी ने सौ साल साल पहले दिए हों
बेहतर है कि जब कोई बात करो तब हंसो
ताकि किसी बात का कोई मतलब न रहे
और ऐसे मौकों पर हंसो
जो कि अनिवार्य हों
जैसे गरीब पर किसी ताकतवर की मार
जहां कोई कुछ कर नहीं सकता
उस गरीब के सिवाय
और वह भी अकसर हंसता है

हंसो हंसो जल्दी हंसो
इसके पहले कि वह चले जाएं
उनसे हाथ मिलाते हुए
नजरें नीची किए
उसको याद दिलाते हुए हंसो
कि तुम कल भी हंसे थे !



निवेदिता झा

जन्म बिहार के ठाकुरगंज में। फिलहाल अंबेडकर हॉस्पिटल, दिल्ली में काउंसलर हैं। इसके अलावा मैथिली-भोजपुरी अकादमी की भी सदस्य हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं निरंतर प्रकाशित। हिंदी में चार तथा मैथिली में दो कविता संग्रह प्रकाशित। कई प्रतिष्ठित सम्मानों से नवाजी जा चुकी हैं।

युद्ध के बारे में सोचते लोग

मनन-चिंतन के बाद
नहीं होते कभी युद्ध



ये प्रक्रिया काल की सबसे
विचलन की अवस्था
परिणाम के विरुद्ध
और जीवन के खिलाफ
होती है हर बार
तभी तारीखें बदलती
धरातल का स्वरूप
और तरीके भी
मन में उठते तूफान और
अंतर्द्वंद
समय–
टुक-टुक ताकते आंखों को
थकाता
फिर भी फड़कती भुजा
और निकल पड़ते हैं–
कुछ लोग
यमुना सिंधु या इराक की रेत वाली नदी
बुदबुदाती है कि
युद्ध के बारे में सोचते लोग–
अच्छे नहीं होते !

तुम लड़का तो नहीं

तुम्हारा दूध रोटी खाना
जूता मोजा पहनना
स्कूल का बैग टांगना
अच्छा लगता है मुझे
तुम लेकिन लड़का तो नहीं
अम्मा कहती थी
दूध बकरी वाला भैया का
छाली भात के अंदर बाबू का
पहला कौर राजा बेटा लेगा
मां यह भी कहती थी
तुम तो मेरी रानी हो
मेरे साथ रहोगी खेत में
डांगर हांकेंगे
सफेदी करने हम साथ-साथ
नया फ्रॉक सरहुल पर
इस बार चांदनी जब उतरेगी
सखुए के पेड़ के तले,
तू गाना गाना
भैया बाबा सो जाएंगे गहरी नींद
तेरी लोरी सबसे सुरीली है मुन्नी !

MAGAZINE KING



पुरुषोत्तम व्यास

जन्म : 20 जून, 1972 को महाराष्ट्र के नागपुर में। कविता इनकी प्रिय विधा है। दैनिक टिब्यून, दैनिक भास्कर, नवभारत, राजस्थान पत्रिका, लोकमत समाचार, अमर उजाला, प्रभात खबर, साहित्य अमृत, हैलो हिंदुस्तान, युद्धरत आम आदमी, परिकथा आदि विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं निरंतर प्रकाशित।

कब बदला...अपने को

कब बदला...अपने को
खुश लग रही हो
किस नभ में घूम आई हो ?
तारों से भरी निशा...में
चांद से मिल आई हो !

बादल पर कविता

बादल पर
लिखी कविता
उस मरुस्थल वाले कवि ने
जैसे...
तुमसे प्यार कह नहीं पाता...

तुम चंदन नहीं हो

तुम चंदन नहीं हो
फिर भी
कितनी सुंगधित हो...
तुम मधु नहीं
फिर भी कितनी मीठी हो
तुम्हें मालूम किस कारण
तुम्हारे हृदय में प्यार !

तुम आई

तुम आई
झट से बारिश हो गई
झट से धरा सुगंधित...
हो गई...

मेरा प्रेम

मेरा प्रेम
सूरजमुखी के फूलों
की तरह...

मुलाकात

फिर उससे मुलाकात
होगी...
अंधरों पर मुस्कान
होगी...
फिर चमकेगा चंद्रमा
हृदय की हर बात
होगी...

सहारा

फिर तुम्हारा सहारा
मिला...
फिर काटों के संग
नया-नया गुलाब खिला !



एक स्त्री के स्वयं चेतन होने की यात्रा



अल्प विराम (उपन्यास)

लेखिका :उषा प्रियंवदा
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली; मूल्य : 299 रुपये



नीरज भूषण

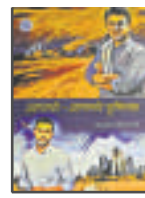
पचपन खंभे लाल दीवारें', 'रुकोगी नहीं राधिका', 'शेष यात्रा', 'अंतर्वंशी', 'भया कबीर उदास' जैसे चर्चित उपन्यासों और 'जिंदगी और गुलाब के फूल', 'एक कोई दूसरा' जैसे प्रशंसित कहानी संग्रहों की लेखिका उषा प्रियंवदा शहरी जीवन के विंडबनाओं की कुशल चितेरी हैं। उनके कथा साहित्य में शहरी परिवारों के जीवन का जो अनुभूतिपूर्ण चित्रण होता है, वह विलक्षण है। उन परिवारों की उदासी, ऊब, अकेलापन, द्वंद्व उनके उपन्यासों और कहानियों में स्पष्ट देखे जा सकते हैं। उनकी कहानी 'वापसी' इसका एक क्लासिक उदाहरण है।

उषा प्रियंवदा के रचना-संसार में प्रवासी भारतीय समाज भी प्रचुरता में मौजूद है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि वह स्वयं लंबे समय प्रवासी हैं। विदेश में रह कर उन्होंने प्रवासी जीवन को बहुत नजदीक से देखा है, उसको अनुभव किया है और यह अनुभव-संसार उनकी रचनाओं में अनायास ही पूरी सूक्ष्मता के साथ उपस्थित है। उन्होंने अपने इन उपन्यासों में स्त्री-विमर्श को भी बड़े सलीके से पेश किया है।

उनका नवीनतम उपन्यास 'अल्पविराम' भी एक युवा स्त्री के मानसिक संघर्ष की गाथा है। यह कहानी शिंजिन की, उसके पहले पति प्रवाल और दूसरे पति हल्दीपुरी की है। एक डिप्टी कलेक्टर की बेटी का विवाह बिना उसका मन जाने मात्र 17-18 साल की उम्र में कर दिया जाता है। ठीक वैसे ही जैसे हमारे समाज में असंख्य लड़कियों की शादी कर दी जाती है और यह मान लिया जाता है कि उनकी सहमति जरूरी नहीं है। इस तरह उपन्यास की नायिका उन असंख्यों लड़कियों का प्रतिनिधित्व करती है। शादी के तीन दिन बाद ही लड़की का पति पीएच.डी. करने के लिए अमेरिका के बोस्टन शहर चला जाता है। कुछ दिनों बाद खबर आती है कि पति समुद्र में डूब कर मर गया। उसने अपने पति को ठीक से देखा भी नहीं था। वह समझ नहीं पाती कि वह दुखी है या तटस्थ। फिर वह अपने कलेक्टर भाई और मां के साथ कुछ समय के लिए अमेरिका चली जाती है। वहां स्त्रियों के उन्मुक्त जीवन को देख कर वह खुद को बदलने के लिए कोशिश करती है। काफी हद तक बदलती भी है। एक दिन अचानक वह भारत लौट आती है और अपने से दुगनी उम्र के एक विद्वान और समृद्ध व्यक्ति से विवाह कर लेती है। कुछ समय बाद फिर परिस्थितियां बदलती हैं और वह जीवन के दोराहे पर खड़ी हो जाती है। लेकिन इस बार वह एक समर्थ स्त्री की तरह अपने लिए निर्णय लेती है।

MAGAZINEKING

अपने समय का चित्र उकेरती कहानियां



अपनी-अपनी दुनिया (कहानी संग्रह)

लेखक : अवधेश श्रीवास्तव
प्रकाशक : अमन प्रकाशन, 104-ए/80 सी, रामबाग, कानपुर, उत्तर प्रदेश; मूल्य : 400 रुपये

धर्मेंद्र सुशांत

अवधेश श्रीवास्तव उन प्रमुख कहानीकारों में शामिल हैं, जिनका नाम हिंदी कहानी के परिदृश्य पर आठवें दशक में उभरा था। जन-सामान्य की जद्दोजहद भरी जिंदगी को जिस विश्वसनीयता से उन्होंने अपनी कहानियों में उकेरा उसने उन्हें अलहदा पहचान दी। अब तक उनकी चार दर्जन से अधिक कहानियां छप चुकी हैं, जिनमें 'भ्रष्ट होता भविष्य', 'जख्म', 'दरार', 'आवाज', 'सीने में ठुकी कील', 'विमल मेहता सेकिंड' आदि कहानियां खासी चर्चित रहीं। प्रस्तुत संग्रह में इन कहानियों समेत उनकी चुनिंदा पंद्रह कहानियां संकलित हैं।

अवधेश के लिए कहानी कहना अपने सामाजिक सरोकारों को अभिव्यक्त करना है। उन्होंने अपने किरदारों से ऐसी कोई दूरी बनाकर नहीं रखी, जिससे ऐसा लगे कि कहानीकार ने जो कुछ लिखा है, वह उसका देखा या सुना हुआ है। इसके बजाय ये कहानियां पूरी शिद्दत से यह एहसास दिलाती हैं कि यह सब कहानीकार का अपना भोगा हुआ है। उनकी कहानियों के अधिकतर किरदार निम्न मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय हैं, जिनका जीवन एक ओर खुद को जिलाए रखने के लिए जरूरी सरंजाम जुटाने के लिए संघर्ष करते गुजरता है तो दूसरी ओर अपनी मानवीय अस्मिता को बचाए रखने की लड़ाई लड़ते। इस रूप में देखें तो अवधेश अपनी कहानियों के जरिये अपने समय का चित्र उकेरते हैं, जिसमें असंतोष, बेचैनी, विरोध, प्रतिवाद और दुख के मुकाबले शांति और निश्चिंतता कम है। यह बिल्कुल स्वाभाविक है, क्योंकि इनकी कहानियों में हमारा परिचय जिन लोगों से होता है उनमें से ज्यादातर न केवल सुख-साधन से दूर हैं, बल्कि उनकी सहज मानवीय गरिमा भी सुरक्षित नहीं है। लेकिन इससे यह समझना सही नहीं होगा कि वे लाचार और नियति के भरोसे बैठे लोग हैं। वस्तुतः वे प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए बदलाव का स्वप्न देखते हैं।

ये उस दौर की कहानियां हैं जब मजदूरों के हक की बात करने, स्त्रियों के अधिकार और आजादी की बात करने और सामाजिक बदलाव की बात करने को लेखक वर्ग अपनी प्राथमिक जिम्मेदारी समझता था। यह अवधेश की कहानियों में स्पष्ट नजर आता है। इस लिहाज से देखें तो यह वह आदर्श है, जो भले ही आज फैशन के बाहर की चीज मान ली गई है, लेकिन जिसकी जरूरत आज भी है।

यह उपन्यास एक स्त्री के आज्ञाकारी बेटी, आज्ञाकारी बहन और समर्पित पत्नी से एक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में रूपांतरित होने की यात्रा है। यह यात्रा भारत और अमेरिका, दो देशों में चलती है। नायिका बार-बार अपने अस्तित्व को तलाशती रहती है। अपने जीवन की सार्थकता को लेकर खुद से प्रश्न करती रहती है। इस कहानी में भारी-भरकम दर्शन नहीं है, लेकिन जीवन के सुख-दुख, उतार-चढ़ाव, विडंबनाएं पूरी रोचकता के साथ मौजूद हैं।

एक तरफ यह अमेरिकी संस्कृति के उदात्त मूल्यों, खासकर स्त्रियों की आजादी, आधुनिकता, वैश्विकता, तरक्की को पाठकों के सामने पेश करती है, तो उसकी ऐतिहासिक विरासत की न्यूनता का भी संकेत करती है। इसी संदर्भ में लेखिका भारत की ऐतिहासिक समृद्धि की ओर भी इशारा करती हैं। हालांकि यह मूल रूप से एक प्रेम कहानी है, बाकी चीजें उस प्रेम कथा को पूर्णता प्रदान करने, उसे गाढ़ा करने के लिए हैं। इस उपन्यास में एक यात्रा चलती रहती है, अनवरत। इस यात्रा में इतिहास भी है और साहित्य भी, खासकर रूसी साहित्य और साहित्यकारों के संदर्भ काफी हैं।

इस उपन्यास में भी उषा प्रियंवदा ने स्त्रीवाद का झंडा बुलंद किए बगैर स्त्रियों की बात को संवेदनशील और प्रभावी तरीके से रखा है। स्त्रियों के जीवन की सार्थकता के प्रश्न को भी किसी वाद से परे हटकर देखने की कोशिश की है। इसी क्रम में स्त्रियों द्वारा विवाह आदि अवसरों पर गाए जाने वाले गीतों के संदर्भ में वे एक स्त्री पात्र विचित्रा मौसी के माध्यम से कहती हैं- 'घुट कर रह जाती थीं औरतें... विवाह, गर्भ यही अवसर होते थे, जिनमें गीतों द्वारा वे अपने को एक्सप्रेस कर सकती थीं। ...यह एक साइकोलॉजिक अभिव्यक्ति होती थी। इसी तरह स्त्रियां जीवन में संतुलन रख पाती थीं।'

यह उपन्यास है तो यह एक अभिजात्य वर्ग की कहानी, पर इसे सिर्फ उसी खांचे में रख कर देखना इसके साथ अन्याय होगा, क्योंकि इसमें लेखिका ने सुहास, जमुना और राजकुमार जैसे पात्रों के जरिये सामान्य मनुष्यों के जीवन की बात भी की है। ये अवांतर कथाएं मूल कथा को विस्तार प्रदान करती हैं। राजकुमार की कथा समाजिक स्थिति के आधार पर होने वाले अन्यायों की झलक पेश करती है, तो सुहास की कथा एक स्त्री की यौन अतृप्ति का संवेदनशील चित्र प्रस्तुत करती है। उपन्यास की एक पात्र अतिमा के माध्यम से उन्होंने भारतीय समाज में जाति प्रथा की गहरी जड़ों पर भी कटाक्ष किया है कि सोच किसी की भी निम्न हो सकती है, चाहे वह अशिक्षित हो या उच्च-शिक्षित, निर्धन हो या संपन्न।

उपन्यास का कथानक और भाषा-शैली रोचक है। कई बार ऐसा लगता है, मानो कोई फिल्म देख रहे हों। कथा में प्रवाह है और बोझिलता रंचमात्र भी नहीं। इस उपन्यास में हर पीढ़ी से कनेक्ट करने की क्षमता है। यह रोचक और पठनीय उपन्यास है।

किताबें मिलीं

1. सिहरन (कविता संग्रह), डॉ. अंजु दुआ जैमिनी, अयन प्रकाशन, 1/20, मेहरौली, नई दिल्ली; मूल्य : 280 रुपये

2. शोध दिशा : डॉ. शेरजंग गर्ग स्मृति अंक, सं. : डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार, बिजनौर, उ. प्र.; मूल्य : 300 रुपये

3. दूसरी हथेली पर (कविता संग्रह), मीना सिंह, अवध भारती, प्रकाशन, लोक सदन, नरौली, हैदरगढ़, बाराबंकी, उ. प्र.; मूल्य : 150 रुपये

4. नई सुबह (कहानी संग्रह), रामेंद्र कुशवाहा, समय साक्ष्य प्रकाशन, 15, फालतू लाइन, देहरादून, उत्तराखंड; मूल्य : 80 रुपये

5. छोटी होती दुनिया (काव्य संग्रह), सुशील राकेश, उत्कर्ष प्रकाशन, 142, शाक्य पुरी, कंकरखेड़ा, मेरठ कैंट, उत्तर प्रदेश; मूल्य : 200 रुपये

MAGAZINE KING



रुक जाना नहीं

लेखक : कुलदीप राघव
प्रकाशक : रैडग्रेब, 942, आर्यकन्या चौराहा, मुट्ठीगंज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश; मूल्य : 125 रुपये

मोहब्बत के कई रंग समेटे 'इश्क मुबारक'

ज्योति राघव

इश्कबाजों के लिए इश्क में मिला सुख या दुख हर भाव मुबारक होता है। कुलदीप राघव की किताब 'इश्क मुबारक' प्रेम की एक ऐसी ही कहानी है। व्यक्ति के मन में किसी के प्रति जब प्रेम फूटता है तो उम्र, रिश्ते, जिम्मेदारियां, समाज सब पीछे छूटने लगते हैं। राघव की इस किताब में प्यार का कुछ ऐसा ही रंग है।

किताब मेरठ के एक छोटे से गांव के रहने वाले मीर मलिक की कहानी है। बचपन में पिता का निधन और फिर जवानी में मां का साया उठ जाने के बाद, तमाम पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को पार कर मीर रॉकस्टार बनने के सपने को पूरा करता है। इस सफर में उसकी जिंदगी कई मोड़ लेती है। इसी कड़ी में उसकी जिंदगी में होती है साहिबा की आमद। मीर और साहिबा दोनों एक-दूसरे की जिंदगी में तमाम नए रंग भरते हैं। साथ हंसते हैं, साथ रोते हैं। बावजूद इसके कुछ है जो छूटता जाता है और जिंदगी शून्य पर आ जाती है। किताब के अंत में लेखक ने समाज को एक संदेश और युवाओं को एक सबक देने की कोशिश की है। हालांकि प्रेम में सबक जैसी बातें बेमानी ही होती हैं, मगर किताब में नायक और नायिका के जरिये प्रेम के एक रूप से रूबरू कराया गया है। कहानी प्यार के अलग-अलग रंग दिखाती है। आज के बदलते परिवेश में प्रेम का जो तरीका बदल रहा है, लेखक ने उस पहलू पर भी प्रकाश डाला है।

प्रेम का कौन-सा तरीका सही होता है, कौन-सा गलत या इसके परिणाम अच्छे होंगे या बुरे, यह बात प्रेमियों को प्रभावित नहीं करती, लेकिन जिंदगियां किस तरह प्रभावित हो सकती हैं, इसे लेखक ने बताने की कोशिश की है। दिलचस्प बात यह है कि कहानी को लेकर उन्होंने खुद कोई राय नहीं गढ़ी, बल्कि पाठक को इस बात की स्वतंत्रता दी है।

किताब को सरल भाषा के साथ रोचक अंदाज में लिखा गया है। नायक-नायिका के संवाद काफी शानदार हैं। कहीं-कहीं आम-बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल है, जिससे किताब पढ़ते हुए कुछ दृश्य वास्तविक लगते हैं। लेखक ने कवि दिनेश रघुवंशी और विष्णु सक्सेना की कविताओं को भी दृश्यों के साथ जोड़ा है, जिससे कहानी का प्रवाह और दिलचस्प बन गया है। कुलदीप राघव का यह दूसरा उपन्यास है। इससे पहले वह 'आई लव यू' उपन्यास के लिए चर्चा बटोर चुके हैं। कहानी कहने का उनका अंदाज पाठक को बांधे रखता है।

...कविता भी घर लौट रही है

अरुण कुमार जैमिनि

स्त्रियां घर लौटती हैं...और अन्य कविताएं (कविता संग्रह)



लेखक : विवेक चतुर्वेदी
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन,
4695, 21-ए,
दरिया गंज,
नई दिल्ली
मूल्य : 199 रुपये

बचपन की धुंधली यादें आज भी कुछ-कुछ याद हैं। शरारत करने पर पीटते-पीटते मां खुद रोने लगती थी। बड़ा अजीब लगता था। मां पीट भी रही है और रो भी रही है। जबकि चोट हमें लग रही थी। रोना तो हमें चाहिए। रोते हम भी थे। हमारे पास उसका वाजिब कारण भी था। लेकिन मां क्यों रोती है? यह उम्र बढ़ने के साथ-साथ समझ आया।

ऐसी ही एक और याद है। शरारत करने पर मां का पिटाई करना। पिटते हुए मां से ही 'मम्मी मुझे बचा लो' की गुहार लगाना। आज यह सब सोचकर ही हंसी आ जाती है कि पीटनेवाले से ही बचाने की मिन्नतें करना। आज सोचता हूं कि ऐसा क्यों था? इसका जवाब कुछ-कुछ समझ में आता है। आप ऐसी उम्मीद एक स्त्री से ही कर सकते हैं कि वह आपको सजा भी दे और आपको उससे बचा भी ले। चाहे वह मां के रूप में हो या फिर कहीं किसी और रूप में हो।

आप सोच रहे होंगे कि क्या बात है, बड़ा प्यार उमड़ रहा है मां पर? इसका एक कारण है। यह कारण बनाया है–'स्त्रियां घर लौटती हैं...और अन्य कविताएं' पुस्तक ने। खासतौर पर संग्रह की स्त्री पर केंद्रित कविताओं ने। कवि विवेक चतुर्वेदी का पहला कविता-संग्रह। भले ही यह इनका पहला संग्रह है, लेकिन इनमें शामिल कविताओं की तासीर इसे बेहद खास बना देती है। विवेक अपनी जिम्मेदारी को बखूबी समझते हैं, इसलिए पहला संग्रह लाने में इतना वक्त लिया। एक बात यह भी है कि वे संकोची स्वभाव के हैं, लेकिन यहां इस संकोच का परिणाम अच्छा है।

संग्रह में 56 कविताएं हैं। अलग-अलग भाव बोध की। कुछ कविताएं भले ही आकार में छोटी हैं, लेकिन अपनी सघनता के कारण बड़ी बन जाती हैं। 'मीठी नीम', 'मां', 'पिता', 'प्रार्थना की सांझ', 'मां को खत', 'उसकी प्रार्थना में' और 'रुदन'-जैसी कविताएं इसकी बानगी हैं।

स्त्री है.../जो बस रात की/नींद में नहीं लौट सकती/उसे सुबह की चिंताओं में भी/लौटना होता है... इस संग्रह की यह शीर्षक कविता है। एक पुरुष की स्त्री पर लिखी बेहतरीन कविता। इसमें एक तरह से एक स्त्री की पूरी जीवन यात्रा समाई हुई है। एक औरत के लिए दिन में सिर्फ वही दिन शामिल नहीं होता है, बल्कि रात को सोते समय अगले दिन चिंताएं भी शामिल होती हैं। स्त्री पूरे घर की धुरी होती है, इसलिए बकौल कवि औरत का घर लौटना धरती का अपनी धुरी पर लौटना होता है। 'शोरूम में काम करनेवाली लड़की' कविता में एक आम लड़की के जीवन की जद्दोजहद को पूरी शिद्दत से उकेरा है।

इस संग्रह को पढ़ने के बाद अंत में इतना ही, सिर्फ स्त्रियां ही नहीं, कविता भी घर लौट रही है।

MAGAZINE KING

काबिलेगौर कुछ और

विविध छटाओं की संभावनाशील गजलें



रागिनी वर्मा

डॉ. ब्रिजेश माथुर सहज भाषा में गहन संवेदना की गजलें लिखते हैं। उनका संग्रह 'और निखर जाऊंगा' को पढ़ते हुए इसे आप महसूस कर सकते हैं। कुल 104 गजलों में जीवन के विविध रंगों की छटाएं देखी जा सकती हैं। छोटे बहर में भी माथुर साहब अच्छी गजलें कहने का माद्दा रखते हैं। मसलन–*दिल एक गारा रहे। चाक का बस इशारा रहे/मैं रहूं दश्त की तीरगी, तू फलक का सितारा रहे।* इन गजलों में अतीत की सुखद स्मृतियां हैं तो वर्तमान का यथार्थ भी। श्रृंगार का अपना अलग और जीवंत आस्वाद है। इन गजलों में परंपरा से प्रगतिशीलता की ओर की एक यात्रा आप पाएंगे। यकीनन इन्हें संभावनाशील शायरी का एक अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

और निखर जाऊंगा (गजल संग्रह), शायर : डॉ. ब्रिजेश माथुर, प्रकाशक : अभिनव प्रकाशन फर्स्ट फ्लोर, 56,कचहरी रोड, अजमेर; मूल्य : 150 रुपये

शताब्दी वर्ष पर उपयोगी संचयन



इंद्रेशा समीर

किसी समाचार पत्र की जीवन-यात्रा में शताब्दी वर्ष एक बड़ी परिघटना है। बात 'कर्मवीर' जैसे पत्र की हो तो यह कुछ और विशिष्ट हो जाती है। 'कर्मवीर' आजादी की मशाल लेकर चलने वाले पत्रों में अग्रणी था। यह उन गिनेचुने पत्रों में था, जिसके पन्नों ने क्रांतिधर्मा पत्रकारिता का सर्वश्रेष्ठ रचा। इसके शताब्दी वर्ष के मौके पर 'कर्मवीर के सौ साल' शीर्षक से एक बेहतरीन संचयन प्रकाशित हुआ है। संपादकीय और पूर्वपीठिका ही पठनीयता का आभास करा देते हैं। चयनित सामग्री अतीत में वर्तमान तक का आस्वाद है। इसके पन्नों में दर्ज इबारत में कई ऐसे सवाल उभरते देखे जा सकते हैं, जो आज के भारत के लिए भी कम प्रासंगिक नहीं हैं।

कर्मवीर के सौ साल, संपादक : विजयदत्त श्रीधर, 10, पत्रकार कॉलोनी, मेनरोड नं.-3, भोपाल, मध्य प्रदेश; मूल्य : 300 रुपये

अमूर्तन नहीं, चाक्षुष दुःख की कविताएं



नीलम

कवि-कथाकार-फिल्मकार अभिज्ञात का नया कविता संग्रह है-कुछ दुःख कुछ चुप्पियां। इस संग्रह की कविताएं दुःख और चुप्पियों के इतने रूपों को हमारे सामने रखती हैं कि हैरत होती है। इस संग्रह की कविताओं की सबसे खास बात उनका चाक्षुष होना है। कवि कहीं दुःख के अमूर्तन में नहीं जाता बल्कि उसका विस्तार कर देता है। प्रसिद्ध कवि केदारनाथ सिंह ने इन कविताओं के बारे में ठीक ही कहा कि गालिब की तरह अभिज्ञात भी टूटने की आवाज का स्वागत करते कवि हैं। दरअसल, टूटने की आवाज ही इन कविताओं का सौंदर्य है जो जीवन के छोटे-छोटे दुःखों और चुप्पियों को सघन कर देता है। बेशक ये कविताएं हमें अपनी ओर खींचती हैं।

कुछ दुःख कुछ चुप्पियां, कवि: अभिज्ञात, प्रकाशक: बोधि प्रकाशन, सी-46 सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन, नाला रोड, जयपुर। मूल्य: 100 रुपये

पुस्तक लोकार्पण और परिचर्चा

कादम्बिनी क्लब गुरुग्राम द्वारा राज्य शैक्षिक अनुसंधान केंद्र के अन्वेषण कक्ष में हरियाणा साहित्य अकादमी की पूर्व निदेशक व राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त डॉ. मुक्ता कृत दो पुस्तकों 'परिदृश्य चिंतन के' और 'हाशिये के उस पार' का लोकार्पण और उन पर परिचर्चा का आयोजन किया गया।

क्लब संचालिका सुरेखा शर्मा द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार हरियाणा साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ. पूरणमल गौड़ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में स्टारैक्स युनिवर्सिटी के उपकुलपति डॉ. अशोक दिवाकर, रेडियो स्टेशन पलवल के निदेशक डॉ. मुकेश गंभीर, वरिष्ठ साहित्यिकार डॉ. सविता चड्डा व दूरदर्शन के उपनिदेशक डॉ. अमरनाथ अमर जैसे



विद्वान् मौजूद रहे।

कवयित्री वीना अग्रवाल की सरस्वती वंदना के बाद हिंदीसेवी स्व. मुकुल शर्मा और शिक्षाविद् मोहनलाल 'सर' की स्मृति में मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सरोज शर्मा, डॉ. बीना राघव, अशोक दिवाकर, सविता चड्डा, डॉ. मुकेश गंभीर आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

विमोचन के साथ काव्य निशा

वरिष्ठ साहित्यकार अनंगपाल सिंह भदौरिया 'अनंग' रचित दो पुस्तकों का विमोचन एवं काव्य निशा का आयोजन पिछले दिनों कादम्बिनी क्लब ग्वालियर के तत्त्वावधान में किया गया।

प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार



डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य रहे। अध्यक्षता जगदीश तोमर ने की। विशिष्ट अतिथि राम गोपाल भावुक व हरिओम गौतम रहे। इस सत्र में पुस्तक 'अक्षय आश्रय' की समीक्षा राजकिशोर वाजपेयी एवं डॉ. सनीता पाठक ने किया। पुस्तक 'संस्कृति विमर्श' की समीक्षा लालता प्रसाद दोहरे एवं डॉ. ज्योत्सना सिंह राजावत ने की। संचालन रामलखन शर्मा ने व आभार प्रदर्शन किंकरपाल सिंह ने किया। द्वितीय सत्र में काव्य निशा का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता डॉ. भगवत भट्ट ने की। मुख्य अतिथि राजेश शर्मा व विशिष्ट अतिथि राजकिशोर वाजपेयी, जगदीश गुप्त व एस. के. दीक्षित रहे।

चिकित्सा समाजसेवा के साथ पुस्तक लेखन

कादम्बिनी क्लब बस्ती द्वारा पटेल एस.एम.एच. हॉस्पिटल के प्रांगण में ख्यातिलब्ध चिकित्सक एवं समाजसेवी डॉ. वी. के. वर्मा की नवीनतम पुस्तक 'भाव-मंथन' पर चर्चा का आयोजन किया गया।

क्लब संयोजक कृष्णकुमार उपाध्याय ने कहा कि आज के दौर में लेखन एक बड़ी चुनौती है। लेखक ने बड़ा काम किया है। मुख्य अतिथि प्रेमचंद साहित्य एवं जन कल्याण संस्थान के संस्थापक सत्येंद्रनाथ मतवाला ने कहा कि शिक्षा, चिकित्सा, समाजसेवा के साथ ही पत्रकारिता और पुस्तक लेखन का कार्य एक बड़ी साधना है, जिसे अपने जीवन में डॉ. वी. के. वर्मा ने सहज ही उतार लिया है। चर्चा में सामाजिक कार्यकर्ता चंद्रमणि पांडेय, जन कल्याण सेवा समिति के अध्यक्ष जयप्रकाश गोस्वामी, रणविजय सिंह, वाहिद अली सिद्दीकी, बृजवासीलाल शुक्ल, सुशील श्रीवास्तव, मोहम्मद सामईन फारुकी आदि ने भी विचार व्यक्त किए।



सदन के समक्ष साहित्यकार

कादंबिनी क्लब हैदराबाद के तत्त्वावधान में स्थानीय मदनदेवी कीमती सभागार में आयोजित कादंबिनी क्लब की 331वीं मासिक में गोष्ठी कुमार अंबुज के रचनाकर्म पर चर्चा की गई। क्लब संयोजिका डॉ. अहिल्या मिश्र एवं मीना मुथा ने बताया कि इस अवसर पर प्रथम सत्र में प्रो. शुभदा वांजपे, अतिथि साहित्यकार कुमार अंबुज, अवधेश कुमार सिन्हा मंचासीन हुए। ज्योति नारायण ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। इसके बाद प्रो. शुभदा वांजपे व कुमार अंबुज का अंगवस्त्र से सम्मान किया गया। इसमें डॉ. रमा द्विवेदी, ज्योति नारायण, डॉ. हरजिंदर सिंह लाल्टू, प्रदीप भट्ट, सुहास भटनागर, अवधेश कुमार सिन्हा ने सहयोग दिया ।

डॉ. अहिल्या मिश्र ने स्वागत भाषण में कहा कि संस्था ने रजत जयंती के बाद प्रथम सत्र में 'सदन के समक्ष साहित्यकार' का नया प्रयोग किया और सभा में इसे सराहना मिल रही है। संगोष्ठी का संचालन करते हुए अवधेश कुमार सिन्हा ने कुमार अंबुज का परिचय दिया।

प्रवीण प्रणव ने वार्तालाप का आरंभ करते हुए अंबुज से कुछ जरूरी सवाल पूछे। ज्योति नारायण, सुभाष भटनागर, डॉ. सुरेश कुमार मिश्र आदि ने भी विचार रखे। दूसरे सत्र में कविगोष्ठी का आयोजन हुआ।



कादम्बिनी क्लब

यह स्तंभ देश भर के कादम्बिनी क्लबों को समर्पित है। इसमें क्लब की गतिविधियों के समाचार तथा क्लब-सदस्यों की रचनाएं प्रकाशित की जाती हैं। क्लब अपने समाचार और रचनाएं ईमेल अथवा डाक से संपादकीय पते पर भेज सकते हैं।

– संपादक

MAGAZINE KING



MAGAZINE KING

प्रकृति का उत्सव
असम का बोहाग बिहू

बिहू असम का लोक पर्व है। प्रेम, उत्साह और आत्मदान का अनूठा मेल है इसमें। कृषि-संस्कृति की फसल कटाई का भी यह त्योहार है। असमिया नववर्ष बसंतोत्सव के इसी पर्व से शुरू होता है। बिहू की रोचक जानकारी दे रही हैं लेखिका



रीता तिवारी

प्रेम चिंतन की एक शाश्वत धारा है। जब प्रेम प्रवाह अपनी उछाह लेने लगे और मन को इतना सरस बना दे कि वह एक पूर्ण सलिला की तरह प्रवाहित होने लगे तो समझ लीजिए बसंत, जी नहीं, बोहाग बिहू का समय आ गया है। हर ओर, बिहू, बिहू, बिहू और बिहू। बस यही एक चित्र, यही एक शब्द, यही एक शोर पूरे असम में दिखाई-सुनाई देता है।

चैत्र माह के अंतिम और वैशाख (बोहाग) के पहले छह दिन उमंग और उत्साह के महासमुद्र होते हैं। इस उत्साह पर्व या बसंतोत्सव को बोहाग बिहू या रंगाली बिहू का नाम दिया जाता है। प्रेम, उल्लास और आत्मदान का अनूठा मेल इस अवसर पर गाए जाने वाले गीतों का मुख्य भाव है। चेहरे बदलते हैं, लेकिन साल दर साल और भी युवा होता जाता है बिहू पर्व।

ऐसा लगता है असमिया संस्कृति में इस लोकोत्सव ने उत्साह और मर्यादा अनूठा सामंजस्य तलाश लिया है। इस मौके पर शब्द ध्वनित होने लगते हैं–''छते गए गए बोहाग पालेहि, फूलिले भेवेली लता, कैनो कथा कइले आरके ने परे आमार बिहूरे रे कथा...'' यानी जितना भी कहो खत्म नहीं



होती हमारी बिहू कथा। एक और गीत है–''बिहू आनंदिया, बिहू आनंदिया, बिहूर मऊ मीठा हात, बिहूर बा लागी बिहूआ कोकेर-ऐ, देऊ धुनी लागुसे गात...'' यानी बिहू आनंद से भरा है, बिहू सुंदर है, बिहू के गीत बड़े मीठे हैं, जब बिहू की हवाएं बहती हैं तो देह खुद ही नृत्य करने के लिए मचल उठती है...बिहू सिर्फ हिंदू और असमिया ही नहीं मनाते, असम का पूरा जनसमुदाय इसके रंगों में सराबोर हो जाता है।

इस दौरान जगह-जगह बने मंच पर युवक-युवतियां सामूहिक नृत्य करते हैं। बिहू में पुरुष और महिला दोनों अलग-अलग संरचनाओं में नृत्य करते हैं। लेकिन बावजूद इसके इस नृत्य में लय और तालमेल बेहद अहम और लाजवाब होता है। इस दौरान गीतों के जरिये बिहू की महिला का बखान किया जाता है। ऐसे ही एक गीत में कहा जाता है–

''बोहाग नोहोये माथो एटी ऋतु, नहय बोहाग एटि माह।

असमिया जातिर इ आयुष रेखा गण जीवनोर इ साह।''

यानी, वैशाख केवल एक ऋतु ही नहीं, न ही यह एक महीना है, बल्कि यह असमिया जाति की जीवनरेखा और सामान्य जनजीवन का साहस है।

वैसे, तो असम में साल भर के दौरान तीन बार इस उत्सव का आयोजन किया जाता है, लेकिन बोहाग बिहू ही इनमें सबसे प्रमुख है। इस दौरान पूरे राज्य के लोग ही नहीं, बल्कि पेड़-पौधे व पहाड़ भी मानो सजीव हो उठते हैं। पहले तो यह उत्सव पूरे एक महीने तक चलता था। लेकिन जिंदगी की आपाधापी ने अब इसे एक सप्ताह तक सीमित कर दिया है। इस एक सप्ताह के दौरान राज्य में सब कुछ

> बिहू के दौरान ही युवक-युवतियां अपना मनपसंद जीवनसाथी भी चुनते हैं और अपनी जिंदगी नए सिरे से शुरू करते हैं। राज्य की ज्यादातर शादियां बिहू के तुरंत बाद वैशाख महीने में ही होती हैं।

MAGAZINE KING



बिहूमय हो उठता है। उस समय फसलें कट चुकी होती हैं, नए सीजन की तैयारियां शुरू होने में कुछ समय होता है। इस बीच के समय को ही उत्सव के तौर पर मनाया जाता है। इस त्योहार के दौरान कई खेलों का आयोजन भी किया जाता है जैसे–बैलों की लड़ाई, मुर्गों की लड़ाई और अंडों का खेल आदि। बिहू के पहले दिन को गाय बिहू के तौर पर मनाया जाता है। इस दिन लोग सुबह अपनी-अपनी गायों को नदी में ले जाकर नहलाते हैं। गायों को नहलाने के लिए रात में ही भिगोकर रखी गई उड़द की दाल और कच्ची हल्दी का इस्तेमाल किया जाता है। उसके बाद वहीं पर उनको लौकी और बैंगन खिलाया जाता है। माना जाता है कि ऐसा करने से गायें साल भर स्वस्थ रहती हैं। शाम के समय गाय को उसकी जगह पर नई रस्सी से बांधा जाता है और तरह-तरह के औषधि वाले पेड़-पौधे जलाकर मच्छर-मक्खियों को भगाया जाता है।

दूसरा दिन साफ-सुथरे नए कपड़े पहनने का दिन होता है। इस दिन बुजुर्गों को सम्मान दिया जाता है और लोग पैर छूकर उनसे आशीर्वाद लेते हैं। तमाम लोग खुशी के साथ नए साल को बधाई देने के लिए रिश्तेदारों और दोस्तों के घर जाते हैं। पारंपरिक असमिया गामोछा को सम्मान का प्रतीक माना जाता है। इस दिन लोग एक-दूसरे को यह गमछा ओढ़ाते हैं।

बिहू के दौरान ही युवक-युवतियां अपना मनपसंद जीवनसाथी भी चुनते हैं और अपनी जिंदगी नए सिरे से शुरू करते हैं। यही वजह है कि राज्य की ज्यादातर शादियां बिहू के तुरंत बाद वैशाख महीने में ही होती हैं। बिहू के समय में गांव में तरह-तरह के खेल-तमाशों का आयोजन किया जाता है।

बिहू की शुरुआत सबसे पहले कब हुई, इसका कहीं कोई साफ जिक्र नहीं मिलता, लेकिन समझा जाता है कि ईसा से लगभग साढ़े तीन हजार साल पहले इसका आयोजन शुरू हुआ। बिहू के दौरान राज्य में जगह-जगह मंच बनाकर सात दिनों तक बिहू गीत व नृत्य का आयोजन किया जाता है। लोग नए कपड़े पहनते हैं। सरकारी दफ्तरों में भी छुट्टियां होती हैं। फसलों की सफल कटाई का जश्न मनाते हुए मनाए जाने वाले इस पर्व में नारियल, चावल, तिल, दूध का इस्तेमाल पकवान बनाने के लिए प्रमुखता से किया जाता है। इस दौरान प्यार व आदर जताने के लिए लोग एक-दूसरे को अपने हाथों से बुने हुए गमछे भी भेंट करते हैं। यह उत्सव अमूमन हर साल 14 अप्रैल से शुरू होता है। असमिया नववर्ष भी इसी दिन से शुरू होता है।

बिहू गीतों का असमिया साहित्य पर भी गहरा असर है। रामायण के अनुवादक माधवदेव और शंकरदेव भी इसके असर से नहीं बच सके थे। बिहू के दौरान राज्य में जगह-जगह बिहू कुंवरी या बिहू सुंदरी प्रतियोगिता का भी आयोजन होता है। इसमें बेहतर नृत्य करने वाले को सम्मानित किया जाता है। असम में बोहाग बिहू शुरू होने के पहले से ही घर-घर से बिहू गीतों की गूंज हवा में समाने लगती है।

(वरिष्ठ लेखिका)

क्या छात्रों को राजनीति से दूर रहना चाहिए?

पक्ष : हां

आज की तारीख में छात्रों को राजनीति से अवश्य ही दूर रहना चाहिए। यह सच है कि अतीत में छात्र राजनीति ने देश की राजनीति को दिशा दी है, लेकिन तब छात्र व नेता दोनों ही अनुशासित होते थे। आज की स्थिति उसके विपरीत है। शिक्षण संस्थानों में छात्र राजनीति की उपस्थिति और उनकी अनिवार्य सदस्यता की वजह से ही छात्र अनुशासनहीन होते जा रहे हैं व बेलगाम पशुओं की तरह व्यवहार कर रहे हैं और छात्र राजनीति नहीं, तो रैगिंग भी नहीं! दूसरे, छात्र राजनीति के चलते माहौल खराब का होना, उच्छृंखलता का बढ़ना आदि प्रवृत्तियां बढ़ती जा रही हैं।

बिना छात्र राजनीति के स्कूलों में अच्छा अनुशासन है और अच्छी पढ़ाई हो पा रही है। उल्टे छात्र राजनीति की उपस्थिति से कॉलेज की पढ़ाई में जब-तब व्यवधान पड़ता है व अनुशासन भंग होता रहता है। अतः क्यों न छात्र राजनीति को ही समाप्त कर दिया जाए? आखिर, सरकार कॉलेजों में ऐसी कमियां ही क्यों रहने दे जिनकी पूर्ति के लिए छात्र राजनीति की जरूरत महसूस हो? इन तमाम कमियों को सत्र शुरू होने से पहले ही दूर कर दिया जाए, तो इससे ज्यादा बेहतर होगा। तात्पर्य यह है कि शिक्षण संस्थानों में छात्र राजनीति में शामिल होने की अनिवार्यता हटा ली जाए। छात्र चाहें, तो स्वेच्छा से इसके सदस्य बन सकते हैं।

सुरेश प्रसाद
पवित्र नगर, डाकघरः चंपासारी, सिलीगुड़ी,
जिलाः दार्जिलिंग-734003 (प. बं.)

विपक्ष : नहीं

छात्रों को राजनीति से कदापि दूर नहीं रहना चाहिए, क्योंकि राजनीति नेतृत्व का गुण देती है। इससे विद्यार्थी भईरू, शरमीला व किताबी कीड़ा बनने की बजाय–अग्रगामी, प्रभावशाली, साहसिक, लोकतांत्रिक, उत्तरदायी एवं जन-सेवा करनेवाला जागरूक युवा बन जाता है, जो यह ठीक से समझता है कि जीवन लड़ाई किस तरह लड़ी व जीती जाती है। विद्यार्थी जीवन ही है जहां उसे अपने अंदर ऐसे सभी गुणों को विकसित करना चाहिए जो उसे सफल जीवन बिताने के योग्य बना सकें। गौरतलब है कि यदि छात्रों के राजनीति व आंदोलनों में शामिल होने की मनाही होती, तो क्या आज विभिन्न राजनीतिक दलों के इतने सारे राजनेता होते?

आज भी छात्र राजनीति की जरूरत और महत्त्व पूरा है। यूं भी शिक्षा का तात्पर्य केवल 'साक्षर' बनना नहीं, बल्कि व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास से है और राजनीति ऐसा ही यथआर्थवादी एवं प्रयोगवादी प्लेटफॉर्म, छात्रों के लिए है।

डॉ. हर्ष वर्द्धन कुमार
सृष्टि रूपा भवन, सरस्वती लेन, पूर्वी लोहानीपुर,
कदमकुआं, पटना-800003 (बिहार)

स्वस्थ व नीतिगत राजनीति उचित है

तीसरा पत्र

किसी भी देश का भविष्य निःसंदेह उसके योग्य नेताओं पर निर्भर करता है। यह भी सत्य है कि नेता एक दिन में नहीं बनते। यह एक कला है, एक गुण है। छात्र जीवन में राजनीति एक तरह से शुरुआत है जो आगे बढ़कर देश की राजनीति में राह दिखाने में सहायक होती है, परंतु प्रत्येक विधा की एक सीमा होती है। छात्र-राजनीति भी इससे विलग नहीं है। यदि ये राजनीति सीमित रहेगी, तो इसकी सतरंगी आभा होगी जो सबके हित में होगी, जैसे कि टेनिस, फुटबॉल आदि खेल सीमा के अंदर ही खेले जाते हैं और सीमा के बाहर निकलने के विभिन्न परिणाम होते हैं, उसी तरह छात्र राजनीति सीमा के अंदर ही शोभा देती है और इसे कभी भी देश के विरुद्ध नीति के रूप में नहीं अपनाना चाहिए। एक स्वस्थ एवं नीतिगत छात्र राजनीति सर्वथा उचित है।

रत्ना माथुर
फ्लैट नं.: 71, सेक्टरः 28,
नौएडा-201303

क्या स्वास्थ्य सेवाओं को सार्वजनिक क्षेत्र में ही रहना चाहिए?

नया विषय

हाल के कुछ सालों में जिस तरह स्वास्थ्य सेवाओं का निजीकरण हुआ है, उसमें एक आम आदमी की इन तक पहुंच मुश्किल हो गई है। जबकि निजीकरण के समर्थकों का मानना है कि निजीकरण से स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर हुई हैं। सवाल यह है कि कैसे आम आदमी तक बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाई जाएं?

अपनी राय हमें 200 शब्दों में **20 अप्रैल, 2020** तक भेज दें। इसके बाद मिले पत्रों को हम शामिल नहीं कर पाएंगे। उत्तर इस पते पर भेजिए–**मतांतर,**
संपादक : कादम्बिनी,
हिन्दुस्तान मीडिया वेंचर्स लिमिटेड (एच एम वी एल),
आकृति बिल्डिंग,फर्स्ट फलोर, सी-164, सेक्टर-63,
नोएडा, जिला-गौतमबुद्ध नगर-201301

MAGAZINE KING

राजनीति में आना चाहिए

विशेषज्ञ की राय



मोहन प्रकाश

विद्यालयों या महाविद्यालयों में समाज से विद्यार्थी आता है, वह अध्ययन करता है, अध्ययन से उसका क्या उद्देश्य होता है? यह गांधीजी ने भी कहा है कि–अध्ययन करने के दो उद्देश्य हैं, एक–ज्ञान प्राप्त करना और दूसरा है–जीविका के लिए तैयार होना। अब प्रश्न यह है कि जब कोई विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने किसी विश्वविद्यालय में आता है, तो वह उन सारे विषयों को भी पढ़ता है जो कल विश्वविद्यालय से वापस समाज में जब जाएगा, तो एक नजरिया लेकर जाएगा।

अब सवाल यह है कि राजनीति क्या है? राजनीति में जो विभिन्न विचारधाराएं हैं, वे विभिन्न नजरिये हैं, उनको देखने का एक दृष्टिकोण है। जब कोई व्यक्ति विश्वविद्यालय से निकलकर बाहर जाएगा, तो उसको समाज के अंदर जितनी तरह की तमाम स्थितियां हैं, उनसे उसे गुजरना पड़ेगा, और उसके लिए वह अगर विश्वविद्यालय में तैयार नहीं होगा, तो बाहर आकर कैसे तैयार हो पाएगा, इसीलिए राजनीतिक विचारधारा को समझना और उसके बाद अपने जीवन के लिए एक नजरिया बनाना, ताकि वह समाज में अपनी भूमिका को निर्वाह कर सके, यह जरूरी हो जाता है। इसलिए मेरा मानना है कि राजनीति में हरेक विद्यार्थी को रुचि रखनी चाहिए। आजादी की लड़ाई में आखिर गांधीजी ने क्यों कहा कि विश्वविद्यालय छोड़कर समाज में आएं, क्योंकि उनकी जिम्मेदारी समाज के लिए है, और यह क्यों जरूरी है, क्योंकि उनको पूरा जीवन समाज में ही गुजारना है, अतः समाज की जो परिस्थितियां हैं उनमें उनको संघर्ष करना पड़ सकता है, इसलिए विश्वविद्यालय से आनेवाला लड़का या लड़की समाज के प्रति अपनी भूमिका का सही निर्वाह अगर नहीं करता है, तो इस देश का लोकतंत्र कैसे मजबूत होगा? दूसरा, यह भी कि लोग कहते हैं कि छात्र नहीं होना चाहिए, ठीक है। आप अठारह साल की उम्र में लड़के-लड़की को वोटिंग का अधिकार दे रहे हैं। 21 साल और 25 साल में चुनाव लड़ने की इजाजत दे रहे हैं, ऐसे में अगर वह नौजवान अपना एक नजरिया नहीं बनाएगा, तो देश का लोकतंत्र भला कैसे मजबूत होगा? क्योंकि समाज की, जो लोकतांत्रिक व्यवस्था है, जिसे हम कह सकते हैं 'पार्लियामेंटरी फॉर्म ऑफ डेमोक्रेसी' और दूसरा है–'प्रेजीडेंशियल फॉर्म ऑफ डेमोक्रेसी' और जो शासन है वह एक तरीके से देश के अंदर जो लोकतंत्र है, उसकी प्रथम शिक्षा छात्र संघ से ही मिलती है। अगर इस देश में युवा लोकतांत्रिक मूल्यों में अभ्यास नहीं करेंगे, तो आगे आनेवाले दिनों में लोकतांत्रिक मूल्यों को वे कैसे जी पाएंगे?

(लेखक पूर्व छात्र नेता और कांग्रेस महासचिव हैं)

MAGAZINE KING

कुछ और चिट्ठियां...

विद्याध्ययन के उपरांत ही छात्र में स्वस्थ राजनीति की समझ विकसित होती है, वैचारिक साम्राज्य स्थापित होता है। अतएव छात्रों को राजनीति से छात्र जीवन में सर्वथा दूर ही रहना चाहिए, क्योंकि यह जीवन परिवर्तन की अंतर्दृष्टि का जीवन है, यथार्थवादी जीवन का चिंतन है।

कमल चतुर्वेदी
विदिशा (म. प्र.)

सबसे अच्छा तो यह होता कि छात्रों को राजनीति ही नहीं, बल्कि हर उस चीज से दूर रखा जाता जो उनका ध्यान पढ़ाई-लिखाई से भटका सकती हो। छात्रों को राजनीति एवं राजनीतिक कार्यों, धरना, प्रदर्शन, नारेबाजी, जुलूस या अन्य ऐसी ही मिलती-जुलती गतिविधियों से जितना हो सके दूर रहना चाहिए। यह समय तो उनके अपना करियर बनाने का होता है, न कि दलगत राजनीति के दंद-फंद में उलझकर समय नष्ट करने का, अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए दूषित होती जा रही राजनीति से दूर ही रहना चाहिए।

इंद्रजीत कौशिक
बीकानेर (राज.)

छात्रों का मुख्य कार्य तो एकाग्रचित्त होकर अपनी पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान देना होता है, उन्हें अपने जीवन-लक्ष्य को पाना होता है, ऐसे में अगर वे आज की तिकड़मी राजनीति से जुड़ते हैं तो वे सीधे तौर पर अपनी ऊर्जा और समय को ही खराब करते हैं, क्योंकि राजनीति में तो धनबल, बाहुबल एवं वंशवाद चल रहा है। बल्कि वे लोकतंत्र की सेवा अन्य कई बेहतर विकल्पों के द्वारा भी कर सकते हैं।

नीता सिन्हा
पटना (बिहार)

आज की राजनीति में निजी लाभ और स्वार्थ हावी हैं। अगर कुछ अपवादों को छोड़ दें तो आज राजनीति में अनैतिकता और सत्ता लोलुपता व्याप्त है। ऐसे माहौल में छात्रों को राजनीति में परिलक्षित बुराई और स्वार्थ के खिलाफ मुखर होने की जरूरत है।

युगल किशोर
रांची (झारखंड)

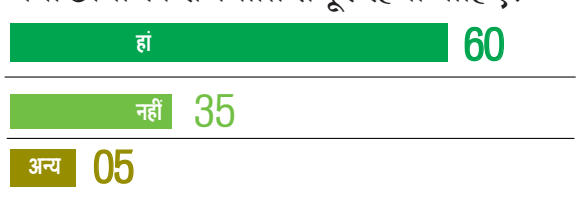
छात्रों के लिए राजनीति का प्राथमिक ज्ञान जैसे संविधान, मतदान व चुनावों से संबंधित जानकारी परम आवश्यक है, तभी तो वे आगे जाकर कर्मठ व कुशल राजनेता सिद्ध हो सकते हैं।

मोहन जगदाले
उज्जैन (म. प्र.)

देश की राजनीति में अपना योगदान देते हुए छात्रों को देश के नेतृत्व को सही दिशा दिखाने की जिम्मेदारी अवश्य उठानी चाहिए।

राजेश सहाय
रोहिणी (नई दिल्ली)

क्या छात्रों को राजनीति से दूर रहना चाहिए?



प्रतिमाओं में शापित प्रतिमान

कुछ लोगों को समाजसेवा का बड़ा शौक होता है क्योंकि राजनीति में ऊंचा मुकाम हासिल करने में यह बड़ा काम आती है। अब समाजसेवा का ऐसा है कि कुछ न हो तो सरकारी पैसे की लूट-खसोट कर पार्क में किसी बड़े नेता की प्रतिमा ही लगवा दी जाती है। राजनीति में जगह पाने का यह आसान तरीका है, लेकिन इसके बाद उस प्रतिमा की जो दुर्गति होती है वह कहने लायक नहीं



अलंकार रस्तोगी

विउनको बहुत जोरों की समाज सेवा लगी थी। जिसे रोक पाना अब उनके लिए मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन भी हो रहा था। उन्होंने तय किया कि मोहल्ले के जिस पार्क में खेलकर बच्चे लोग नाहक ही अपना समय और ऊर्जा बर्बाद करते हैं उसी पार्क के बीचोबीच में वह एक महान व्यक्तित्व की प्रतिमा लगवाएंगे। उनकी प्रबल कर्मठता और राजनीति के सबल संबंध काम आए। सरकार के जिम्मेदार और ईमानदार अधिकारियों ने समाज हित के लिए मनचाही रकम निर्गत कर दी।

समुचित नोच-खसोट के बाद पार्क के बीच में एक बहुत बड़े बजट से अपेक्षाकृत एक कम बड़ी प्रतिमा स्थापित हो गई। प्रतिमा अपने कर्तव्यों का पूर्ण निष्ठा और अंतःकरण से निर्वहन कर रही थी। उसको स्थापित करनेवाले साहब राजनीति के जिस मुकाम पर जाना चाहते थे वहां पर स्थापित हो चुके थे। सारी प्रेम-कहानियां बाकायदा दिल और तीर के निशान के साथ उसी प्रतिमा पर बयां की जाती थीं, जिसे देखकर छोटे बच्चे अपने सुखद भविष्य को लेकर कृत संकल्प हो चले थे। सांझ ढले उसी परम उद्धारक प्रतिमा के नीचे परम नशेड़ी लोग अपना उद्धार करवाने पहुंच जाते। सही कहा गया है, महान लोगों का जीवन जीते जी तो काम आता ही है उनके मरने के बाद भी समाज उससे लाभान्वित होता रहता है।

मोहल्ले के जितने भी आवारा कुत्ते थे सबकी शरण-स्थली वही परम पवित्र स्थल बन चुका था। पक्षियों ने तो उस प्रतिमा से इतना अधिक लगाव कर लिया था कि लगता था यदि इस संसार में उस प्रतिमा का कोई वास्तव में शुभचिंतक है, तो बस वही हैं। अपने समस्त नित्यकर्म उन्हें उस प्रतिमा के सान्निध्य में करने ही थे। उस प्रतिमा के चारों तरफ की घास इतनी दीर्घ हो चुकी थी कि लोग अपनी लघु-शंका का निवारण भी उसमें करने लग गए थे।

अच्छा हुआ प्रतिमाएं सीमेंट और मौरंग से बनती हैं और उनमें उबाल नहीं आता, वरना अपने इस सम्मान को देखकर उसका भी खून खौल ही जाता। अच्छा हुआ प्रतिमा की जेब में लगा हुआ कलम असली नहीं था, वरना तब क्या होता जब उसी कलम से लोग उन पर अपनी प्रेमिकाओं के लिए स्तुति-गान लिख उस प्रतिमा का सर शर्म से कलम कर देते। अच्छा हुआ उस प्रतिमा के हाथ की उठी हुई उंगली किसी ने तोड़ दी थी, वरना वह कैसे सहन कर पाते कि आवारा स्कूली पथभ्रष्ट बच्चे उनकी पथ प्रदर्शित करती हुई उंगली पर ही अपने बस्ते टांग रहे हैं। अच्छा हुआ प्रतिमा के हाथ की किताब असली नहीं थी, वरना वह कैसे उस नियम और कानून सिखाती किताब को उन लोगों के सामने पकड़ पाते जिनके सामने ही उसकी धज्जियां उड़ रही थीं।

अच्छा ही हुआ कि वह प्रतिमा भ्रष्टाचार के बालू से बनी थी और लालच के लोहे से ढली थी, कम-से-कम यह सब अनैतिकता देखने के लिए उसे ज्यादा दिन तो नहीं टिकना पड़ेगा, लेकिन इस देश के महापुरुष आखिर कब तक खैर मनाएंगे, फिर कोई महापुरुष अपने किए हुए कर्मों की सजा पाने के लिए प्रतिमा में ढाल दिया जाएगा। •



चित्रांकन : मनोज सिन्हा

MAGAZINE KING

भैया, एक अप्रैल फूल देना

सुनील सौरभ

भैया, एक अप्रैल फूल देना
फूलवाला, ''जी बहनजी, क्या लेंगी आप?''
आलिया भट्ट, ''भैया, एक अप्रैल फूल देना।''

परसों बायपास है
कार्डियोलॉजिस्ट, ''आपके तीन ब्लॉक हैं।''
पेशेंट, ''नहीं सर, चार हैं, एक पटेलनगर में, दूसरा लक्ष्मी नगर में, तीसरा गणेश नगर में और चौथा तिलक नगर में।''
कार्डियोलॉजिस्ट, ''कल उसमें से एक बेच दो, परसों तुम्हारा बायपास है।''

ज्यादा मत हंस, वरना...
लड़का, ''हंस मत पगली प्यार हो जाएगा।''
लड़की, ''तू ज्यादा मत हंस वरना ब्लॉक हो जाएगा।''

नजदीकवाले जानते थे
पप्पू, ''मेरी शादी के लिए दूर-दूर से रिश्ते आए थे।''
चंपू, ''क्योंकि नजदीकवाले सब तुझे अच्छी तरह से जानते थे।''

तब तक डिनर टाइम हो जाएगा
पति, ''चलो डार्लिंग डिनर पर चलते हैं।''
पत्नी, ''पर अभी तो लंच टाइम है।''
पति, ''अरे तुम्हारे तैयार होने तक डिनर टाइम हो जाएगा।''

...डरा रहा हूं
मम्मी, ''तेरी पत्नी मेरी बात नहीं मानती, थोड़ा डराया कर उसे।''
पप्पू, ''किचन के पास जाकर...'म्याऊं-म्याऊं'।''
मम्मी, ''ये क्या कर रहा है बुड़बक?''
पप्पू, ''तुम्हारी बहू को डरा रहा हूं।''

हाथ भी छोटे हो गए
पत्नी, ''मैं तुम्हारे लिए कितना काम करती हूं? शादी के बाद काम कर-करके मेरे हाथ छोटे हो गए।''
पति, ''तुमने नापे क्या?''
पत्नी, ''पहले मैं एक्सरसाइज करती थी, तो हाथ से पैर का अंगूठा पकड़ लेती थी, शादी के पंद्रह साल बाद आज करके देखा तो घुटनों तक ही पहुंचे।''

वादा करो कि...
पत्नी, ''मैं आपके लिए दुनिया में किसी भी जगह जा सकती हूं।''
पति, ''तो यह भी वादा करो कि कभी वापस भी नहीं आओगी।''

वो सीधी किधर से...
मास्टरजी, ''काजू कतली पर चांदी का वरक क्यों लगाते हैं?''
चिंटू, ''ये मालूम करने के लिए कि वो उल्टी किधर से है और सीधी किधर से...!!!''

दोपहर में गर्मी...
मास्टर, '' 'चाहूंगा मैं तुम्हें सांझ-सवेरे'–गाने में लेखक क्या कहना चाहता है?''
पप्पू, ''सर इस गाने में लेखक बहुत ही चालाक है, उसे पता है कि दोपहर में गर्मी बहुत होती है...!!!''

...आज की बात कर रही हूं
पत्नी, ''आज पहली बार आपसे कुछ मांग रही हूं।''
पति, ''अभी कल ही तो साड़ी मांगी थी।''
पत्नी, ''मैं आज की बात कर रही हूं ढंग से सुनते नहीं हो।''

वो सीटी के साथ नंबर भी बताए
महिला, ''भैया, ऐसा कुकर दो जो सीटी के साथ-साथ नंबर भी बताए...।''
दुकानदार, ''लेकिन क्यों?''
महिला, ''वो क्या है ना कि मोबाइल चलाते समय याद ही नहीं रहता कि कितनी सीटी बज चुकी है!''

सैलेरी के लिए गा रही हूं
पति ऑफिस से घर आते ही–
पत्नी, ''दिल बहलता है मेरा आप के आ जाने से।''
पति, ''क्या बात है आज मुझ पर इतना सारा प्यार?''
पत्नी, ''अरे...आज पहली तारीख है ना...! मैं आपकी सैलेरी के लिए गा रही हूं।''

चाशनी में गिर गया था
लड़की, ''आप बहुत स्वीट हो।'' लड़का, ''जी, बचपन में चाशनी में गिर गया था।''•



अभी तो टाइम लगेगा

बाप, ''तू दो दिन से सुबह-सुबह छत पर क्यों जा रहा है?''
बेटा, ''पापा वो टाटा स्काई सेट कर रहा था।''
बाप, ''हुई सेट?''
बेटा, ''नहीं हुई अभी तक तो, टाइम लगेगा।''
बाप, ''शेविंग करवा और हैंडसम बन, हो जाएगी सेट।''

कौन गिन रहा है...!

पप्पू, ''अंकल, रसगुल्ला लीजिए ना...!''
अंकल, ''नहीं शुक्रिया, मैं पहले ही 3-4 खा चुका हूं!''
पप्पू, ''खाए तो आपने 9 हैं, लेकिन छोड़िए...यहां गिन कौन रहा है...!!!''

वह ढूंढ़ ही नहीं पाएगा

पत्नी, ''सुनते हो जी, आपका बेटा आजकल कुछ ज्यादा ही पैसे उड़ाने लगा है, जहां भी छुपाती हूं, ढूंढ़ ही लेता है!''
पति, ''उस नालायक की किताबों में छुपाया कर, परीक्षा तक तो ढूंढ़ ही नहीं पाएगा...!!!''

MAGAZINE KING

जरा-सी लापरवाही मुश्किल में डाल सकती है

एलर्जी एक सामान्य समस्या है लेकिन कई बार यह गंभीर भी हो जाती है। यह विरासत में भी मिलती है और भी कई कारणों से हो सकती है। सही समय पर अगर इसका इलाज न किया जाए तो मुश्किल हो सकती है। वैसे बचाव इसका सबसे अच्छा तरीका है

एलर्जी एक बहुत ही सामान्य स्वास्थ्य समस्या है। एलर्जी क्यों होती है, इसके कई कारण होते हैं, कुछ लोगों को एलर्जी विरासत में मिलती है। एलर्जी, इम्यून सिस्टम की किसी बाहरी पदार्थ के प्रति प्रतिक्रिया है, जो सामान्यतः शरीर के लिए हानिकारक नहीं होते हैं। इन बाहरी तत्वों को एलर्जन कहते हैं। एलर्जंस में कुछ निश्चित खाद्य पदार्थ, परागकण, जानवरों की मृत त्वचा और फर, धूल, रसायन तथा पर्यावर्णीय प्रदूषक आदि सम्मिलित हैं। कुछ लोग एलर्जी के आसान शिकार होते हैं, क्योंकि उनमें एलर्जन के प्रति संवेदनशीलता जन्मजात होती है। एलर्जी कई प्रकार की होती है–



डॉ. रमन कुमार

सीजनल एलर्जी: सीजनल एलर्जी के मामले सबसे अधिक बसंत ऋतु में देखे जाते हैं, इसे स्प्रिंग एलर्जी कहते हैं। बसंत ऋतु में फूल बहुत खिलते हैं, जिससे वातावरण में परागकण काफी मात्रा में होते हैं, परागकण या पोलन ग्रेंस को एक प्रमुख एलर्जन माना जाता है। जब ये उनके संपर्क में आते हैं, जिन्हें इनसे एलर्जी है, तो शरीर में एलर्जिक प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। इसके कारण नाक बहना, आंखों से पानी निकलना, छींकना, खांसी चलना, आंखों और नाक में खुजली चलना-जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं।

फूड एलर्जी: कई लोगों में कुछ विशेष खाद्य पदार्थों जिनमें ग्लयुटिन होता है जैसे गेहूं, राई, बाजरा और मछली, अंडे, मूंगफली, सोयाबीन दूध से बने उत्पाद, सूखे मेवे प्रमुख हैं, से एलर्जिक रिएक्शन ट्रिगर हो सकती है। फूड एलर्जी के कारण उल्टी और दस्त होना तथा भूख न लगना, पेट में दर्द और मरोड़ होना। मुंह, गले, आंखों, त्वचा और शरीर के दूसरे हिस्सों में खुजली होना। ठोढ़ी पर मकड़ी के छत्ते बन जाना, जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं। जब फूड एलर्जी के कारण गंभीर स्थिति उत्पन्न हो जाती है, तो इसके कारण मृत्यु भी हो सकती है।

डस्ट एलर्जी: हमारे देश में सबसे अधिक लोगों को धूल से एलर्जी है। जिन्हें धूल से एलर्जी है, उन्हें धूल के संपर्क में आने पर आंखें लाल होना, उनमें खुजली होना और पानी बहना, नाक बहना और उसमें खुजली होना और छींकना-जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं।

पेट एलर्जी: जानवरों की लार, मृत त्वचा, फर और यूरीन में पाया जानेवाला एक प्रोटीन एलर्जिक रिएक्शन या अस्थमा अटैक को ट्रिगर कर सकता है। इसके अलावा जानवरों के फर में पराग, धूल के कण और दूसरे एलर्जन भी भर जाते हैं, जिससे एलर्जी और गंभीर रूप धारण कर लेती है।

उपचार: एलर्जी का स्थायी उपचार तो नहीं है, लेकिन जिन चीजों से आपको एलर्जी हो उनसे बचा जाए, तो आप पूरी तरह सामान्य जीवन जी सकते हैं।

(लेखक 'फैमिली फिजीशियंस ऑफ इंडिया' के अध्यक्ष हैं)



MAGAZINE KING

आयुर्वेद में एलर्जी को अतिसंवेदनशीलता का कारण माना गया है। आपकी त्वचा किसी चीज को लेकर जरूरत से ज्यादा संवेदनशील हो सकती है जिसके कारण परेशानी बढ़ती है। आयुर्वेद में इसका इलाज तो है लेकिन सबसे बेहतर तरीका बचाव ही है



कहीं हो न जाए एलर्जी

जब हमारा शरीर किसी पदार्थ के प्रति अतिसंवेदनशीलता दर्शाता है, उसे एलर्जी कहा जाता है। इस शरीर द्वारा उत्पन्न होनेवाली असहय प्रतिक्रिया का नाम ही एलर्जी है, जो कि त्वचा की ऊपरी परत पर सूजन के रूप में हो सकती है।



वैद्य एस. के. मलिक

कारण व लक्षणः धूल, धुआं, मिट्टी, परागकण, कोई दवाई विशेष, पालतू या अन्य जानवरों के संपर्क में आने से, सौंदर्य-प्रसाधनों से, मधुमक्खी, कीड़े, बर्र, मच्छर आदि के काटने से, बिच्छू आदि के डंक से, खाद्य पदार्थों के ऊट-पटांग सेवन से एलर्जी हो सकती है। घर या बिस्तर में रहनेवाले कीट-खटमल, कॉकरोच भी एलर्जी का कारण हैं। इनके द्वारा डंक मारने से त्वचा एकदम लाल होकर सूजन जाती है। उल्टी, बुखार और चक्कर आने लगते हैं। कुछ खाद्य पदार्थ जैसे-मूंगफली, बादाम, अखरोट, टमाटर, गेहूं, दूध, मछली, रंग मिले पेय पदार्थ (शर्बत आदि), अंडा और बाजार में मिलनेवाले विकृत कैमिकलयुक्त भोजन आदि से भी एलर्जी होती है। ये खाने के बाद मिचली, उल्टी होना, खुजली होना, पेट दर्द, पेट फूलना, अतिसार आदि लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

घर में कुत्ता, बिल्ली, तोता, मैना आदि को पालने से इनके बाल, रूसी, पंख आदि के संपर्क से त्वचा एवं श्वासजन्य रोग होकर गंभीर परेशानी हो सकती है। कई बार फूलों के परागकण भी एलर्जी का कारण होते हैं। सड़ी-गली चीज, मांस, अंडा, मछली का सेवन से यह अधिक होती है।

उपचारः नासागत एलर्जी होने पर बार-बार जुकाम होना, नाक में खुजली होना, नाक बहना, छींकें आना, नाक का बंद होना आदि होते हैं। इस अवस्था में हरिद्राखंड एक-एक चम्मच दिन में दो बार दूध या गर्म पानी से सेवन करें तथा नाक में अणु तैल एक-एक बूंद या षड्बिंदु तैल छह-छह बूंद की मात्रा में दिन में दो बार नाक में नस्य के रूप में डालें।

त्वचा की एलर्जी होना सामान्य बात है। इसके लिए महामंजिष्ठादि कवाथ का सेवन, हरिद्राखंड, शीत वित्तांतक रस, कृमिमुद्गर रस, सारिवाद्यासव, कैशोर गुग्गुलु, गंधक रसायन, आरोग्यवर्द्धिनी का प्रयोग चिकित्सक के परामर्श से करना चाहिए।

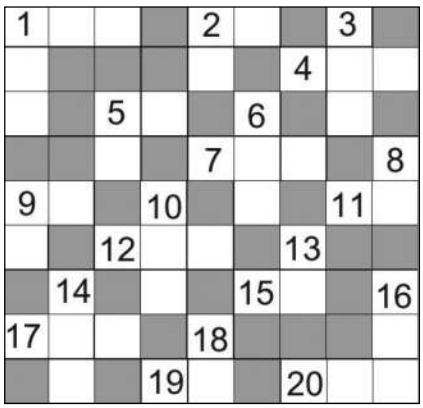
आंख में एलर्जी होने पर दारुहल्दी का क्वाथ ठंडा करके आंखों में डालें। गुलाब जल व जल में फिटकरी (स्फटिक भस्म) मिलाकर आंख में डालें। महात्रिफलाघृत एवं जीवन्यादिघृत का सेवन करें। हरिद्राखंड एक-एक चम्मच दिन में दो बार सेवन करें।

फेफड़ों की एलर्जी होने पर खांसी होना, सांस लेने में तकलीफ होना तथा घबराहट होना तथा चिकित्सा न करने पर तमक श्वास-जैसी गंभीर समस्या हो सकती है। इसके उपचार हेतु चिकित्सक के निर्देशानुसार व्याघ्री हरीतकी हरिद्राखंड, तालीसादि चूर्ण, कनकासव, खदिरारिष्ट, दशमूलारिष्ट, चंद्रामृत रस, श्वास कास चिंतामणि रस, योगेंद्र रस, लवंगादि वटी, व्योषादि वटी, हरिद्रा और अजवायन का सेवन, मधुयष्टयादि क्वाथ एवं दशमूल क्वाथ, महानारायण तेल लाभकारी हैं। खाने-पीने की चीजों जैसे-चॉकलेट, दूध, मछली, अंडा, मांस का सेवन करने से जी मिचलाना, वमन, ज्वर, उदर वेदना आदि लक्षण होते हैं। इसके लिए चिकित्सक के परामर्श से महाशंखवटी, संजीवनी वटी, कुमार्यासव, सूत शेखर रस, हिंग्वाष्टक चूर्ण, लवण भास्कर चूर्ण, छोटी हरड़ का चूर्ण लाभकर हैं। एलर्जी की मुख्य चिकित्सा इससे बचाव है। इसके लिए घर के आसपास गंदगी न होने दें। घर में खुली तथा ताजा हवा आने दें। आपको जिन पदार्थों से एलर्जी है उन्हें न खाएं। आंधी आदि एवं तेज धूप में मुंह, नाक पर रूमाल बांधकर आंखों पर चश्मा आदि लगाकर एवं सिर पर छतरी धारण कर अपनी रक्षा करें। चादर, रजाई, गद्दे, तकिये आदि समय-समय पर बदलें और उन्हें गर्म पानी में धोएं। प्रतिदिन साफ पानी से स्नान करें एवं साफ वस्त्र पहनें। बासी और गरिष्ठ भोजन न करें। पालतू जानवरों से एलर्जी हो, तो उन्हें घर पर न रखें व उनसे बचें। घर में समय-समय पर सफाई करते रहें और मकड़ी आदि के जाले न लगने दें। अगर धूल-मिट्टी से एलर्जी हो, तो फेस मास्क पहनकर बाहर निकलें और भीड़वाले स्थानों पर जाने से बचें।

(लेखक एन.डी.एम.सी., नई दिल्ली में मुख्य चिकित्साधिकारी–आयुर्वेद हैं)

MAGAZINE KING

मार्च अंक पर आधारित वर्ग पहेली



बायें से दायें

1. **जर्मनी** का एक मशहूर शहर।
2. *'सहज मिले अविनाशी रे'*– पंक्ति इस कवयित्री की है।
4. खड़ी और बैठकी होली का प्रचलन उत्तराखंड के इस अंचल में है।
5. होलिका में अधपके अन्न को यज्ञ में दान करके प्रसाद लेने का चलन है। अन्न को यह भी कहते हैं।
7. जाने-माने गजलकार विज्ञानव्रत का जन्म इस शहर में हुआ था।
9. गौतम बुद्ध के समय में कोसेल की राजधानी इस नदी के तट पर सावत्थि थी।
11. उत्तराखंड में होलिका को स्थानीय लोग इस नाम से पुकारते हैं।
12. उत्तराखंड में तीन तरह की खेली जानेवाली होली में से एक का नाम।
15. पश्चिम बंगाल में होली को इस उत्सव या यात्रा के रूप में मनाते हैं।
17. इस ऋतु को प्रकृति की वृद्धावस्था माना जाता है। इस ऋतु के बाद पतझड़ आता है।
19. वसंत को ऋतुओं में यह पदवी मिली है।
20. हिमाचल प्रदेश के आदिवासी समुदायों में प्रचलित लोककथा के अनुसार हिरण्यकश्यप की बहन होलिका के प्रेमी का नाम यह है।

ऊपर से नीचे

1. उदयपुर जिले के खेरवाड़ा उपखंड के इस गांव में होलिका दहन पूर्णिमा के अगले दिन, यानी धुलेंडी पर होता है।
2. *''सम्मत अड़ियो, बामणी की...दड़े दड़ियो...''*–पूर्वी राजस्थान के इस आदिवासी बहुल अंचल में यह गीत प्रचलित है।
3. शास्त्रीय संगीत में इस गायन शैली का होली के रंगों के साथ गहरा संबंध है।
5. छत्तीसगढ़ में होली को यह कहकर पुकारते हैं।
6. गुजरात का एक प्रसिद्ध नृत्य जिसमें डांडियों का प्रयोग होता है।
8. गुजरात में होली पर इस नृत्य की धूम रहती है।
9. बनारस के मणिकर्निका घाट पर होली में हर साल वहां के औघड़ साधु इस चीज से होली खेलते हैं।
10. पूनाची उपन्यास का एक किरदार।
13. राजस्थान का एक आदिम समुदाय।
14. खड़ी होली में समुदाय के पुरुष समूह बनाकर स्थानीय साजों, ढोल और इस वाद्य की ताल पर नाचते हैं।
16. पं. रवींद्र शर्मा अपने चाहनेवालों के बीच इस नाम से जाने जाते थे।
18. फिल्म 'नदिया' के पार की नायिका का किरदार।

फरवरी अंक पर आधारित वर्ग पहेली का उत्तर



	जै			ओ			झा	
	क		अ	र	बी		इ	
बि	हा	र		छा		शा	व	मा
	र्ट		र		रि		र	
		य	ही	स	च	है		
	मु		म		र्ड		स्या	
गो	म	ती		के		सो	ल	ह
	ता		क	वि	ता		को	
	ज			न			ट	

उत्तर भेजने का पता :
'कादम्बिनी', हिन्दुस्तान मीडिया वेंचर्स लिमिटेड (एच एम वीएल) आकृति बिल्डिंग, फर्स्ट फ्लोर, सी-164, सेक्टर-63,नोएडा, जिला-गौतमबुद्ध नगर-201301

प्रस्तुति : आर्चर कम्युनिकेशन,
ए-7, सेक्टर-55, नोएडा-201301
email :
shailmmathur@gmail.com

MAGAZINE KING

फरवरी अंक पर आधारित वर्ग पहेली के पांच प्रतियोगी ये हैं–

1. सुरेंद्र झा
   बरौनी (बिहार)
2. मुकेश कुमार
   दिल्ली
3. रीटा सिंह
   सोनीपत (हरियाणा)
4. राजदेव सिंह
   बरेली (उ. प्र.)
5. सुरेंद्र गुप्ता
   जयपुर (राज.)

वर्ग-पहेली की सही प्रविष्टियां **15 अप्रैल, 2020** तक भेजनेवाले पांच प्रतियोगियों के नाम 'कादम्बिनी' में प्रकाशित किए जाएंगे। प्रतियोगियों का चयन ड्रॉ द्वारा किया जाएगा।

कब मिलेगी नौकरी



राघवेंद्र शर्मा

गत 02 वर्षों से बेरोजगार हूं। मेरे पास आय का कोई साधन भी नहीं है।

संजय शर्मा

दिल्ली

आपकी जन्म-कुंडली वृष लग्न की है। भाग्य के स्वामी शनि सिंह राशि में राहु के साथ चतुर्थ भाव में हैं। तृतीय भाव में बृहस्पति उच्च राशिगत हैं, परंतु द्वादश भाव में स्थित मंगल चतुर्थ दृष्टि से तृतीय भाव को देख रहे हैं, जोकि मंगल की नीच राशि है। अतः मंगल कार्यों में व्यवधान तो पैदा करेंगे। दूसरे, लग्न के स्वामी शुक्र द्वादश भाव में मंगल के साथ स्थित हैं तथा मृतावस्था में हैं, जोकि आपकी निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित कर रहा है। आप सही समय पर सही निर्णय नहीं ले पाते। 24 जनवरी, 2020 को आपकी ढैया समाप्त हो गई है। 24 मई, 2019 से आपकी शनि की विंशोत्तरी महादशा प्रारंभ हो चुकी है। गोचर में शनि पंचमस्थ हैं। 30 मार्च, 2020 को बृहस्पति भी शनि के साथ आए हैं। 14 मई, 2020 से पहले आपकी नौकरी लग जानी चाहिए। आप ये उपाय भी करिए–



- सवा दस रत्ती का ओपल (फायरी) को चांदी की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली में धारण करें।
- सवा छह रत्ती का नीलम चांदी की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में धारण करें।
- छह रत्ती के 'जेड' स्टोन को चांदी के पेंडेंट में जड़वाकर किसी भी रंग के धागे या चेन में डालकर गले में धारण करें।
- प्रतिदिन प्रातः 'आदित्य हृदय स्तोत्र' का पाठ करके तांबे के लोटे से सूर्य भगवान को जल अर्पित करें।
- मंगलवार के दिन लाल कपड़े में 250 ग्राम गुड़ बांधकर हनुमानजी के चरणों में चढ़ाएं।

कोई भी काम अभी तक किया, उसमें घाटा होने के अलावा कुछ नहीं हुआ। आर्थिक रूप से सक्षम कब होऊंगा, बच्ची की शादी की उम्र आ गई है। रिश्ता भी इसी वजह से तलाश नहीं पा रहा हूं, क्योंकि पास में कुछ है नहीं, करूंगा क्या? कौन-सा काम करूं कि सफलता प्राप्त करके, बच्चों का दायित्व पूरा कर सकूं। प्रयास खूब कर रहा हूं, पर निराशा के अलावा कुछ नहीं मिल रहा। कोई उपाय बताइए?

प्रताप सिंह गौड़

जोधपुर (राज.)

आपकी जन्म-कुंडली मीन लग्न की है। लग्न के स्वामी बृहस्पति षष्ठ भाव में मंगल के साथ विराजमान हैं, अस्त हैं तथा मृत अवस्था में हैं। अतः आपकी निर्णय लेने की क्षमता कम रहेगी। दूसरे, वित्तीय संकट भी रहेगा। मंगल और सूर्य लग्न को देख रहे हैं। आप में धैर्यशीलता की कमी रहेगी। व्यावहारिकता कम रहेगी। आपकी जन्म-कुंडली में पितृदोष भी है, इसकी शांति अत्यंत आवश्यक है। 24 जनवरी को शनि की ढैया समाप्त हो चुकी है। पराक्रम भाव को अष्टमत्व दोष भी लगा है। अप्रैल या मई माह में आपका कोई नया कार्य प्रारंभ होना चाहिए। वर्ष 2020 में आपके परिवार में मांगलिक कार्य (विवाहादि) के योग भी बन रहे हैं। आपके लिए औषधि, भवन सामग्री या खानपान के साधन का कारोबार उचित रहेगा। आपके लिए निम्न उपाय लाभदायक रहेंगे–

- सवा छह रत्ती का पुखराज सोने की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की तर्जनी उंगली में धारण करें।
- सवा आठ रत्ती का मूंगा चांदी की अंगूठी में जड़वाकर दाहिने हाथ की अनामिका उंगली में धारण करें।
- सवा छह रत्ती के 'जेड' स्टोन को चांदी के पेंडेंट में जड़वाकर किसी भी रंग के धागे या चेन में डालकर गले में धारण करें।
- प्रतिदिन प्रातः तांबे के लोटे में जल भरकर उसमें थोड़ी-सी रोली, चावल, चीनी या गुड़ डालकर जल सूर्य भगवान को अर्पित करें।
- प्रत्येक शुक्रवार को प्रातः चावल की खीर रोटी पर रखकर गाय को खिलाएं।
- दूध मिश्रित जल से प्रत्येक सोमवार को भगवान शिव का अभिषेक किया करें।
- प्रतिदिन पक्षियों को दाना खिलाया करें।

MAGAZINE KING

अपने सवाल या समस्या हमें इस पते पर ईमेल करें

e-mail : kraghavendra1951@gmail.com

क्रम इस प्रकार रखें

1. नाम – ----------
2. जन्मतिथि – ----------
3. जन्म समय – ----------
4. जन्म स्थान – ----------
5. आपका सवाल – ----------

सूचना

कादम्बिनी के पाठकों के लिए ज्योतिष के इस स्तंभ के अंतर्गत सुप्रसिद्ध ज्योतिषी राघवेन्द्र शर्मा पाठकों की समस्याओं का समाधान करते हैं। पाठक एक बार में अपनी सिर्फ एक ही समस्या रखें।

–संपादक

इस माह के व्रत एवं त्योहार

02 अप्रैल, 2020 श्री राम नवमी व्रतोत्सव, 04. कामदा एकादशी व्रत (सर्वे), 05. प्रदोष व्रत, 06. श्री महावीर जयंती, 08. पूर्णिमा, श्री हनुमान जयंती, 10. गुड फ्राइडे, 11. चतुर्थी व्रत, 14. डॉ. अंबेडकर जयंती, 16. चंडिका नवमी, 18. बरुथिनी एकादशी व्रत (सर्वे), 20. प्रदोष व्रत, 23. अमावस्या, 25. श्री परशुराम जयंती, 26. अक्षय तृतीया, 30. श्री गंगा सप्तमी।

ऊष्ण कटिबंध का स्वर्ग

रोटीफल एक पौधे का नाम है जिसका सफेद गूदा कैरेबियन द्वीपों के गुलाम पेट भरने के लिए खाते थे। उष्ण कटिबंधीय प्रदेशों को इसी के कारण स्वर्ग माना जाता था। एक ब्रिटिश अधिकारी की लापरवाही के चलते इसी के कारण विद्रोह हुआ जो इतिहास बन गया

ऊष्ण कटिबंध में गोल आकार का एक फल 'रोटीफल' होता है। इसका सफेद गूदा खाया जाता है। यह अमेरिका के पश्चिमी छोर पर समुद्र में बसे ताहिती द्वीप में बहुतायत से होता है। कैरेबियन सागर में ब्रिटेन के उपनिवेश थे। ब्रिटिश सरकार चाहती थी कि कैरेबियन द्वीपों में गुलामों का पेट भरने के लिए ताहिती से रोटीफल के पौधे लाकर वहां उगाए जाएं।



इब्बार रब्बी

ब्रिटिश नौसेना ने सन् 1787 में 'बाउंटी' नामक पोत, रोटीफल के पौधे लाने के लिए ताहिती भेजा। पोत का कप्तान लैफ्टिनेंट विलियमब्लिग अनुशासनहीन व्यक्ति था। अपने मनमौजी स्वभाव के कारण वह ताहिती में पांच माह तक आराम करता रहा। जो पौधे वहां से काटे गए थे, वे सब रखे-रखे सूख गए। कप्तान की इस लापरवाही पर पोत के अफसर और नाविक नाराज हुए, तो पोत कैरेबियन के लिए चला, पर तीन सप्ताह बाद। 28 अप्रैल, 1789 को पोत के कर्मचारियों ने एक कनिष्ठ अधिकारी फ्लेचर क्रिश्चियन के नेतृत्व में रक्तहीन विद्रोह कर दिया, कोई मारकाट नहीं हुई। कप्तान ब्लिग अपने कुछ वफादार साथियों के साथ एक 23 फीट की नौका में बैठकर भाग गया। 23 जून को वह 3,618 मील दूर तिमोर द्वीप पहुंचा।

कप्तान ब्लिग के भाग जाने पर विद्रोही नाविक 'बाउंटी' को वापस ताहिती ले आए। वे वहीं रहना चाहते थे। वे ताहिती को ऊष्ण कटिबंध का स्वर्ग कहते थे, लेकिन उनका नेता क्रिश्चियन 22 सितंबर, 1789 को 'बाउंटी' पोत पर नौ कर्मचारियों, ताहिती के छह पुरुष और बारह स्त्रियों को लेकर आगे चल पड़ा। वह एकांत में ऐसा द्वीप खोज रहा था, जहां शांति से रह सके। बाउंटी रारोटोंग द्वीप जानेवाला पहला पोत था। क्रिश्चियन वहां से पहाड़ी द्वीप पिटकेर्न गया। वहां बाउंटी से जब पशु, पौधे, रसद आदि सामान उतार लिया गया, तो पोत वहीं डूब गया। उनके वंशज आज भी वहीं रहते हैं।•



चित्रांकन : सुदर्शन मल्लिक

चलन में...



मधु बी. जोशी

यह महीना बृहत्तर भारत में फसल कटने का और अनेक पर्वों-मेलों का महीना है। हमारे समाज में फसल का कटना एक महत्त्वपूर्ण आर्थिक-सामाजिक-सांस्कृतिक घटना है। इस बार प्रस्तुत हैं फसल काटने/कटने से जुड़ी कुछ प्रचलित कहावतें–

A harvest of peace is produced from a seed of contentment.-(संतोष के बीज से शांति की फसल उपजती है): यह अमेरिकी कहावत एक सार्वकालिक, सर्वभौमिक सत्य बताती है जिसे भारतीय संदर्भ में अलग से व्याख्यायित करने की जरूरत नहीं है।

Religious contention is the devil's harvest.-(धार्मिक विवाद शैतान की फसल है): यह सयानी फ्रांसीसी कहावत भी एक सर्वकालिक, सार्वभौमिक सत्य बताती है जो भारतीय संदर्भ में अनेक बार सच साबित हुई है।

A lucky person is someone who plants pebbles and harvests potatoes.-(किस्मतवाला वह है जो कंकड़ बोए और आलू की फसल काटे): यह ग्रीक कहावत बताती है कि हमारे संसार में सौभाग्य के बूते कुछ प्राप्ति होना एक विरल घटना है।

Counsel after action is like rain after harvest.-(काम कर डालने के बाद राय मिलना फसल कटने के बाद बारिश-जैसी बात है): डेनमार्क की यह कहावत हिंदी पट्टी की कहावत 'का बरखा जब कृसि सुखानी' की याद दिलाती है। राय लेने/देने का फायदा तभी होता है जब वह काम करने से पहले ली/दी जाए।

Pray for a good harvest, but keep on hoeing.-(बढ़िया फसल के लिए दुआ करो, लेकिन हेंगा भी चलाते रहो): यह स्लोवानियाई कहावत 'हिम्मते मर्दा, मददए खुदा' की याद दिलाती है।

The harvest of a whole year depends on what you sow in the springtime.-(पूरे बरस की फसल वसंत में बोए बीजों पर निर्भर होती है): चीनी कहावत जवानी में सावधानी से कर्म करने की हिदायत देती है।•

MAGAZINE KING

विज्ञापन

समावेशी एवं सतत विकास के लिए प्रतिबद्ध कदम

पर्यावरण के प्रति सजग एवं संवेदनशील सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम होने के नाते भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (भाविप्रा), पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम 1986 के तहत अपने हवाई अड्डों पर समावेशी और सतत विकास (Inclusive and sustainable development) के लिए प्रतिबद्ध है। इस संदर्भ मे भाविप्रा ने कार्बन उत्सर्जन, ध्वनि प्रदूषण आदि को कम करने की दिशा में अनेक प्रभावी कदम उठाए हैं।


कोलकाता एयरपोर्ट

ठोस कचरा प्रबंधन

हवाई अड्डों पर की जाने वाली विभिन्न गतिविधियाँ काफी मात्रा में कचरे का उत्पादन करती हैं। इस कारण उत्पन्न होने वाले कचरे के परिणामस्वरूप इसके प्रबंधन का मुद्दा बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। भाविप्रा ने उत्पादित कचरे के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए कई महत्वपूर्ण उपाय किए हैं। चरण -1 में यह योजना छह प्रमुख हवाई अड्डों अर्थात् कोलकाता, कोयम्बटूर, त्रिवेंद्रम, वाराणसी, भुवनेश्वर और अहमदाबाद पर लागू की गई है और द्वितीय चरण में 34 महत्वपूर्ण हवाई अड्डों को चुना गया है। इन महत्वपूर्ण प्रयासों से न केवल कचरे से निजात मिल रही है बल्कि हम वेस्ट टू वेल्थ यानी कचरे से सम्पन्नता की ओर टिकाऊ कदम बढ़ा रहे हैं।

एकल प्लास्टिक उपयोग पर प्रतिबंध

कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हुए, भाविप्रा ने देश भर में अपने हवाई अड्डों पर "एकल-उपयोग" प्लास्टिक वस्तुओं के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया है जिसका आकलन क्वालिटी काउंसिल ऑफ इंडिया द्वारा किया जाता है। एकल उपयोग की प्लास्टिक वस्तुओं जैसे स्ट्रॉ, प्लास्टिक कटलरी, प्लास्टिक प्लेट आदि पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया है। अभी तक 85 हवाई अड्डों को एकल-उपयोग प्लास्टिक मुक्त कर दिया है।

कार्बन तटस्थ एवं पर्यावरणीय दृष्टि से सतत विकास

वैश्विक नागरिक उड्डयन में कुल ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन का 4-5% हिस्सा है और ये उत्सर्जन निरंतर बढ़ रहा है। इस मुद्दे से निपटने के लिए भाविप्रा ने हवाई अड्डों को कार्बन तटस्थ सतत स्थिर(कार्बन न्यूट्रल सस्टेन) बनाने के उद्देश्य से अपने चार हवाई अड्डों, जैसे कि कोलकाता, भुवनेश्वर, त्रिवेंद्रम और वाराणसी हवाई अड्डों पर एयरपोर्ट काउंसिल इंटरनेशनल-एयरपोर्ट कार्बन प्रत्यायन (एसीआई-एसीए) कार्यक्रम भी शुरू किया है। इन सभी हवाई अड्डों ने निर्धारित आवश्यकता को पूरा किया और ACI-ACA प्रोग्राम के लेवल-1-मैपिंग में प्रवेश कर लिया है। अगले चरण के रूप में अब भाविप्रा इन हवाई अड्डों पर ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

मौन हवाई अड्डे

उड़ानों की संख्या में वृद्धि के साथ, हवाई अड्डों पर ध्वनि प्रदूषण भी बढ़ रहा है, जो यात्रियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। मानव स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण हानिकारक प्रभाव के प्रति संवेदनशील होने के नाते, भाविप्रा लगातार ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपाय करता है। भाविप्रा GRIHA(Green Rating for Integrated Habitat Assessment) मानदंडों के अनुरूप प्रभावी शोर प्रबंधन कार्यक्रमों को लागू कर रहा है। ध्वनि प्रबंधन को प्रमुख हवाई अड्डों पर लागू किया गया है। आपातकालीन स्थितियों में घोषणाएं इसकी परिधि से परे हैं।

इन सतत और महत्वपूर्ण प्रयासों द्वारा आज भाविप्रा स्वच्छ एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरुक भारत की परिकल्पना को साकार करने की दिशा में निरंतर बढ़ रहा है।



अगरतला
अहमदाबाद
अमृतसर
बागडोगरा
बेलगाम
भोपाल
भुवनेश्वर
भुज
कालीकट
चंडीगढ़
चेन्नई
कोयम्बटूर
देहरादून
डिबरूगढ़
दीमापुर, गया
गोरखपुर
गोवा
गुवाहाटी
इंफाल
इंदौर
जबलपुर
जामनगर
जयपुर
जम्मू
जोधपुर
जोरहाट
कांगड़ा-गग्गल
खजुराहो
कोलकाता
लेह
लखनऊ
मदुरै
मंगलौर
पटना
पोर्ट ब्लेयर
प्रयागराज
पुणे
राजमुंदरी
राजकोट
रायपुर
रांची
श्रीनगर
सिलचर
सूरत
तूतीकोरिन
तिरुपति
त्रिवेंद्रम
उदयपुर
वडोदरा
वाराणसी
विजयवाड़ा
विशाखापत्तनम
अगाती
आदमपुर
आगरा
भाटिन्डा
भावनगर
बीकानेर
दीव
ग्वालियर
हुबली
जैसलमेर
जलगांव
झारसुगुडा
कुडप्पा
कांडला
कानपुर
किशनगढ़
कोल्हापुर
कुल्लू
लीलाबारी
लुधियाना
मैसूर
पाक्योंग
पंतनगर
पठानकोट
पोरबंदर
पांडिचेरी
सलेम
शिलांग
शिमला
तेजपुर

भविप्रा-प्रचालन विभाग
@AirportsAutorityOfIndiaOfficial @AAI_Official @aaiofficial http://www.aai.aero